ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह ३६२ म अंक १५ जनवरी २०२३ (वर्ष १६ मास १८१ अंक ३६२)

(विदेह www.videha.co.in)

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।


Videha
e-Learning
Gajendra Thakur

छथि, संगम ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक नव-आर्काइव/ थीम-आधारित नव-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ओ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकर नव-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ओ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ओ सभ लऽ कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र निर्मल सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>**अक्षर खम्भा (आखर खाम्ह)**</u>

तिहुअन खेत्तहि काञ्चि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ *(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*

मानव आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ उठाओल (*गद्य-पद्य रूपी*) मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ओ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रम उपर कीर्तिरूपी लत्ती कोना पसरत।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

...

अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-

२.६.जगदीश प्रसाद मण्डल- खिस्सा

२.७.जगदीश प्रसाद मण्डल- मा७यन (धानानाह्कि उपन्यास साराम यज्ञन)

२.८.नवीन्द्र नानायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- १९ म खय

२.९.डॉ किशन कानीगन- अकादमी पुनुस्कान नला नांरोत (हास्य कटाऊ)

२.१०.जगदीश प्रसाद मण्डलक ७ टा कथा- कथा-१ जञ्चयन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीम सम्पादकीय पृष्ठ यन

२.११.जगदीश प्रसाद मण्डलक ७ टा कथा- कथा-२ जञ्चयन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीम सम्पादकीय पृष्ठ यन

२.१२.जगदीश प्रसाद मण्डलक ७ टा कथा- कथा-३ जञ्चयन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीम सम्पादकीय पृष्ठ यन

२.१३.जगदीश प्रसाद मण्डलक ७ टा कथा- कथा-४ जञ्चयन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीम सम्पादकीय पृष्ठ यन

२.१४.जगदीश प्रसाद मण्डलक ७ टा कथा- कथा ७ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

३.पद्य खण्ड

३.१.राज किशोर मिश्र- कानाना: काल!

३.२.आशीष अनचिन्हार- २ टा गजल

३.३.श्याम बिहारी मिश्र- हस्ती जाउ

४. विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण



१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३६१ आ ३६२ पर टिप्पणी

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१

साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार (मैथिली) २०२२ प्रसंग

गीन टा ज्ञनी नहथि तँ सविता झा खानी, तँ मित्रनाथ झा आ श्रीमती नीनजा नघु। यहिन अहाँकँ वता दी ज साहित्य अकादमी मात्र ब्राह्मणवादी सरकेँ अनुवाद असाञ्जनमध्य दै छै, समानान्तन धानाक लखकक हककँ मानिकँ। नम्रश्वन मिश्र जीकँ प्राञ्ज दवाक निर्णय दु टा ज्ञनी कलहि, गसन (गाट नूसि (गला/ (गली। जे नाटकक की जनुनी छलै? नम्रश्वन मिश्रक अनुवाद वा साहित्यसँ काना सनाकान नै छहि, अपना जमानाम ञ्जगिहासक नीक यूशन वलै छलहि, नाट विकाञ्ज छलहि। यासन अनुवाद आव ञ्जी नै कनगा, जञ्ज उड्डथसँ कलहि गकन पूर्ति हs (गलहि। साहित्य अकादमी मैथिली यनामर्शदागृ समिगिम सरटा चान-वनान छै, आव साहित्य अकादमीकँ चान-वनान हनाञ्ज यनामर्शदागृ समिगिक सदस्यगा लल न्यूनगम क्वालिफिकशन घाषिग कs दवाक चाही, कानण नहिया कन छै गँ सञ्जह सर छै। हँ गँ एकना सरसँ गँ काना आशा अछिय नै, मुदा वावू पुनस्कान लनिहानक निर्लज्जगा जवनदस्त छहि, आ गञ्ज पुनस्कानकँ स्वीकान कनवा काल ज हुनकन राषन हाहि स क्रमम लगवैवला हगै।

२

१११म 'सगर राति दीप जरय' नहुआ संग्राममे सम्पन्न भेल

साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदातृ समितिक अध्यक्ष डॉ. अशोक अविचल व्यक्तिगत आधारपर १११म 'सगर राति दीप जरय'क आयोजन, वर्षक ३१ दिसम्बर २०२२ शनि दिन, नहुआ संग्रामक 'आदिनाथ मधुसूदन पारस मिश्र संस्कृत महाविद्यालय'क सभागारमे सफलतापूर्वक सम्पन्न करबौलनि। ३३ टा नूतन कथाक पाठ भेल। पठित कथा सभपर मैथिली कथाकार लोकनि टिप्पणी कयलनि। ओतऽ विभिन्न विधाक ११ पोथीक लोकार्पण सेहो भेल। ई आयोजन तीन-तीन मासपर, वर्ष भरिमे चारि बेर आयोजित होइछ। प्रथम 'मार्च'मे, द्वितीय 'जून'मे, तृतीय 'सितम्बर'मे आ चतुर्थ 'दिसम्बर'मे।

ओतऽ किछु मूलधाराक साहित्यकार नाम नै लेबाक शर्तपर सूचित कयलन्हि, जे अशोक अविचल आ सात टा गोटेक लिटरेरी एसोसियेशन साहित्य अकादेमीक मेम्बरशिपमे एकटा नाम आगाँ अनलक अछि- डॉ. अजय कुमार झा जे अशोक अविचलक भागिन छथिन्ह (किछु लोकक अनुसार ममियौत पिसियौत); तँ मूलधाराक कथाकार लोकनि १११म सगर राति दीप जरयक बहिष्कार कयलनि। ई पूछलापर जे तखन विभूति आनन्द, दीपक कुमार झा, दमन कुमार झा आ अशोक कुमार मेहता कोना १११म सगर राति दीप जरयमे पहुँचला, तँ ओ सेहो सूचित कयलनि जे तेँ लेल ओ चारू लोकक करार अशोक अविचलसँ भेलन्हि जे ओ ओकरा ११२ म सगर राति दीप जरय लिखता, मुदा ओ कोना आमंत्रणमे स नै

कएलन्हि आ बैद्यनाथ उपनाम छोट सन 'क्रम ११२' लिखलन्हि। एकर संचालक धीरेन्द्र कुमार झा क उद्घोषणानुसार अध्यक्ष नियुक्त भेलाह अमन कुमार झा आ अशोक कुमार मेहता २-३ घण्टा बाद खा पी कऽ उठिऽ सँ प्रस्थान कऽ गेला, मुदा समानान्तर धाराक सभ कथाकार रातिभरि गोष्ठीमे रहि एकरा सफल बनबलन्हि। एतऽ ई स्पष्ट कऽ दी जे ई कृत्य धीरेन्द्र कुमार झा पहिनहियो कएने छथि जे विदेहमे अभिलेखित अछि [७९म सगर राति दीप जरय, औराही (लौकही), १७.७.२०१३, संयोजक- उमेश पासवान; धीरेन्द्र झा द्वारा क्रमांक ९० मे कलायन गोष्ठीक बहिष्कार आ हुनका उद्घोषक अशोक कुमार मेहता सेहो बहिष्कार कएलनि]। एतऽ ईहो स्पष्ट कऽ दी जे धीरेन्द्र कुमार झा लूज टॉक करैमे माहिर छथि आ अपना संग आयल लोकक विषयमे, कनियो जँ ओ सभ एम्हर-ओम्हर गेला, तँ डाकीक डाकी विषवमन करै छथि। संगहि ईहो स्पष्ट कऽ दी जे समानान्तर धाराक लेखक लोकनिक सगर राति दीप जरयमे आगमनसँ पूर्व, जखन धीरेन्द्र कुमार झा सभक बलवाला छलन्हि, गोष्ठीमे सभ खा पी कऽ सुति जाइ छला आ मात्र कथा पढ़निहार असगर जागल रहै छला, जकर विरोधमे आशीष अनचिन्हार कथा पढ़बासँ मना कऽ देने रहथि, मुदा मूलधारा रातिमे जे ग्रुप देलक एहिमे ई गप नै आयल। ई सभटा खबरि हमर पोथी प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग-२ मे अभिलेखित कएल गेल अछि जे उपलब्ध अछि http://videha.co.in/pothi.htm पर। साहित्य अकादमी द्वारा गत दस वर्खसँ समानान्तर धाराक एकमात्र स्कूल सगर राति दीप जरय केँ गीड़ि लेबाक प्रयास कएल जा रहल

अछि। आगामी ११२म 'सगर राति दीप जरय'क आयोजन श्री रामबाबू नायक संयोजकत्वमे हुनक पैतृक गाम- सहुरिया (अन्हराठाढ़ी) मे 'मार्च' २०२३ मासक अन्तिम शनि दिन हएत, से सर्वसम्मतिसँ निर्धारित भेल। धीरेन्द्र कुमार झा अपन ब्लैकमेलिंग आगाँ सेहो पूर्ण निष्ठासँ जारी राखलनि जखन ०२.०१.२०२३ केँ रामबाबू नायकँ ध्यान कऽ आगामी गोष्ठीक क्रमांक ११२ आ ११३ करबाक दुष्टतापूर्ण ब्राह्मणवादी आग्रह कएलन्हि आ धमकेलन्हि, जइ सँ कारा तनहुँ साहित्य अकादेमीक गोष्ठीकेँ सगर राति दीप जरयक मान्यता भेटि जाय, हुनि ०१.०१.२०२३केँ घटी मानलन्हि। साहित्य अकादेमी हुनकर दस वर्खसँ जारी ऐ कुत्सित प्रयासक महत्ता नै देलन्हि आ ऐ नै देत ठानि गैँ आगाँ देतन्हि। विदेहक आगामी साहित्यिक उपस्थापन विशेषांक मे सभ गपक खुलासा हएत।

ऐ सम्बन्धमे ज्ञो स्पष्ट कऽ दी जे अशोक अविचल ऐ गोष्ठीक आयोजन पूर्ण रूपसँ व्यक्तिगत रूपेँ करैत रहथि। दिल्लीक साहित्य अकादेमीक गोष्ठी जे टैगोरक १५० जयन्ती वर्खमे आयोजित भेल आ जकरा साहित्य अकादेमी अपन वार्षिक रिपोर्ट आ आय-व्यय खातामे अपन गोष्ठीक रूपमे वर्णित कएलक आ एकर यात्राक विवरण देखलक आ □तिरनसँ अप्रूव कएलक, जे सभटा मदमे टैगोरक कार्यक्रम लेल खर्च भेलै (सगर राति दीप जरय लेल नै) केँ सगर राति दीप जरयक रूपमे मान्यता देबा लेल मूल थानाक पुनस्थापन/ असाऽऽनमङ्गु लोलुप आ ब्राह्मणवादी लोक गत दस वर्खसँ अपस्याँत छथि, से एक बेर फेर असफल भेल।

रहुआ संग्राम गोष्ठीमे निम्न कथाक पाठ भेल, १. डॉ विभूति आनन्द : आस्था, विश्वास आ परम्परा; २. रवि भूषण कुमार : भोजक बहिष्कार; ३. मानव अनीष मण्डल : सत्यक भूख हत्या; ४. विपिन मण्डल : गेलौं तँ हम गेलौं ; ५. पं. शिव कुमार मिश्र : बसुधा काहू का न भाय; ६. उमेश मण्डल : अप्पन जिम्मा; ७. आचार्य रामानन्द मण्डल : बाल बैरागी; ८. राधाकान्त मण्डल : गुमहुन आगि आ अल्हुआ; ९. माली पासवान : कारी नाग; १०. नारायण यादव : कनियाक जीवन; ११. कपिलेश्वर राउत : बहुनी; १२. जगदीश प्रसाद मण्डल : कुम्हरक बतिया; १३. अमित मिश्र : अधलाहक परिणाम अधलाह; १४. बैद्यनाथी राम : हमहीं धनीक छी; १५. हरिश्चन्द्र झा : विनीऊथ; १६. श्रीराम कुमार निषाद : बूढ़ानी भूखक हत्या; १७. श्रवण कुमार मण्डल : प्रेम विवाह; १८. रामसेवक ठाकुर : सात पूत रामकँ; १९. रामकृष्ण परार्थी : आति; २०. दुर्गेश मण्डल : द्वन्द; २१. लालदेव कामत : मधुमाछी ; २२. शारदानन्द सिंह : जारत सांखा क राव धायत गारत; २३. अनिरुद्ध प्रसाद : रंगनू आ मंगनू; २४. अशोक अविचल : मनुआ राखय मान; २५. नारायण झा : राजनीतिमे राजनीति; २६. उमेश नारायण कर्ण : माय; २७. दुर्गानन्द मण्डल : सपना; २८. राम विलास साहु : नीक करब तँ बजाउ किए हएत?; २९. नन्द विलास राय : रंगल नढ़िया; ३०. रामचन्द्र राय : तोहीं जितलौँ हमहीं हारलौं; ३१. रामेश्वर प्रसाद मण्डल : हमरा बहिन अछि; ३२. विनय मोहन जगदीश : छट्ठू; आ ३३. रमेश कुमार शर्मा : संघर्ष।

गोष्ठीमे निम्न पोथी सभक लोकार्पण भेल- १. साहित्यकारक निबन्ध (कथा संग्रह) : जगदीश प्रसाद मण्डल; २. नव वनक नव रूप (कथा संग्रह) : जगदीश प्रसाद मण्डल; ३. सुचिता (उपन्यास) : जगदीश प्रसाद मण्डल; ४. प्रतिकार एखन बाँकी अछि (काव्य संग्रह) : रामकृष्ण परार्थी; ५. असल पूजा (कथा संग्रह) : नन्द विलास राय; ६. संयोग (कथा संग्रह) : नवीन्द्र नारायण मिश्र; ७. लजकोटन (उपन्यास) : नवीन्द्र नारायण मिश्र; ८. ॐउह थिक जीवन (संस्मरण) : नवीन्द्र नारायण मिश्र; ९. राष्ट्र मंदिर (उपन्यास) : नवीन्द्र नारायण मिश्र; १०. मातृभूमि (उपन्यास) : नवीन्द्र नारायण मिश्र ; ११. सीमाक ओहि पार (उपन्यास) : नवीन्द्र नारायण मिश्र; १२. नित नवल सुभाष चन्द्र यादव : गजेन्द्र ठाकुर ; १३. मैथिली समीक्षाशास्त्र (आलोचना) : गजेन्द्र ठाकुर ; १४. Rajdeo Mandal Maithili Writer : Gajendra Thakur; १५. सुभद्रा कुमारी चौहान (विनिबन्ध) : डॉ. अशोक अविचल; १६. जाउ न जाउ कवि डाउ जाउ अनुभूती (विचारात्मक गद्यांश संकलन) : डॉ. उमेश मण्डल; १७. जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संग्रह (अनुसन्धान विश्लेषण) : डॉ. उमेश मण्डल।

सुभाष चन्द्र यादव समानान्तर धाराक १११म सगर राति दीप जरयक सफलता लेल संदेश पठौलन्हि आ ने आबि सकबा लेल दुख व्यक्त कयलन्हि। लोकार्पित पोथी 'नित नवल सुभाष चन्द्र यादव' लेल अपूर्व उत्साह देखल गेल, आ उपस्थित लोक माँगि-मागि कऽ डा पोथी लेलनि आ फोनपर दूर दिल्ली आ आन-आन ठामसँ ओ पोथीक

□तेन लोकार्पण दिन सँ आबय लागल।

सगर राति दीप जरय पहिल सँ १११ धरिक कथा यात्रा

१. मुजफ्फरपुर, २१.०१.१९९०, प्रभास कुमार चौधरी; २. ततैल, २९.०४.१९९०, जीवकान्त; ३. दरभंगा, ०१.०७.१९९०, डॉ. भीमनाथ झा, प्रदीप मैथिली पुत्र, विजयकान्त ठाकुर; ४. पटना, ३.११.१९९०, गोविन्द झा, रमनकान्त झा; ५. बेगुसराय, १३.०१.१९९१, प्रदीप बिहारी; ६. कटिहार, २२.०४.१९९१, अशोक; ७. रराही, २१.०७.१९९१, मोहन भारद्वाज; ८. सकरी, २२.१०.१९९१, प्रो. सुरेश्वर झा, डॉ. राम बाबू; ९. रहुआ, ११.१०.१९९२, ए.सी. दीपक; १०. विराटनगर, १४.०४.१९९२, धीरेन्द्र धीर; ११. वाराणसी, १८.०७.१९९२, प्रभास कुमार चौधरी; १२. पटना, १९.१०.१९९२, राजमोहन झा; १३. सुपौल- १, १८.१०.१९९३, कदान कानन; १४. बोकारो, २४.०४.१९९३, बुद्धिनाथ झा; १५. येटघाट, १०.०७.१९९३, डॉ. रमानन्द झा 'रमण' ; १६. जनकपुर, ०९.१०.१९९४, रमेश रंजन; १७. ॐसहपुर, ०६.०२.१९९४, डॉ. अनिरुद्ध कुमार 'अक्कू'; १८. सरहद, २३.०४.१९९४, अमिय कुमार झा; १९. झंझारपुर, ०९.०७.१९९४, श्यामानन्द चौधरी; २०. घोघरडीहा, २२.१०.१९९४, डॉ. नारायणजी; २१. बहेरा, २१.०१.१९९५, कमलेश झा; २२. सुपौल (दरभंगा) , ०८.०४.१९९५, कमलेश झा; २३. काठमांडू, २३.०९.१९९५, धीरेन्द्र प्रेमर्षि; २४. राजबिराज, २४.०१.१९९६, रामनारायण देव; २५. कोलकाता

(रजत जयंती, २८.१२.१९९६), प्रकाश कुमार चौधरी; २६. महिषी, १३.०४.१९९७, डॉ. तारानन्द वियोगी/ रमेश प्रायोजित; २७. तरौनी, २०.०६.१९९७, शोभाकान्त; २८. पटना, १८.०१.१९९७, प्रकाश कुमार चौधरी; २९. बेगूसराय, १३.०९.१९९७, प्रदीप बिहारी; ३०. खजौली, ०४.०४.१९९८, प्रदीप बिहारी; ३१. सहरसा, १८.०१.१९९८, रमेश; ३२ पटना, १०.१०.१९९८, श्याम दरिहरे; ३३. बलाइन; नागदह, ०८.०१.१९९९, पदम सम्भव; ३४. भवानीपुर, १०.०४.१९९९, डॉ. जिष्णु दत्त मिश्र; ३५. मधुबनी, २४.०१.१९९९, सियाराम झा 'सरस', डॉ. कूलधारी सिंह; ३६. अन्धौली, २०.१०.१९९९, कमलेश झा; ३७. जनकपुर, २५.०३.२०००, रमेश रंजन; ३८. काठमांडू, २५.०६.२०००, धीरेन्द्र प्रेमर्षि; ३९. धनबाद, २१.१०.२०००, श्याम दरिहरे एवं रामचन्द्र लालदास; ४०. बिरौल, २१.०१.२००१, डॉ. अक्कु, प्रो. विद्यानन्द झा; ४१. हटनी (घोघरडीहा), १९.०५.२००१, प्रो. योगानन्द झा/अजित कु. आजाद; ४२. बोकारो, २५.०८.२००१, गिरिजानन्द झा 'अर्धनारीश्वर', मिथिला सा. परिषद्; ४३. पटना, किरण जयंती, ०१.१२.२००१, अशोक, चेतना समिति, पटना; ४४. राँची, १३.०४.२००२, कुमार मनीष अरविन्द; ४५. भागलपुर, २४.०८.२००२, धीरेन्द्र मोहन झा; ४६. पटना, (विद्यापति भवन पटना), १६.११.२००२, अजित कुमार आजाद; ४७. कोलकाता, २२.०१.२००३, कर्णगोष्ठी, कोलकाता; ४८. खुटौना, ०१.०६.२००३, डॉ. महेन्द्र नारायण राम; ४९. बेनीपुर, २०.०९.२००३, कमलेश झा; ५०. दरभंगा, २१.०२.२००४, डॉ. अशोक कुमार मेहता; ५१. जमशेदपुर, १०.०१.२००४, डॉ.

रवीन्द्र कुमार चौधरी; ५२. राँची, ०२.१०.२००४, विभूतिआनन्द ठाकुर ; ५३. देवघर, ०८.०१.२००५, श्याम दरिहरे एवं अविनाश; ५४. बेगूसराय, ०९.०४.२००५, प्रदीप बिहारी; ५५. पूर्णियाँ, २०.०६.२००५, रमेश; ५६. पटना, ०३.११.२००५, अजीत कुमार आजाद; ५७. जनकपुर (नेपाल) , १२.०८.२००६, रमेश रंजन; ५८. जयनगर, ०२.१२.२००६, नारायण यादव; ५९. बेगूसराय, १०.०२.२००७, प्रदीप बिहारी; ६०. सहरसा, २१.०७.२००७, किसलय कृष्ण; ६१. सुपौल-२, ०१.१२.२००७, अरविन्द ठाकुर; ६२. जमशेदपुर, ०३.०५.२००८, डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी; ६३. राँची, १९.०७.२००८, कुमार मनीष अरविन्द; ६४. रहुआ संग्राम (मधुबनी), ०८.११.२००८, डॉ. अशोक अविचल; ६५. पटना, कथा गंगा-३, २१.०२.२००९, अजित कुमार आजाद/ रचना समिति; ६६. मधुबनी, ३०.०५.२००९, दिलीप कुमार झा; ६७. समस्तीपुर, ०५.०९.२००९, रमाकान्त राय 'रमा'; ६८. सुपौल- ३, ०५.१२.२००९, अरविन्द ठाकुर; ६९. जनकपुर, ०३.०४.२०१०, राजाराम सिंह 'राठौर'; ७०. कपिलपुर (दरभंगा) , १२.०६.२०१०, डॉ. योगानन्द झा; ७१. बनमा (संझारपुर), ०२.१०.२०१०, जगदीश प्रसाद मण्डल, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ७२. सुपौल, ०४.१२.२०१०, अरविन्द ठाकुर; ७३. महिषी, कथा राजकमल, ०५.०३.२०११, विजय महापात्र; ७४. हजारीबाग, १०.०९.२०११, श्याम दरिहरे; ७५. पटना, हीरक जयन्ती, १०.१२.२०११, अशोक एवं कमलमोहन 'चुन्नू'; ७६.बन्नौ, १४.०७.२०१२, विभा रानी; ७७. दरभंगा, किरण जयन्ती, ०१.१२.२०१२, अरविन्द ठाकुर ; ७८. घनश्यामपुर,

०९.०३.२०१३, कमलेश झा; ७९. औरहा (लौकही), १५.५.२०१३, उमेश पासवान; ८०. निर्मली (सुपौल), ३०.११.२०१३, उमेश मण्डल, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ८१. दरभंगा, (बिजली कोठी, बम्पासटॉन, दरभंगा), २२.०३.२०१४, ओम प्रकाश झा; ८२. महथ, (संसारपुर), कथा बोध सिंह महथा, ३१.०५.२०१४, गजेन्द्र ठाकुर; ८३. सखुआ-रुपटियाही, ३०.०८.२०१४, नन्द विलास राय/रामगुलाल साहु/सूरज नारायण राय 'सुमन'; ८४. बनमा (मधुबनी), २०.१२.२०१४, शिवकुमार मिश्र, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ८५. भागलपुर, (श्याम कुंज, ह्वानिकापुरी भागलपुर), ०४.०४.२०१५, ओम प्रकाश झा ; ८६. लकसना (मधुबनी), २०.०६.२०१५, राजदेव मण्डल 'रमण', सत्यदेव 'सुमन' ; ८७. निर्मली (सुपौल), १९.०९.२०१५, उमेश मण्डल, स्थानीय साहित्य प्रेमी ; ८८. मध्य विद्यालय- उखराम (बनीपुर), ३०.०१.२०१६, कमलेश झा, अमर नाथ झा ; ८९. लौकही, २६.०३.२०१६, उमेश पासवान एवं प्रेम कुमार साहु; ९०. लक्ष्मीनियाँ (मधुबनी), १८.०६.२०१६, राम विलास साहु, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ९१. गोधनपुर (मधुबनी) २४.९.२०१६, दुर्गानन्द मण्डल; ९२. बरानी (मधुबनी), ३१.१२.२०१६, अजय कुमार दास 'पिन्टू'; ९३. रतनसारा (घोघरडीहा), २५.०३.२०१७, राजदेव मण्डल, स्थानीय साहित्यानुरागी ; ९४. लोहा (मधेपुर), २४.०६.२०१७, डॉ. योगेन्द्र पाठक वियोगी, स्थानीय प्रेमी ; ९५. जलसैन टुमना (मधुबनी), ०९.९.२०१७, नारायण यादव; ९६. धबौली (लौकही), १६.१२.२०१७, राधाकान्त मण्डल ; ९७. बनमा (लखनौर), २४.३.२०१८, कपिलेश्वर राउत, बनमा ग्रामवासी ;

९८. सिमरा (संथालपुर), १६.६.२०१८, डॉ. शिव कुमार प्रसाद ; ९९. मुरहट्टी, (बड़की टोल), २२.९.२०१८, प्रो. प्रीतम निषाद , १००. निर्मली (गनायंथ स्वन), २२.१२. २०१८, उमेश मण्डल, रवीन्द्र बंगाली, मनीष जालान ; १०१. सिरकी (मधुबनी), ३०.३.२०१९, राजेश सुषेश झा ; १०२. मझौरा, (मधुबनी), २९.०६.२०१९, जय प्रकाश मण्डल, आलोक कुमार; १०३. रामपुर (मधुबनी), २८.९.२०१९, उमेश नारायण कर्ण 'कल्प कवि' ; १०४. बलम नगर-महेशना (लौकही), १४.१२.२०१९,प्रेम कुमार साहु,उमेश पासवान; १०५.दरभंगा (सीतायन सरोगार), १३.०२.२०21, कमलेश झा ; १०६. हटनी (घोघरडीहा, मधुबनी), २७.०९.२०21, लालदेव कामत; १०७. बलहा (फुलपरास), २७.१२.२०21, जीवकान्तक स्मृतिमे, उमेश मण्डल, डॉ. शैलेन्द्र मण्डल; १०८. मधुरा (मधुबनी), २६.०३.२०२२, डॉ. श्रीशंकर झा; १०९. ररौन (मधुबनी), २७.०६.२०२२, प्रदीप पुष्प; ११०. सानरबी (लौकही), २४.०९.२०२२, अम्बुलाल शास्त्री, स्थानीय साहित्य प्रेमी; १११. रहुआ संग्राम (मधुबनी) ३१.१२.२०२२। ११२म 'सगर राति दीप जरय'क आयोजन श्री रामचन्द्र नायक संयोजकत्वमे हुनक पैतृक गाम- सहुनिया (अररिया) मे 'मार्च' २०23 मासक अन्तिम शनि दिन हएत।

जय मैथिली.! जय साहित्य.!! आजुक जीवन आजुक साहित्य.!!!

हकार! हकार!! हकार!!!

भरि राति चलएबला मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध 'सगर राति दीप जरय'क आगामी आयोजन

कथा समन्वय

मे

अपने समस्त मैथिली साहित्य प्रेमीगणक उपस्थिति प्राथनीय अछि..

स्थान : आदिनाथ मधुसूदन पारस मणि संस्कृत महाविद्यालय, रहुआ संग्राम (मधुबनी)

दिनांक : 31 दिसम्बर 2022 (शनिदिन)

समय : 6 बजे साँझसँ 6 बजे भिनसर धरि

पोथी लोकार्पण

1.	साहित्यकारक विवेक (कथा संग्रह)	:	जगदीश प्रसाद मण्डल
2.	नब बनक नब फल (कथा संग्रह)	:	जगदीश प्रसाद मण्डल
3.	सुचिता (उपन्यास)	:	जगदीश प्रसाद मण्डल
4.	प्रतिकार एखन बाँकी अछि (काव्य संग्रह)	:	रामकृष्ण परार्थी
5.	असल पूजा (कथा संग्रह)	:	नन्द विलास राय
6.	संयोग (कथा संग्रह)	:	रबीन्द्र नारायण मिश्र
7.	लजकोटर (उपन्यास)	:	रबीन्द्र नारायण मिश्र
8.	इएह थिक जीवन (संस्मरण)	:	रबीन्द्र नारायण मिश्र
9.	राष्ट्र मंदिर (उपन्यास)	:	रबीन्द्र नारायण मिश्र
10.	मातृभूमि (उपन्यास)	:	रबीन्द्र नारायण मिश्र
11.	सीमाक ओहि पार (उपन्यास)	:	रबीन्द्र नारायण मिश्र
12.	नित नवल सुभाष चन्द्र यादव	:	गजेन्द्र ठाकुर
13.	मैथिली समीक्षाशास्त्र (आलोचना)	:	गजेन्द्र ठाकुर
14.	Rajdeo Mandal Maithili Writer	:	Gajendra Thakur
15.	सुभद्रा कुमारी चौहान (विनिबन्ध)	:	अशोक अविचल
16.	जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी	:	उमेश मण्डल
17.	जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संग्रह	:	उमेश मण्डल

सम्पर्क-
विनयमोहन जगदीश, 9661406271
नारायण झा, 9534530451

निवेदक-
अशोक अविचल
9006056324


जय मैथिली.!
जय साहित्य.!!
आजुक जीवन आजुक साहित्य.!!!
हकार!
हकार!!
हकार!!!
भरि राति चलएबला मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध
'सगर राति दीप जरय'क आगामी
आयोजन
कथा समन्वय
मे
अपने समस्त मैथिली साहित्य प्रेमीगणक उपस्थिति प्राथनीय अछि..
स्थान : आदिनाथ मधुसूदन पारस मणि संस्कृत महाविद्यालय, रहुआ संग्राम (मधुबनी)
दिनांक : 31 दिसम्बर 2022 (शनिदिन)
समय : 6 बजे साँझसँ 6 बजे भिनसर धरि
पोथी लोकार्पण
1. साहित्यकारक विवेक (कथा संग्रह) : जगदीश प्रसाद मण्डल
2. नब बनक नब फल (कथा संग्रह) : जगदीश प्रसाद मण्डल
3. सुचिता (उपन्यास) : जगदीश प्रसाद मण्डल
4. हमर मीठ बैना (मुक्तक संग्रह) : नूतन झा
5. असल पूजा (कथा संग्रह) : नन्द विलास राय
6. प्रतिकार एखन बाँकी अछि (काव्य संग्रह) : रामकृष्ण परार्थी
7. संयोग (कथा संग्रह) : रबीन्द्र नारायण मिश्र
8. इएह थिक जीवन (संस्मरण) : रबीन्द्र नारायण मिश्र
9. राष्ट्र मंदिर (उपन्यास) : रबीन्द्र नारायण मिश्र
10. नित नवल सुभाष चन्द्र यादव : गजेन्द्र ठाकुर
11. मैथिली समीक्षाशास्त्र (आलोचना) : गजेन्द्र ठाकुर
12. Rajdeo Mandal Maithili Writer : Gajendra Thakur
13. सुभद्रा कुमारी चौहान (विनिबन्ध) : अशोक अविचल
14. जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी : उमेश मण्डल
15. जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संग्रह : उमेश मण्डल
सम्पर्क-
विनयमोहन जगदीश, 9661406271
नारायण झा, 9534530451
निवेदक-
अशोक अविचल
9006056324



३

कमलानन्द झा प्रसङ्ग

कमलानन्द झाक पोथी "मैथिली उपन्यास: समय समाज आ सवाल"

(२०२१) क शीर्षक भ्रामक अछि। एहि हुनकर किछु सन्दर्भ उपन्यासकारपर किछु सिद्धिकारक कथित समीक्षात्मक आलेखक संग्रह अछि, २६३ पन्नाक एहि पोथी हार्डबाउण्डमे लाइब्रेरीकेँ मात्र बेचल जा सकत, जेँ एहि सेहो जायत, अमेजनसँ हम एहि चारि सय पाँच टाकामे किनलौं मुदा ओमे पाँचो पाइक सामिग्री नै अछि।

एतऽ एकटा भूल सुधार अछि, एकटा गलत सन्दर्भ लेखक सुभाष चन्द्र यादवक उपन्यास 'गुलो'केँ बिनु पढ़ने ओ दु पाँति लिखलन्हि आ निपटा देलन्हि, ओ दुनू पाँति हम एतऽ अहाँक मनोरंजनार्थ प्रस्तुत कऽ रहल छी। अहाँ गुलो पढ़नहियो हएब, जँ नै पढ़ने छी तँ पहिने पढ़ि लिअ, कारण एखन बेसी मनोरंजक अनुभव हएत, गुलो सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइभमे एहि http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

"उपन्यासक कमजोरी अछि लेखकक राजनीतिक पूर्वाग्रह। राजनीति विशेषक पक्षधरता रचनाक संग न्याय नहि कऽ पबैत अछि।"

जहि उपन्यासमे राजनीति दून-दून भरि नै छै ओतऽ 'राजनीतिक पूर्वाग्रह' आ 'राजनीति विशेषक पक्षधरता'क तँ प्रश्ने नै छै। राजनीतिक पूर्वाग्रह वा पक्षधरताक साधन धूमकेतु आ यात्री प्रयुक्त कलन्हि। सुभाष चन्द्र यादव जीक 'राट' जे २०२२मे आयल जे सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइभमे एहि http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर, से राजनीतिपर अछि मुदा ओतहुओ सुभाषजीक रगता शैलीकेँ राजनीतिक पूर्वाग्रह वा पक्षधरताक साधनक आवश्यकता नै पड़लै।

पढ़ू हमर पोथी 'नित नवल सुभाष चन्द्र यादव' जे उपलब्ध अछि ओ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

कमलानन्द झाक बिनु पढ़ने सुभाष चन्द्र यादवक विरुद्ध ब्राह्मणवादी जातिगत पूर्वाग्रह एकटा खतराक घण्टी अछि। जइ हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैले कमलानन्द झा वामपंथक साधन पकड़ने छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सजग अछि। ई अपन बायोडाटामे गलत सन्दर्भसँ छीनि कऽ, समानान्तर धाराक लोकक हककेँ मारि कऽ लेल साहित्य अकादमीक मैथिल अनुवाद असाइनमेण्टक गर्वसँ चर्चा करैत छथि। आ ई असाइनमेण्ट हिनका मेरिटसँ नै जातिगत टाइटिलसँ भेटल छन्हि, अही सभ किरदानीक एवजमे भेटल छन्हि। हिनका सन लोक लेल मैथिली बायोडाटाक एकटा पाँति अछि, समानान्तर धारा लेल जीवन-मरणक प्रश्न।

दिनेश कुमार मिश्रक 'दुइ पाटन के बीच में' कोसी नदीक ऐतिहासिक आत्मकथा थीक, ओ मिथिलाक आन धार सभक ऐतिहासिक आत्मकथा सेहो लिखने छथि जेना बन्दिनी महानन्दा, बागमती की सद्गति!, दुइ पाटन के बीच में.. (कोसी नदी की कहानी), न घाट न घर, बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी, भुतही नदी और तकनीकी झाड़-फूंक, The Kamla River and People On Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments। साहित्य अकादमीक मैथिली परामर्शदात्री

समिमिक सदस्य यंकज कुमान मा यनाशन ह्वाना ओकन यैनाक यैना मैथिली अनुवाद कs अयना नाम उयन्यास छयवाउल गेल अछि, जकना छञ्म समीजक ओ वान लखकक निसर्व कड़ै छथि। ओ्री निसर्व दिनेश कुमान मिश्रक थीक, ज आ॰.आ॰.टी. ख॰गयूनसँ सिविल ॰ञ्जीनियनिढ म १९६८ वी. टक आ स्ट्रक्चनल ॰ञ्जीनियनिढम १९७०म एम.टक छथि, आ उ॰ निसर्व लल क्वालिफा॰ड छथि। जखन काना विषयम नामांकन नै हा॰ छै गखन लाक हानि-थाकि हिन्दीम नामांकन ल॰ए, नै गँ कमलानन्द मा कँ वूमs म आवि ज॰गाह्नि ज ओ्री काज काना सिविल ॰ञ्जीनियनक अछि। हिन्दी आ मैथिली दुनूक स्क्रीनशॉट संलग्न अछि। दिनेश कुमान मिश्र मिथिलाक नै छथि मुदा मिथिलाक सट धानक कथा उा लिखन छथि, हम सट हुनका प्रगि कृगज्ञ छी आ हुनकन म्रृधसँ मिथिलावासी कहिया उम्रृध नै टs सकगा, मुदा मूलधानाक यूनक्कान आ या॰ लालूय लाकसँ कृगघ्नग टटग स हुन सिद्ध टला। ओ लखककँ दस वानद वर्ख यहिन सहा गानानन्द वियागी उव्वानक टटल छलखिह्न ज लिखन नहथिह्न ज उा प्रसागिग टs अनायास अयन नवनाम दासनक सामिग्री आनि ल॰ छथि, एहन सना आव ओ कमलानन्द मा क आश्रय गकलह्नि मुदा दुर्गाग्य!

दिनेश कुमान मिश्रक सटटा याथी आव हुनकन अनुमगिसँ उयलब्ध अछि विदह आर्का॰नमे

http://videha.co.in/pothi.htm

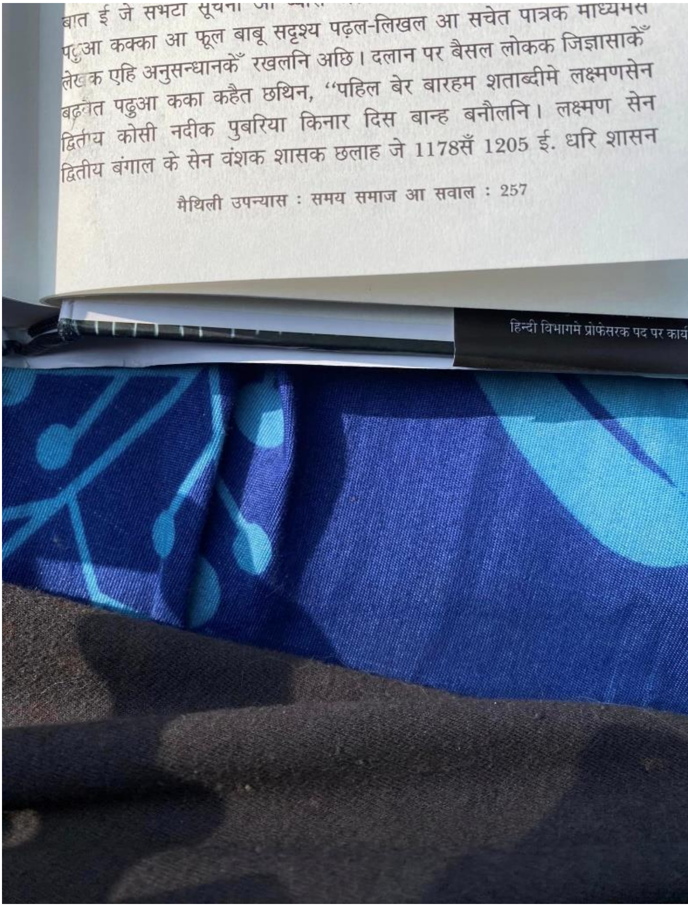
एगs एकटा गय मान याउ दी ज जखन विल गेम्रकँ यूछल गेलह्नि ज की उा एक्ष वॉक्ष रानगम या॰नशीक उनसँ दनीसँ आनि नहल छथि गँ हुनकन उत्तन नहह्नि ज मा॰ब्रासॉङ या॰नशीक उन काना

उत्पाद रचनीसँ नै उदासीन अछि। ई विदेह पठाबय हम सभ जे गामक निष्कर्ष नहि। एकरा आन समृद्ध कएने गेल, कारण समानान्तर धाराक सभटा माँछ ब्राह्मण पारम्परिक सभ माँछ नै सकैए, एकरा मलाह गोट-गोट कऽ सभ सभटा माँछ निकालैत गेल छथि, निकालैत गेला।

कमलानन्द झा कान मस्तिष्क आ दृष्टि सम्बद्ध करबा लेल दू टा पोथी हम निकालने कऽ गेल छी, ई प्रथम: पहिल अछि सुशीलक गामवाली (उपन्यास) (१९८२) आ दोसर अछि हमर दुखद पत्नी- The Black Book, ई दुनू उपलब्ध अछि http://videha.co.in/pothi.htm पर। सुशीलपर जखन हमर समीक्षा शुरू हएत तँ कमलानन्द झा लेल नाकल एकटा शिक्षा देतऽ हम रब।

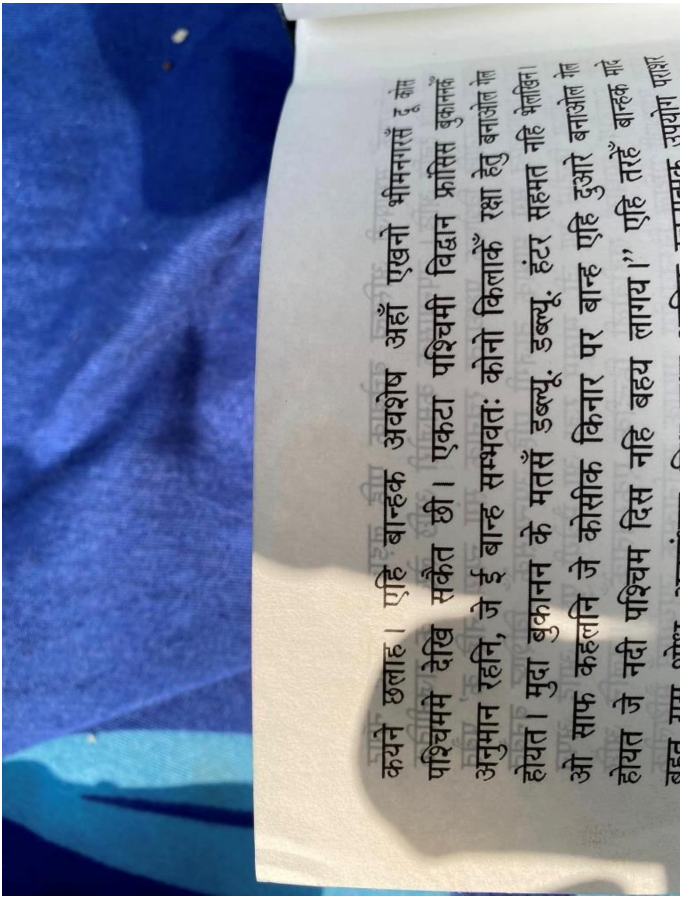
ई छद्म समीक्षक कमलानन्द झा पर हमर नजरि गेल।

(अगिला अंकमे जारी..)



बात ई जे सभटा सूचना आ ...
पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसे
लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ
बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, ‘‘पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन
द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन
द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257


कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ [illegible] कोस
पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ
अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल
होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलाह।
ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल
होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे
बहुत रास शोध, अनुसंधान [illegible] उपयोग पराशर

भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से कोई 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

४

उना ज्योतिनीश्वन उना धूर्तसमागमम कन छथि गरुन सन हमहुँ अपन महिसवान ब्राह्मणक गाम कथाम ओ निर्लज्जताक चर्चा कन छी- *"कानध पूछवहि तँ उा सए कानध कहती ज स्त्री सए निर्लज्ज हाऽओ आ स ओ कानधसँ ज जम्पयन ओकना सरक याछ...म थूक दऽ दल जाऽ छै, जऽसँ कथूक लाज काना गप्रम नै हगो।"*

ग

विदेह "साहित्यिक ग्रष्टाचान विशेषांक" लेल निम्नलिखित विषयपन आलेख ई-मेल editorial.staff.videha@gmail.com पन आमंत्रित अछि।

१. साहित्य, कला आ सनकानी अकादमीः-

(क) पूनस्कानक नाजनीति

(ख) सनकानी अकादमीम यैसवाक गणन-लोकतांत्रिक विधान

(ग) सम्पागुट आ अकादमी कन काज कनवाक तनीका

(घ) सनकानी सम्पाक छझ्म विनाधम उपजल तात्कालिक समानांतन सम्पाक कार्यपद्धति

(ङ) अकादमी पूनस्कानम याऽ हैकानः मिथक वा यथार्थ

२. व्यक्तिगत साहित्य संस्थान आ पूनस्कानक नाजनीति

३. प्रकाशन जगतम पसनल ग्रष्टाचान आ लेखक

४. मैथिलीक छझ्म लेखक संगठन आ उकन पदाधिकानी सबहक आचनण

ग. स्कूल-कॉलेजक मैथिली विभागम पसनल साहित्यिक ग्रष्टाचानक

विविध कार्य-

(क) पाठ्यक्रम

(ख) अध्ययन-अध्यापन

(ग) नियुक्ति

६. साहित्यिक पत्रकारिता, विज्ञु, मंच-माला-माञ्चक आ लोकार्पणक स्थल-तमाशा।

७. लेखक सबहक जन्म-मरण शताब्दी केर चुनाव , कीर्तनकार आ तकरा पाठक राजनीति

८. दलित एवं लेखिका सबहक संग छद्म-छल आ ठाकुर शोषणक विविध तरीका

९. कोनो आन विषय।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

६

आब अहाँ पूछब जे तकर प्रतिकार समानान्तर धारा करा कलक, ओ गोँ कब्जाबाहर नै करैए, गोँ तकर उत्तर अछि हमर ३ टा पोथी जे १११म सगर राति दीप जरय मे लोकार्पित भेल ३१ दिसम्बर २०२२ केँ, तेहन सगर राति दीप जरय जकरा साहित्य अकादमी गत दस वर्खसँ गीड़ि लेबाक प्रयास कऽ रहल अछि। अहाँसँ ई तीनू पोथीपर टिप्पणी ई-पत्र

सङ्कग editorial.staff.videha@gmail.comयन आमंत्रित अछि। यहिल दु पाथी म नाजदन मण्डल आ सुराष चन्द्र यादवक साहित्यिक समीक्षा अछि ज हमन गसन पाथी मैथिली समीक्षाशास्त्रक सिद्धांतक आधानयन कएल गेल अछि।

गीनू पाथीक लिंक नीचाँ दल गेल अछि।

Rajdeo Mandal- Maithili Writer (Now with Supplement I & II)
निग नवल सूराष चन्द्र यादव
निग नवल सूराष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)
मैथिली समीक्षाशास्त्र
मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)
संगम पट्ठ कमलानन्द झा क ब्राह्मणनादयन प्रदान:
दुखद पक्षी- The Black Book
दुखद पक्षी- □□□ □□□□□ □□□□ (मिथिलाक्षर)
१

Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement

जगदीश प्रसाद मण्डलक पाँचटा लघुकथायन हमन टिप्पणी

Five Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal

Sh Jagdish Prasad Mandal has adjudged the

following five short stories as his best:

The Transmission (Sancharan)

The Favourite Work (Bhari Man Kaaj)

The Gone Hope (Aayal Aasha Chali Gel)

The Gift of Life (Jeevan Daan)

On My Behalf (Appan Sati)

The Transmission (Sancharan): The philosophical musings of the life of Jeebachh Uncle have been depicted with all their splendour. The earthly comes in between, of course. The flood and the dam, the hope generated out of the Kosi River project regarding hydel power electricity and the subsequent despair arising out of its non-fulfilment. The irrigation facility for the farmers, the arrival of fertilisers, the projects leading to disturbance in the flow of small rivers, the memory of earlier mango plantations in villages, and the rain-based agriculture, all have been dealt with in detail. After fifty Jeebachh Uncle dissociated from the family life

dispassionately and handed over the responsibilities to both of his sons.

The Favourite Work (Bhari Man Kaaj): This story is the story of Gianchan. He is overwhelmed by his life, but then Sumitlal tells him a story and he feels relieved.

The Gone Hope (Aayal Aasha Chali Gel): The people of village Rudrapur are preparing to go to Rameshwaram for a pilgrimage. A discussion ensues between Hiralal and Motilal.

The Gift of Life (Jeevan Daan): Sumant and his wife is discussing life in the aftermath of an earthquake. Last week due to the earthquake all three houses collapsed.

On My Behalf (Appan Sati): This story is a story of a happening village surrounding the shops at the roundabout. The people and their priorities, minor squabbling and all are witnessed here.

Sh. Jagdish Prasad Mandal is known for giving Maithili stories which directly cater to the problems and solutions of the people of Mithila.

The solution is there in the midst of the people and whoever finds the solution is the leader of his stories. And there is always one who finds the solution. He is better known for his stories which are anti-migration rather than anti-escapism. However, he has selected the above five short stories which are philosophical musings. But here also his priority is the people and their life. He says through Jeebach Uncle that the life of Jeebach Uncle was grand. So grandeur is not about money, but it is about the manner people live their lives. This grandeur of life has been depicted not through the lives of landlords but through the life of common people, who faces drought, flood, and negative results on the environment through the concept of neo-development, yet their demeanour is grand.

ERA BEFORE AND AFTER: LITERARY SCENE IN MAITHILI AFTER THE ARRIVAL OF JAGDISH PRASAD MANDAL

Amartya Sen wrote about the famine of Bengal (1942-43), talking about how lacs and lacs of people died in that famine (15 lacs as per

estimates of the Famine Enquiry Commission), but that this did not include his loved ones. Likewise in 1967, there happened a great famine in Mithila. When Indira Gandhi (then the Prime Minister of India) visited the area, she was shown how the people from the Mushhar community survived simply by eating bisarh (roots of lotus and other plants).

But this tragedy was written about only in 2009 by Sh. Jagdish Prasad Mandal, over forty years after it happened. And the reasons for that delay are obvious. In Maithili literature, there is a lopsided tendency which has made its journey slanted and ugly. The ones writing for mainstream Maithili literature have had no firsthand experience of tragedies of this magnitude, so they could never write on such subjects.

The coming of Jagdish Prasad Mandal on the literary scene simultaneously started a renaissance and a reformation movement in Maithili literature. It commenced a shiny new era. He gets credit for correcting the dark and ugly

course the literary scene had taken. He gets credit for filling the gap and correcting the lopsided course of Maithili literature, which was hitherto moving on a one-way road.

Jagdish Prasad Mandal is an artist. He can convey the facts in such an amazing way that the reader is left in a trance.

He can present the facts directionally and purposefully. Armed with this ability he has defined the literature of the Maithili language so greatly that we could bifurcate its history into two eras: the era before Jagdish Prasad Mandal, and the era which comes after.

His facts are collated from every section of society. They are not placed in his prose as ornaments. Instead, they flow naturally.

It is as if a high tide has shaken the coastlines of the so-called main drain of Maithili literature, which dies completely but then regains its shape during the monsoon.

His words never present a lament. His writing never shirks from its responsibilities. No matter what hardships they face, the characters never lose hope or blame their lack of resources; they never grow dismal and resolutely keep marching on.

He has respect for the lifestyles and contributions of every stratum of society, and that is very exceptional. This becomes effective because there is no mismatch between his words and his deeds, and this is because of the greatness of his personal and social life. What he thinks, what he does, and what he writes. It makes his literature truthful.

The ups and downs of the lyrical voice of the Maithili language attracted even the great Yehudi Menuhin who, in a BBC programme, said it was one of the sweetest languages. He talked of how his entire body swung hearing this language. Jagdish Prasad Mandal uses the ups and downs of this lyrical/rhythmic language to show the affinity of mutual dependence with its society and culture.

This will bring revolution not only in literature but also in the economic arena.

Survey of some books written by Shri Jagdish Prasad Mandal

SHAMBHUDAS

Jagdish Prasad Mandal injects into the minds of the readers the deity Barham Baba. He shows that both the devotees as well as Barham Baba himself are quite cheerful. He shows the convergence of "Shambhua" (disrespectful calling) into "Shambhu" (respectful calling). And then he sees Shambhudas changing to Darbaridas.

The crumbling institutions of Mithila and Shambhudas turned to rubble, which is proof that the arts practised in Mithila have been destroyed. But the main characters of his other short stories, like Bhaitak Lava or Bisarh, refused to crumble. So then why has Shambhudas become Darbaridas? Is it just a simple loss of power? Or is it a change in Jagdish Prasad Mandal, the writer, himself? Has he become tired; is he being

defeated?

Looking closer we find that Shambhudas is not in any way inferior to the heroes and heroines of Bhaitak Lava or Bisarh. Then why is Shambhudas losing? Shouldn't he be winning? Why does the writer push him to defeat? He is the writer, he's God as far as the characters are concerned, why he is letting the circumstances be such that Shambhudas finds himself in a losing position?

Jagdish Prasad Mandal's characters are not artificial ones. And that is why they do not always win on every economic front.

On the economic front, work is done through hands, through labour. But culture (including literature) is a very delicate handiwork. The characters of this story get entrenched in this handiwork.

When Jagdish Prasad Mandal's other characters had to fight on the economic front, they fought like anything, and they triumphed. But to serve the

area of Art, Shambhudas had to migrate (unlike the characters of Bisarh).

So Shambhudas had to become a courtesan, a court artist. Economically it was thankless work. But doing this was the only way of true survival in these changing times, for it represented the survival of Art!

But here also, in what may still be seen as defeat (for economically, it was), Shambhudas unfurled a flag of revolt.

He decided not to marry. He decided to let go of the possibility of family life. Shambhudas became Darbaridas not for his economic survival. Indeed, he certainly is not a utilitarian, but he had to make the compromise for the sake of the survival of his Art. His decision not to marry was repentance for this compromise.

The parallel tradition will topple if Art becomes "Darbaridas". If Shambhudas loses it will be a loss for Mithila. It is not just Jagdish Prasad Mandal who will lose, it is the entirety of

Mithila who will lose in his defeat.

Will Mithila heed this warning of Shambhudas?

BAJANTA-BUJHANTA

It is a collection of seed stories.

The title seed-story Bajanta-Bujhanta (trans. talking-understanding) is a story of a parrot, who is Bajanta-Bujhanta. In this collection of seed stories, there is more symbolism like these than in the writer's other stories.

In Chaukidari we see a labourer working even in the eighth month of her pregnancy, by tying a rope around her waist and stomach.

The story Pator he dedicates to the famous seed-story activist Manoj Kumar Karn (alias Munnaji), and he assigns a piece of symbolism too. "Like a dark room which has serpents all around, like that are we too". This moves the seed story further forward. And Samdahi says "Oh, you have become the listener of the very language of the crow."

TAREGAN

This book lacks complex plotlines or complicated symbols for the simple reason that it was written to instil good values in children.

But here, the whole story is a symbol. When Subhas Chandra Bose's father tells him that sleeping on the ground is not enough, it leaves a remarkable imprint on his mind. What this man did later for India is known to all. Satya Vidya Bhardwaj says that "Knowledge is bigger than heaven."

This collection is not only of importance in children's literature. It expands the horizons of seed stories too.

GEETANJALI

Chalu Uchitpur poem features a place called Uchitpur, where everyone has the same body language and the same clothing. In this land, there is no difference between fire and water.

The "new moonlike full moon" tells us many things about the deformed "bedhab roop".

Yaar Yau is a song of tragedy. It describes everything that has been washed away in a flood, including the washing away of the spirit and the sense of existence.

He dedicates the song to Sh. Rajnandan Lal Das's 'Yug-Yug', where he has described how all doors close when one is entrapped in a spiderweb.

This complete collection of the song is dedicated to Professor Udaya Narayana Singh Nachiketa'. All the songs in this collection are lyrical.

RAIT-DIN

Baba did not understand the mischief of the barren trees. He tilled and ploughed and planted the trees. But then those trees became the abode of dead souls. They did not touch the soil, reaching the sky by holding the top.

Halluk Kaaj (trans. easy work) details the technicalities of labour tools which make the work easy. It is an experience of satisfaction that the artists get after the completion of their

work. How a world full of empathy is created, it describes that too.

Whether it is in Patta Chhimee's syrupy mental level or in "the huge-lad is condemned", the writer brings new and distinct typical Maithili verse. It makes Rait-Din distinct.

INDRADHANUSHI AAKASH

We listen as someone sings Nachari (Maithili songs about Lord Shiva Songs) while fully swinging his voice and body. The spirituals and supernaturals have found their places. One is assembling (or creating), and the other is disassembling. The change is a mere game.

The poet is incredibly careful in his selection of words and subjects. Mystery, disappointment, answers, along with questions and hope, all keep coming and going.

TEEN JETH EGARHAM MAAGH

In Ghare-Ghare every household is lit up by a

diya, but the whole village is in darkness.

In Kaushal-Jakhain we are told why the land turned barren and how the dark village ended up in its sorry state.

In Aas Prem Sang, hope returns to the village.

SARITA

Here, Jagdish Prasad Mandal's verse keeps raising questions. It keeps on questioning.

His poetry shows a painful awareness of facts and constantly brings up questions, even in its conclusion.

If you compare his poetry with his prose, you will find much more pessimism in it, unlike his hope-filled prose. The short length of the poems does not give him time to analyse the questions, to find the answers. So, he keeps on raising questions and only questions, poking at the readers to look for the solutions themselves.

This type of verse is an intriguing first for Maithili literature.

(Language editing by Astha Thakur)

Survey of some more books by Jagdish Prasad Mandal

Ulba Chaur: Short Story, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, (New Delhi), 2013

It is a collection of thirteen short stories, every story of this collection depicts the ups and downs of life, it investigates the causes of the problems and puts forward solutions after giving it modernistic solutions.

Ardhangini: Short Story, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, (New Delhi), 2013

This is a collection of twenty short stories. He depicts vividly the distress that salaried people face. On the other hand, he compares it with the jovial life of the agriculturists. At the same time, he takes head-on the pseudo-beliefs and other social problems faced by the village people

and offers solutions. He underlines the caste-based occupations and delineates their importance and necessity for maintaining a good life in villages.

Satbhaiya Pokhair: Short Story, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, (New Delhi), 2013

This book has so far been run into four editions.

Bhakmor: Short Story, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, (New Delhi), 2013

The collection has nine short stories. The web ("ojhari") and other stories deal with the post-1947 period and deal with the degradation of democratic values and the deformation of public institutions.

Nai Dharaiye: Novel, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, (New Delhi), 2013

This novel is the fulfilment of the religion of literary creation, which has been faithfully by the author. It reflects the face of society through its moving depiction of life.

Krantiyog: Short Story, Pallavi Prakashan, Nirmali, Supaul, (Bihar), 2017

It contains six stories. The problem of drainage has arisen due to the construction of highways and link roads, high-plinth buildings, and houses. The damage to the environment and the problem of flood arising out of this have been depicted well. The number and area of ponds, well and orchards are declining. So, the thorny plants have abounded leading to a loss of harvest.

Subhimani Jingi: Short Story, Pallavi Prakashan, Nirmali, Supaul, (Bihar), 2018

The author has vividly depicted the third gender problem. An adolescent Shyama is neither a male nor female, so the people, including the mother, decide to hand over Shyama to the Kinnars. But the father rose in favour of the boy and decides to provide him with all such skills necessary for a respectable life. He gives an example of Lord Shiva who is called half male and half female (Ardhanarishwar), and of Krishna who enters the group of females by transforming himself into

Shivani. The mother, seeing the resolve, also comes on the side of her husband.

The problem of other sex, hitherto unknown in Maithili literature, has come to the attention of the author. Shyama is a child that is indisputable. Shyama has every right to live a dignified and respectful life and for that necessary skills are required and would be provided to him. The siblings convince the mother but after the stories of Shiva and Krishna are placed before her, she goes in repentance as to why she was not taught these stories earlier. The third sex, particularly in the village society, has been shown with a new perspective. Other stories of the collection also throw light on other aspects for example the issue of "Mathas" and asceticism in "Babak Bag-Bagiya" and the resolution of disputes in a village in "Kukurpan". In "Herayal Jingi" the issue of development in the village post-independence has been described with the example of Kamalpur village, the issue of caste and faulty development model has been given a fresh treatment.

Subhimani Jingi (A respectful life) 2018 is a collection of short stories consisting of eight stories. The second short story is named Subhimani Jingi, which is the title of the book also. This book was written between the 23rd of January 2018 and the 9th of March 2018. Pallavi Prakashan has published this book, Nirmali. A night-long tri-monthly reading session of short stories (Sagar Rati Deep Jaray) is held in Maithili at different venues. The 97th such reading session was held on 24.03.2018 at Berma village in the convener ship of writer Sh. Kapileshwar Raut. This village happens to be the village of Sh. Jagdish Prasad Mandal also. On that occasion, this book was launched (released).

All eight stories of this book depict the constant changes in the life of a village person vividly.

The eight stories of this book consist of:

1. Kekra Lel Kelau: written on 23.01.2018

2. Subhimani Jingi: written on 28 Jan 2018

3. Babak Bag-Bagiya: written on 3 Feb 2018

4. Ab-Tab: written on 7 Feb 2018

5. Agilah: written on 11 Feb 2018

6. Kukurpan: written on 28 Feb 2018

7. Herayal Jingi: written on 5 Mar 2018

8. Asha Par Paani Phir Gel: written on 9 Mar 2018

1. Kekra Lel Kelau:

This short story begins with a conversation among people sitting around a bonfire on winter days. Bhogilal bhay is an Ayurvedic Doctor who is not able to keep his health well. His family also became disconcerted, all his family except his wife migrated to cities. The conversation goes on regarding the environment and other aspects of the socio-environment of village people, which has changed for some people who were not able to cope with it.

2. Subhimani Jingi

The author has vividly depicted the third gender

problem. An adolescent Shyama is neither a male nor female, so the people, including the mother, decide to hand over Shyama to the Kinnars. But the father rose in favour of the boy and decides to provide him with all such skills necessary for a respectable life. He gives an example of Lord Shiva who is called half male and half female (Ardhanarishwar), and of Krishna who enters the group of females by transforming himself into Shivani. The mother, seeing the resolve, also comes on the side of her husband.

The problem of other sex, hitherto unknown in Maithili literature, has come to the attention of the author. Shyama is a child that is indisputable. Shyama has every right to live a dignified and respectful life and for that necessary skills are required and would be provided to him. The siblings convince the mother but after the stories of Shiva and Krishna are placed before her, she goes in repentance as to why she was not taught these stories earlier. The third sex, particularly in the village society, has been shown with a new perspective.

3. Babak Bag-Bagiya

This short story deals with the issue of "Mathas" and asceticism. Goverdhan Das was a poor child whose parents died while he was young. He becomes the successor of Mahant Gokul Das. Through his story, the author travels to the hinterland and presents the untouched states of village life. Through his gardens, the Baba was getting remembered but now these gardens are vanishing due to poor upkeep.

4. Ab-Tab:

The vegetable articles used during the village feast are the medium through which the author takes the issue of development affecting village life.

5. Agilah

Pakshadhar's Uncle returns to the village after retirement. Munilal is his cousin. Munilal's daughter is widowed. Munilal and his daughter Savitri are the objects through which Pakshadhar wants his reform agenda to go through.

6. Kukurpan

The method of resolution of disputes in the village is the subject matter in "Kukurpan". The resolution can be provided only by a person who is capable of being so.

7. Herayal Jingi

In "Herayal Jingi" the issue of development in the village post-independence has been described with the example of Kamalpur village, the issue of caste and faulty development model has been given a fresh treatment.

8. Asha Par Paani Phir Gel

Lalit is a literate agriculturist. He starts farming sunflowers. Through his experiments, the author finds space for detailing actual problems faced by the agriculturists, the ravage of nature and so on.

Dekhl Din: Short Story, Pallavi Prakashan, Nirmali, Supaul, (Bihar), 2018

A family which is lived for three generations in a village and a family whose second generation has migrated to the town have been compared. The superiority of the former has been established in the title short story of the collection.

Gapak Piyahul Lok: Short Story, Pallavi Prakashan, Nirmali, Supaul, (Bihar), 2018

This is a collection of thirteen short stories. The title short story deals with have depicted the society existing at the time of the permanent settlement-Zamindars. The resources were held by a few, the system continued in Independent India. The people started capturing the lands resulting in litigation. The title short story depicts one such litigation involving thirty-five people along with Deenbandhu Kaka. On the day of the judgment of the case, there happened a bus accident which was carried.

Lahsan: Novel, Pallavi Prakashan, Nirmali, Supaul, (Bihar), 2018

BIRTHMARK (Lahsan): It is a story of a person from a village, who gets disenchanted with city life, where morality- both social and personal- has no meaning. It describes vividly the village and city life, and in that description, one finds no charm in city life for ordinary class people. Its plot revolves around personal upheavals, but the actual beauty of the novel lies in its vivid presentation of city and village life from the point of view of economically lower-class people.

Rahe Joker Pariwar: Short Story, Pallavi Prakashan, Nirmali, Supaul, (Bihar), 2020

The loss of livelihood is the major reason for the migration from Mithila. But the people who migrate include the well-offs also who migrate for an easier life. So, thirty years ago, despite being well off Shantinath left Chanpur and migrated to Shati Niketan (Shanti- peace!!) in search of peace. And even when some people from his village found him, he had no regret. Unlike his other books, this migration of the well-off in search for peace compares and depicts the

tussle around the social life of Mithila.

Gamak Jingi: Short Story, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, (New Delhi), 2009

This collection of short stories contains nineteen short stories. The author was given Tagore Literature Award (Sahitya Akademi) for this book. Every story in this book depicts the hardness of village life. The people have to bow before natural calamities. However, the people in these stories rebound without exception and refuse to let down or migrate.

Maulayal Gachhak Phool: Novel, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, (New Delhi), 2009

It is his first novel which deals with the problem of migration from the villages. The novelist envisages the rejuvenation of worn-out systems which will stop migration.

Utthan-Patan: Novel, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, (New Delhi), 2009

Even the laziest can move forward if he has a desire for economic improvement. Shyamanand brings technology to agriculture. Unity is essential if one must stop the breaking of and migration from villages.

JingikJeet: Novel, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, (New Delhi), 2009

The writings which deal with village life are full of negative forces. The author puts a break on the disappointment arising out of such negative writings about village life.

Mithilak Beti: Drama, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, (New Delhi), 2009

This is a drama dealing with the miserable life of daughters in the villages of Mithila. There are many forms of discrimination, the author has chosen the deformation of relations after the marriage of the female. The reason for it is enshrined in the unequal treatment between daughter and son from the day he or she is born.

Taregan: Inspirational Story Compilation,

Shruti Publication, New Delhi, 2010

This is children's literature and is a collection of 111 inspirational seed stories which includes the gist of some masterpieces from the world literature curated for the children.

Jeevan-Maran: Novel, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, (New Delhi), 2010

The spiritualism in the author comes to the fore, the real life would be the afterlife.

l

JeevanSangharsh: Novel, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, (New Delhi), 2010

The author compares two villages the Banspura, which he tells us is the less developed and the Sisauni, which is comparatively more developed. The comparison is based on the perception of developed and less developed among the people of the villages, which is the view of the author as well. The Sisauni people have a middle school,

they have their Public Durga Pooja in their village and the fair is organized there. But the Banspura people have none of these although they do organize on an individual basis a 24-hour kirtan and public langars occasionally. But the Barharba village is more developed than these two villages. They have a High School, and they organize more public functions. And lo! Here comes the Katharba village. It is the most developed where besides the High School, there is a hospital also, and they organize several other public functions.

Bajanta-Bujhanta: Seed Story, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, (New Delhi), 2013

This is a collection of sixty-eight seed stories which has been woven around different social issues. The ensuing social changes and upheavals going around the villages at the individual and social levels are the themes for the stories of this collection.

- Gajendra Thakur, editor, Videha (Be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to

+919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast list.)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.२.अंक ३६१ आ ३६२ पर टिप्पणी

अंक ३६१ पर टिप्पणी

आचार्य रामानंद मंडल

संपादकीय म मैथिली साहित्य अकादमी म भ्रष्टाचार क सटीक समीक्षा कैल गेल हय। अहूँ बन ज सदस्य बनलन हय सब। संबंधी क चूनल गेल हय। ज परिवारवाद क द्योतक हय। दोसर ज्ञान जज सब ब्राह्मणाचार्य बनल हतन । ज मूल मैथिली लेखक सब क उपेक्षा क रूप म अंगूठा काट रहल हतन। ता एकलव्य हतन वर्जित लेखक राजदेव मंडल।

मैथिली साहित्य म घोटाला

मिथिला -मैथिली म दूटा विद्यापति हलन। ज्योतिरीश्वर ठाकुर (१२९०-१३७०) स पूर्व सालकन नाऊँ जाति म विद्यापति हलन । ता अपना साहित्य पर बिदापत नाचा शुरू कैलन। ता नाच संपूर्ण मिथिला म लोक प्रिय करैत रहै। जकर चर्चा ज्योतिरीश्वर कैल हतन। दोसर विद्यापति (१३७२-१४४८)ज्योतिरीश्वर क बाद म हलन। ज जाति क बाभन रहलन। ता संस्कृत आ अवहट्ट म साहित्य रचना कैलन।

यनंतु मैथिली साहित्य म नाऽऽ विद्यापति क कृति क वारेन विद्यापति क कैल जा नहल हय।

७(गो। दैनिक अ्खवान म लखक प्रवीध नानायध चौधनी लिखैत हगन -

विनाध, निंदा आ आलाचनाक वावजूद विद्यापति कवि कोकिल, महाकवि, जनकवि वनि (गलाह। लाक हुनकन संदेश क हा(थांहाथ स्वीकान कयलक। अयन सहज -सुंदन मैथिली नचना सए ७ौक जनसुलए छल ज लाक ठकना हृदयंगम कय ललक। जन - जन क कं0 म अयन दसिल वयना (मातृराषा) नचनाक कानध यहूंवि (गलाह विद्यापति। हुनकन नवानी,महेसवानी,नाधा -विनह ,नांक गांक आदि अनकां महत्वयूर्ध नचना सं समाज मं साहित्यिक धाना ७हन वहल ज विद्यापतिक यदावलि यन नाच यनम्यना -विदायत नाच गक प्रचलन म आवि (गल।

विदित हो कि जनवर्गीय समाज म ७हि विद्यापति नाच क सहान शिजाक समुचित प्रसान हावय लागल मिथिलाक लाक समाज म।

उल्लखनीय हय कि ग्रातिश्चन यूर्व स विदायति नाच म विद्यापति यदावली क नृत्य अहिनय हाऽऽत नहा अऽऽ विद्यापति क वान म कश्मीन अहिनव गुप्त (दशम शताब्दी क अंत आ ७गानहम शताब्दी क प्रानंर) -ऽऽ्रीश्चन प्रत्यारिज्ञा -विरर्षिधी ग्रंथ मं लिखल हय।

श्रीधन दास क सदुक्तिकर्धामृत (नचना ११हनवनी १२०६ मध्यकालीन मिथिला लखक विजय कुमान 0ाकून) श्रीधन दास विद्यापति क यांचटा

पद उद्धृत कैलौ छान जे विद्यापति क पदावली क भासा छथि।

जाव न मालती कर परगास ताव न ताहि मधुकर बिलासा। आ मुंदला मुकुल मकरंद,ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०)षष्ठ कल्लाल। अथ विद्यावंत वर्णना।।

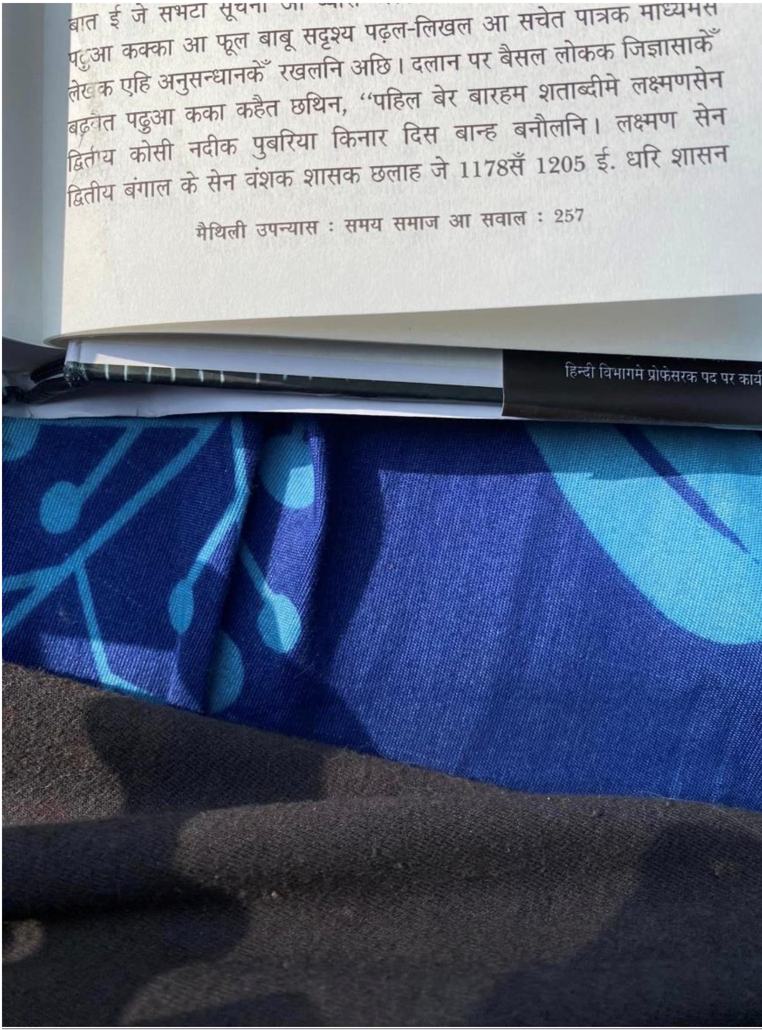
अष्टम कल्लालक।।अथ भाट वर्णना।।मं विद्यापतिक उल्लेख कैल छथि। स विद्यापति भाटक प्रसिद्ध र ोल रहे जे ज्योतिरीश्वर भाटक उल्लेख भाटक रूप म कैलौ रहलन।

उपर्युक्त कथन स स्पष्ट छय की विद्यापति भाट नाहि विद्यापति क छथि। परंतु आवि साहित्यिक घोटाला क क बाहर विद्यापति क कृति बनायल आ बताउल जा रहल छथि। अहि साहित्यिक ग्रंथावान क कठोर निंदा होय क चाही।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सह साहित्यकार सीतामढ़ी।

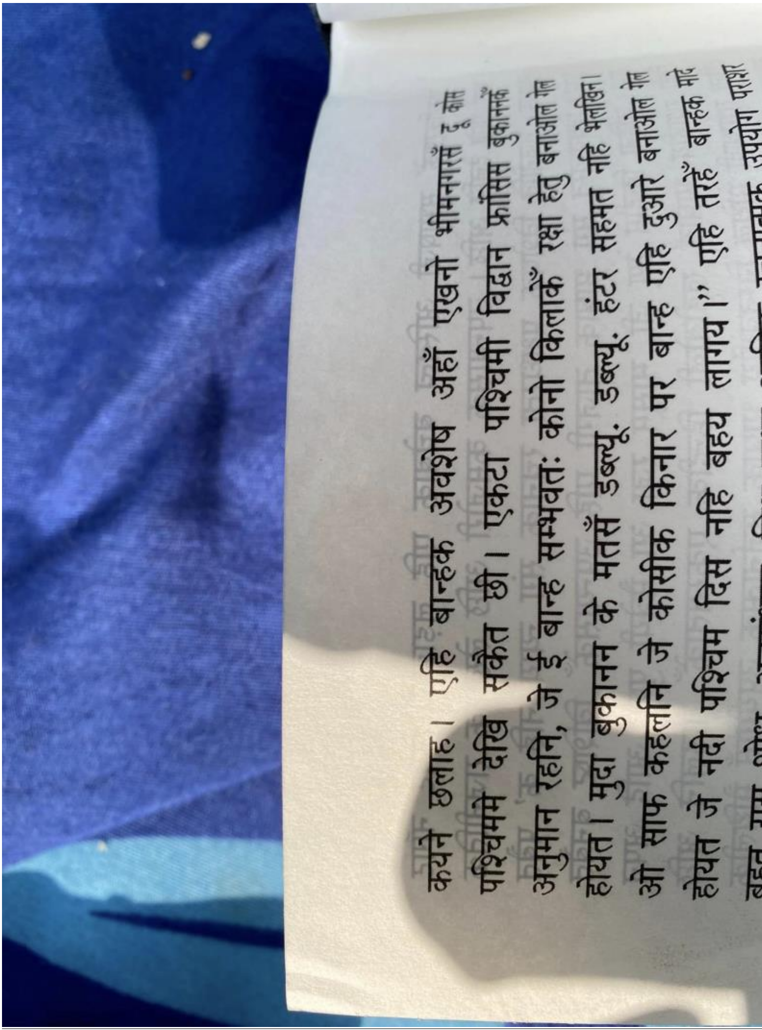
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

अंक ३६२ पर टिप्पणी



बात ई जे सभटा सूचना आ
पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ
लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ
बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन
द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन
द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257



कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे बहुत रास शोध [illegible] रचनात्मक उपयोग पराशर

भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से कोई 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

उयन्यासकान क छथि, यंकज यनाभन (जल ग्रांग उयन्यास)

दुखद

Rabi ndr aChaudhar y

वउ दुर्गोत्रयुर्ग, आयष्फिजनक आ आयनाधिक कृत्य..

Kumar Manoj Kashyap

ञीसर यरि वठ्न विंगिग छी।

R N M shra

दुर्गोत्रयुर्ग

Kal pnaJ haPat na

आव्हिनवा..! रुन ञी क छैथ?

यंकज यनाभन (जल ग्रांग उयन्यास)

ह रुगवान..! ञी ठीक वान छैथ।

UmeshMandal

नीक। ओहुन चोन कन दखान कनव जनूनी
यंकज यनाशन (जल प्रांगन उयन्यास)
Gaurinath: उकन ग लखकीय जीवन चानी यन टिकल छै आ गकना प्रश्रय दव'नाला सद्दा मैथिली म कम नहि।

ओहुन चान लाक सए मैथिली आन मिथिला क अहित कनय म सदैव आगू नहैग छथि
JhaPrasanna

ओकना कार्ट म लs जवाक चाही
याोगेन्द्र या0क नियागी
+91 98310 37532
SubhashChandraYadav: I condemn it. The thief must be exposed.

अति दूखद, निन्दनीय
Manoj Pathak

सादन आराना।
कार्ट कन सकैत हुना। यनंतु ओान क चर्चा कननाऽ् आवश्यक हया। न ग साहित्यिक चानी मानल जायत।
RamanandMandal

धन्यवाद।

Vi dehaKeshavBhar dwaj Del hi

Nabo Narayan M shra

दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति

Mukund Mayank

Oh

प्रदीप पुष्प

बहुत सुन्दर बात।

Abhi l ash Thakur ·

घृणित कार्य! लज्जा जनक

Aj i t Kumar J ha

जकरा नहि लाज नहि लगैत छन्हि ओहन प्रवृत्ति वाला महानुभाव सब कँ। ओहन लोक सब कँ लेल समाज अलग सँ पुनस्थापनक घोषणा होयबाक चाही। यदाकदा करबाक लेल अपन कँ साधू वाद ।

Ramesh Kumar Sharma

पुनस्थापन यादव क जलुवाजी होए

Kunal

उपन्यास आ एकर लेखकक नाम घोषित करू

Ashish Anchinhar

Kunal जी, ओँ कोना समाप्त पाठक सँ ई प्रश्न पुछने रहिएथि एखन हमरा नीक लागैए।

प्रबुद्ध पाठक आ लेखक वर्गसँ ई प्रश्न पुछबाक मतलब छै जे स्थिति गंभीर भऽ गेल छै। आना जखन पुछिए देलहुँ अछि एखन एकर उत्तर अछि- पोथी, जलप्रांतर, पंकज पराशर। एहि पोथीक गदगदी आलोचक, कमलानंद झा।

Kunal

Ashish Anchinhar धन्यवाद ।

एना सार्वभौम जकां छैक जे बस गंभीर आशय लगाउल जाइ छै मुदा नाम नइ लेल जाइ छै। एना हमरा हाइपोक्रेसी क चरम लगैए। ई अनसोहांत छी ।.........

आब नाम ल गेल छै। त हमरा लगैए जे पंकज पराशर (उपन्यासकार) आ कमलानंद झा (आलोचक) क बाजक चाही ।

Lakshman Jha Sagar

एहन चालक सामाजिक बहिष्कार हेबाक चाही। आगि पानि बंद हेबाक चाही। मुँह म कारी चून लगा क गदहा पर सगरगाम घुमबाक चाही। एहन कुदशा कय देबाक चाही जे फेर एहन घृणित काज नै करय।

Chitragupta Chitragupta

अरविन्द दुखद

जगदानन्द झा 'मनु'   .

मिथिला मैथिलीक साहित्यक चानी जगजाहिर अछि। मुदा आब साहित्य अकादमी आ डाकन लकक द्वारा.... बहुत निंदनीय काज, एहन एहन लोककेँ अनर्थ देखान करबा चाही।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.गद्य खण्ड

२.१.कुमार मनोज कश्यप- द्वन्द

२.२.आचार्य रामानंद मंडल- काम स नाम की डर

२.३.आचार्य रामानंद मंडल- यशोदा माय

२.४.महाकान्त प्रसाद- ३ टा बीहनि कथा

२.५.संतोष कुमार राय 'बटोही'- मंगनौना (उपन्यास- खण्ड ६)

२.६.जगदीश प्रसाद मण्डल- खिखड़ि

२.७.जगदीश प्रसाद मण्डल- माटयन (धारावाहिक उपन्यास सातम यतन)

२.८.रवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- १९ म खण्ड

२.९.डॉ किशन कारीगर- अकादमी पुरस्कार वला नाटक (हास्य कटाक्ष)

२.१०.जगदीश प्रसाद मण्डलक ७ टा कथा- कथा-१ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

२.११.जगदीश प्रसाद मण्डलक ७ टा कथा- कथा-२ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

२.१२.जगदीश प्रसाद मण्डलक ७ टा कथा- कथा-३ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

२.१३.जगदीश प्रसाद मण्डलक ७ टा कथा- कथा-४ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

२.१४.जगदीश प्रसाद मण्डलक ७ टा कथा- कथा ७ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

𑓒.𑓑.𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒢𑒼𑒖 𑒏𑒬𑓂𑒨𑒣- 𑒠𑓂𑒫𑒢𑓂𑒠



𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒢𑒼𑒖 𑒏𑒬𑓂𑒨𑒣

१ टा लघुकथा

अंत

"आब बाप पढ़ाई-लिखाई क लेल...... ई बच्चा बसी बसगन स साइंस पढ़ैत अछि आ डॉक्टर-इंजीनियर बनि पैघ कंपनी-अस्पताल म नौकरी पबैत अछि। ई पढ़ै म कम दक्ष स आगू जा मैनेजमेंट क पढ़ाई करैत अछि आ कंपनी-अस्पताल क मैनेजर रहऽ जाइत अछि। मैनेजर क आगू डॉक्टर-इंजीनियर क झुकहि पड़ैत छै आ ओकर आदेश मानऽ पड़ैत छै। आब ई कथा कमा टेक्निकल डिग्री नहिं लऽ सकल स आगू जा कऽ सरकारी सेवा म प्रशासक बनि जाइत अछि आ शासन-प्रशासनक नीति-निर्धारण करैत अछि जकरा सभ क स्वीकार करब अनिवार्य। ओकरा आगू डॉक्टर-इंजीनियर-प्रबंधक सभ झुकैत अछि। ई कथा एहि तीनू श्रेणी म नहिं आबि सकल स विधायक-सांसद आ मंत्री बनि जाइत अछि। राज-काज म ओकर इच्छा सर्वोपरि छै पैघ-पैघ प्रशासक सेहो ओकरा आगू नतमस्तक! आओर........ ई एहि सभ म सऽ किछु नहिं बनि सकल स बनि जाइत अछि...... संत! .... महात्मा !! ओकरा आगू सभ नतमस्तक!" कहि कऽ हमरा कक्का तमाकू क चून कसिया कऽ चुटकी म दबा ठोरक निचा रखला आ अजय दृष्टियेँ ओम्हर बैसल लोक सभ दिस तकला। गुम्म रहल सभ स्वीकृति म मूड़ी हिललक।

हमहूँ साव म पड़ि गेल नही।

-**कुमार मनोज कश्यप, सम्प्रति:** राज्य सरकार के उप-सचिव, **संपर्क:** सी-11, टावर-4, टाईप-5, किदवई नगर पूर्व (दिल्ली हाट के सामने), नई दिल्ली-110023 मो. 9810811850 / 8178216239 ई-मेल : writetokmanoj@gmail.com

अपन मंतव्य □□□□□□□□□□.□□□□□.□□□□□□□@□□□□□.□□□ पर पठाउ।

२.२.आचार्य रामानंद मंडल- काम स नाम की डार



आचार्य रामानंद मंडल

काम स राम क डर

पहिले स्कूल दस बजे सुबह स चार बजे अपराह्न तक चला। हम एगो मिडिल स्कूल मे शिक्षक रही। हम आ एगो और शिक्षक वीरेंद्र बाबू समय स पहिले ही साढ़े नौ बजे तक स्कूल मे पहुँच जाइ। कुछ शिक्षक दस बजे तक और बाकी साढ़े दस बजे तक आ जाय। कुल सात शिक्षक रही। विद्यार्थी सब साढ़े दस बजे तक पहुँचै। सरस्वती प्रार्थना के बाद एगारह बजे स क्लास लगै।

अइ बीच मे हम आ वीरेंद्र बाबू आपस मे बात करी। अहिना एक दिन वीरेंद्र बाबू एगो सब घटना सुनेलन। वीरेंद्र बाबू कहलन- दयानंद बाबू! हम जब सातवां क्लास मे पढ़ैत रहली त हमरा गांव

क स्थान म क ७(गा वावा जी,ज स्थान म नसा्ऱ्या नरु कह्लन-नीन्हुन। चला गाना सीतामढी घूमा दन छी। जानकी स्थान दखा दन छी। ग हम कह ली चलु। सा्ऱ्किल स चल दली। वावा जी सा्ऱ्किल हांक आ हम यिछा कॅनियन यन वॅ0 (गली। ककना का्ऱ्ी शक आ उन क काना वाग न नहा अ्ऱ्ला कि वावा जी स्थान म वहुग दिन स नह आ मिलनसान नहा

हं। ग जानकी स्थान म जानकी जी क दर्शन कॅली। हुन सा्ऱ्किल स नीगा वाला नात म चल अ्ऱ्ली। उंहा वावा जी सा्ऱ्किल नाकलक। हमहू सा्ऱ्किल यन स उगन (गली। हम सा्ऱ्किल लक खउा नही। वावा जी नात किनान क चांयाकल यन (गलन। आ कुल्ला कॅलन आ यानी स चनन क (धा ललन। यानी यीलन। हम कहली-वावा चनना (धाआ (गला। वावा जी कहलन-धूग वूनवक।

वावा जी हुन सा्ऱ्किल यन वॅक खींच क निंग वांध हा्ऱ्ग ७(गा छाटका सन टाला यन अयलन। उहां छाटका छाटका हूस क घन नहा नाही क दूआन यन कहीं लॅ्ऱ्की ग कहीं उॅनग खउा नहा काना काना लॅ्ऱ्की छाट छाट ऊस यहिन ल नहा आधा छागी दिखा्ऱ्ग नहा का्ऱ्ी का्ऱ्ी सिगनट री यियग नह आ खनाव ्ऱ्शाना री कना कहीं कहीं यक्का घन री नहा काना काना घन स हनमूनिया आ गवला क आवाज आवा घूंघनू क री आवाज आव आ महिला क गीग गाव क आवाज आवा हमना उंहा कना दान लाा(गा।

वावा जी कहलन-वीरेन्द्र ऽऽहां कुर्सी यन वैठल नहा। हम कनिका हुन म अवै छी। हम कह ली ठीक हया। जल्दीय आउ। हमना कना दन लगैया।

वावा जी एगो लैऽऽकी संग हुस क घन म चल गेला। हम वाहन कुर्सी यन वैठल नही। हमन गुनिया क एगो लैऽऽकी कहलक-जी। गु कैला वैठल छा। चला हमना जैन रीगना। हम लजा गेली। वाही समय एगो डैनग ज खड नहा। अना माधुनी। ऽऽ अरी वड्रा हए। ऽऽ खल वल न जानै हए। दखै न छही। कना सिकुडल वैठल हैया। आ हमना स युछलक-जेअ। गु ऽऽहा कना आ गेला हए वावा जी क साथ। हम कहली हमन गांव क स्थान म क वावा जी हए। ग उ कहलक-वावाजी ग महीना म दु वान ग अनथ्थे अवैया। हमना सए क ऽऽहां ग वान डाकु,सं सियाही सए अवैय हए। हम सए सएक दहक सुख दैऽऽ छियै। सए अयन दहक गुख क मिटाव अवैया। डाऽऽम विआहल आ न विआहल सए हए। हम सए नथ्था छी। ऽऽ नथ्था टाला हए।

वावा जी आधा घंटा क वाद घन म स निकललन।

हुन वायाकल यन जाक मुंह हाथ धायलन। हमना आक कहलन आव घन चला। साऽऽकिल स हम दुनु गोग निंग वांध हाक हुन जानकी स्थान गन अऽऽली। एगो जलयान क दुकान म दुनु गोग कचौडी जलवी खैली। साऽऽकिल स घन क लल चलली। नस्ता म वावा जी कहलन- हमना ऽऽ मजवुनी हए। मानसिक दुख क लल ग युजा याठ कनै छी। यनंच शानीनिक दुख क लल टाला यन जाय क यन

हऽ। अहूँ टाला क नतलाहूँट ऽनिया कहै छैया। हां वावा। एगो ऊँना कहैा नहल हैय कि हम सए नथ्या छी। हूँ नथ्या टाला हऽ। वावा जी कहलन-हां। नथ्या टाला क नतलाहूँट ऽनिया कहै हऽ। हूँ सए ककना न कहिया।

हां वावा। हम ककना स न कहवा। आव उ वावा जी अहूँ दुनिया म न हऽ ।

हमना आचार्य नजनीश क लिखल संएाग स समाधि आ खजुनाहा क मूर्ति क मर्म समझ म आव लागल। दशम क्लास म यढायल शिक्षक नक्षजीा वावू क याद आव लागल कि कला ऊँन जीवन क एगो या0 म खजुनाहा क वान म वावैा कहल नहथिन कि कना एगो माय वाय क अयन वटी आ नाकन प्रमी स रंट खजुनाहा म नग्न मूर्ति क दखैा ए गेल नहा। आयस म शर्मिंदा ए गेल नहा। आखिन सत्य ा सत्य हाय छैया। संएाग स समाधि क ऊान अर्थाा काम स नाम क ऊान।

-आचार्य नामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढी।

-आचार्य नामानंद मंडल, सवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र दवी, पिता-स्व0नाजश्वन मंडल, पत्नी-प्रमिला दवी, जन्म तिथि-01 जनवनी १९६0 याथता- एम-एससी (नसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। नुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता -कहानी लखन आ आलख। प्रकाशित पाथी - मैथिली कविता संग्रह हासा क न वांटिया। २०२२

प्रकाशित नचना - समिया कनिता संग्रह याथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाना। २०२२ यत्रिका -मिथिला समाज, घन -वारुन आ अयूर्ना (मैसाम)। अखवान -दैनिक मैथिल यूनर्जागनध प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- यूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डूमना, सीतामढ़ी। स्थायी यता- ग्राम-यियना विशनयून थाना-यनिहान जिला-सीतामढ़ी। वर्तमान यता-यियना सदन,मूनलियाचक वार्ड-04 सीतामढ़ी याश्र-चकमहिला जिला-सीतामढ़ी नाथ्र-विहान यिन-843302

अयन मंताव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.३.आचार्य रामानंद मंडल- यशोदा माय



आचार्य रामानंद मंडल

यशोदा माय

ब्रह्मपुरी गांव में एकटा पुजारी ब्रह्म शर्मा रहै। ओ गांव के महादेव म0 में पुजारी के काम करै। पुजारी मिलनसार रहै। पुजारी

जी मठ मं ही अपन पत्नी अहिल्या क साथ रहै। मठ मं चौका बर्तन करै क लेल एकटा महिला मुनिया रहै। ओ वही गांव क रहै। मुनिया क पति सेहो मठ क खेती बाड़ी क काम देखै।

कुछ समय बाद दोनों अहिल्या आ मुनिया गर्भवती भेल। अहिल्या क लड़का आ मुनिया क लड़की जनम लेलक।

लेकिन तीन महीना बाद दुर्भाग्यवश डायरिया क कारण अहिल्या परलोक सिधार गेल। पुजारी जी अपना दुधमुंहा बच्चा क लेल परेशान रहै लागै रहल। ई दुख मुनिया क देखल न गेल।

मुनिया पुजारी जी स कहलक-पुजारी जी अंहा चिंता न करू। अंहा क बौआ क हम अपन दूध पिला क पालब। हम बुझब की हमरा जौंआ बच्चा भेल हय। हम समान रूप स पालब।

पुजारी जी मुनिया स कहलन-मुनीया। तू हमरा मन क बात पूरा क देला। हम त बच्चा क पाल क लेल कहै चाहैत रहै ली हय। हम ई ऋण तोरा बेटी क पढा क पूरा करब।

मुनिया पुजारी क बच्चा आ अपन बच्ची क अपन दूध पिला क पाल लागल।

समय बीतल गेल। आ ई पुजारी क लड़का सर्वजीत आ मुनिया क लड़की मेधा का नाम गांव क ही स्कूल म पहिला वर्ग म लिखायल गेल। साथे साथे सर्वजीत आ मेधा पढ़ै लागल। संगे संगे खेल लागल।

समय के साथ सर्वजीत आ मेधा गांव के नजदीक सुनसन डिग्री कॉलेज मं पढ़ लागल। दुनू गोटे

बीए आनर्स हिस्ट्री क्लास म पास केलक।

समय के साथ सर्वजीत पुलिस मं बहाल हो गेल।

दुनू मं प्रेम भी रहा। अब सर्वजीत आ मेधा प्रेम निआह के बारे मं बात कर लागल। लेकिन सर्वजीत मं अपन माता पिता के छवि देखा।

सर्वजीत कहलक-मेधा हम आ तू जौत जौत पढ़ ली हय। हम दुनू गोटे जवान छी। दुनू गोटे दू जात छी। प्रेम निआह मं कोनो बाधा न हय। कानून भी हमरा पक्ष म हय। लेकिन प्रेम निआह स पहिल बाबू जी स अनुमति चाह छी।

मेधा कहलक-हं हं। बाबू जी स अनुमति जरूर ल ला। हमहूं अपना माय बाबू जी स अनुमति ल ली छी।

सर्वजीत अपन बाबू जी स बात मं कहलन-बाबू जी। हम मेधा स बड़ प्रेम करै छी। हम मेधा स निआह कर चाह छी।

पुजारी कहलन-सर्वजीत श निआह न हो सकै हय। मेधा गाहन बहिन हय। राशि-बहिन मं निआह न हो सकै हय।

सर्वजीत कहलक-बाबू जी हम दुनू दू जात छी। हम बाभन आ मेधा सालकन हय। निआह त हो सकै हय।

पुजारी जी कहलन-सर्वजीत तु न जानैय छा। जब तु तीन महीना क रहा। तहन माय मर गेलथुन। मुनिया तोरा अपन दुध पिला क पाल ल होअ। तोरा आ अपन बेटी मधा क जौंआ संतान लखा पाल ल होअ। मुनिया तहन यशोदा माय होत। जेना भगवान किशन क यशोदा माय रहय।

सर्वजीत कहलक-बाबू जी ई बात हमरा मालूम न रहल हैय। हम त मधा क माय क कामवाली समझैत रहली हय। आई हम समझली मधा हमर बहिन हय। काल्हि हम अपना हाथ में राखी बंधायब।

इधर रात में अपन माय क मधा कहलक-माय। हम सर्वजीत स प्रेम करै छी। हम दुनू गोटे एक दोसर क प्रेम करै छी। हम प्रेम बिवाह करै चाहै छी। असली कि हम दुनू गोटे दु जात क छी। सर्वजीत बाभन हय आ हम सोलकन छी।

मुनिया कहलक-सर्वजीत स तहन बिआह न हो सकै हय। काहे हम दु जाति क भेल न होय। हम सर्वजीत क अपन दुध पिला क पाल ल छी। सर्वजीत जब तीन महीना क रहै त ओकर माय मर गेल रहा। हम अपन बेटा जेका पाल ल छी। हम सर्वजीत क यशोदा माय छियै।

मधा कहलक-माय। हम त सर्वजीत क पुजारी जी क बेटा समझैत रहली हय। आई समझ ली कि सर्वजीत हमर भाई हय। हम काल्हि अपन भैया हाथ में राखी बांधब।

काल्हि सबेरे मधा अपना माय क साथ मठ में पहुँच गेल।

सर्वजीत अपना बाबू जी के साथ चौकी पर बैठल रहै।

मधा बालक-भैया सर्वजीत।

सर्वजीत बालक-बहिन मधा।

दुनू आँख स आँख बात कैलक। कुछ बात के जरूरत न पड़ल।

मधा अपन राड्डी सर्वजीत के हाथ मं राखी बांध देलक।

सर्वजीत आगे बढ़ के अपन यशोदा माय मुनिया के गोर छू के प्रणाम कैलक। यशोदा माय मुनिया अपन आशीर्वादी हाथ सर्वजीत के मूड़ी पर रख देलक।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी।

-आचार्य रामानंद मंडल, सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व०राजेश्वर मंडल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-01 जनवरी १९६० योग्यता- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता -कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह रासा के न बाँटिया। २०२२ प्रकाशित रचना - समिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाथा। २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबार -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश।

सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी। स्थायी पता- ग्राम-पिपरा विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढ़ी। वर्तमान पता-पिपरा सदन, मुरलियाचक वार्ड-04 सीतामढ़ी पोस्ट-चकमहिला जिला-सीतामढ़ी थाना-डुमरा पिन-843302

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.४.महाकान्त प्रसाद- ३ टा वीहनि कथा



महाकान्त प्रसाद

३ टा वीहनि कथा

१

चानस

-महाराज! यौ महाराज?!

-की हौ कौन, की बात?

-कन थोड़ कनिमिञ न, बड़ जरूरी अछि।

-ठीक छै, काल्हिएसँ मंच सजतै।

-हं हं..., कन साथ रहत जनतौ गऽ..!

-हँ,हँ.. ,लेह। मुद्दा प्रधान हमरा हएक।

-जी प्रधान आ राट सहा। महाराजक जय हो, जय हो!

२

विधान

-ह, जेना ज छिनहारा दै छैं, स सरस छाता दबौ!

-की रल राज्जीजी स? हमरा सँऽ कानहुँ गलती?

-गलती? गलती आ सही स गीं हमरा बूझबँ?

-की स, अहीं कहु न?

-न गीं मूंह लटबँ? गाना हम दनिरंग। छाता दबौ।

माय-बाप मरलौ, आब ओहिठाम गाड़ल कानहुँ हिस्सा-
बखरा नहि। से जान।

-से जे बिचार, हम गऽ छाड़ राखी छी, की करब!

-बिचार की? बिचार-बिचार छी।

३

पंच परमेश्वर

खदेरन कए पोखरि म ओकरा नकार(मगनमस्त) ढूकि गेल छल। ओहिसँ माछक जीवाक वस्तु हानि रऽ नहल छल। संगहि स्नान करऽबला लोक आ नेना गुटका लेल सेहो सदिखन तऽर बनल नहैत छल। खदेरन सट दऽ न कान रोगओवाक निर्णय लेलक।

खदेरन पोखरि म पंचसट लगा सरटा पाञि उपछा देलक। पाञि सूखन नकार रागि गेल, मुदा सरटा माछ मरि गेल। लोकहु टोकाक नाकसा न रल, परंच खदेरन हर्षित छल जे ओ नकार कँ बझ्झ्ला देलक।

खदेरनक रनीक सर जिनकर ओहि पोखरि म हिस्सा छलनि, गामक पंचा यत म पंचैती लेल उजुर लगओलक। पंचायत बैसल। पंचैती म नमगर-रनिगर बहस कर बाद रैसला देलक -
'खदेरनक नकार रोगओवाक निर्णय आ पनीका दूनू नीक ओ सही छल। ओकर प्रयास आ परिणाम की रल, से कानहुँ खास गप्प नहि। '

तखनहि हुनीकक बीचक व्यक्ति उठौलनि जे पाछनि सँ बहुला दल गेल न कोन हुनसँ पाछनि म आबि गेल अछि। मुदा ओहि दिस ककरहुँ पंचक ध्यान देब उचित नहि बूझल गेल। सरपंच बजला -
'पंचायतक निर्णय अकाट्य अछि। आब ककरहुँ सोच विचार करब हुअल अछि। पंच म परमेश्वर बास करैत छै।'

पंचायत हुनहुना कऽ उठि गेल।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.७.संतोष कुमार राय 'बटोही'- मंगनौना (उपन्यास- खण्ड ९)



संाष कुमान नाय 'वटाही'
मंगनौना (उपन्यास- नवम खय)

ॐ्ी ६हनीन नाज छथि। यूननका दिल्ली म हुनकन अम्मी कँ घन छन्हि। अम्मी कँ ॐ्ी दासन निकाह रल छन्हि। यहिल निकाह म ६हनीन जन्म ललीह। यहिल सौहन सँ गलाक रलाक वाद हुनकन दासन निकाह कनाउल (ग लेन्ह माहम्मद शाहिद सँ - उम्र म वीस साल येघ विजनसमैन। सौहन वसी मानदान कनैग छलैन्ह - ॐ्नहान यानि दह यन ढानैग छलन्हि। ६हनीन कँ यहिल व्रदन हिनकन अम्मी कन उमन कँ छन्हि।

६हनीन कँ (ग्रेजुएशन धनि निक ओकतमी निकॉति नहि छलैन्ह। उा यढैग कम छलीह ; घूमैग वसी। व्वाय फ्रेंड संग कुनुउन्न निश्वनिद्यालय क हॉस्टल म कहिया-कहिया टाॐ्म मैनजमंट कनैग छलीह। उाग्s सँ रून आवि क्s जामिया म क्लास कनैग छलीह। छौना सए उाकना दिस टूकुन-टूकुन गकैग छलैन्ह। रीगनका रद हिनकन सए किया जनैग छलैन्ह। माननीक रला यन ओम ओ म उा वउका यढाकू वनि (गल छलीह। आविद संग हुनका अहाँ जामिया कैम्यस म दखि सकैग छी। चाँद सन (गाल मूंह। याँच फूटक। नहि वसी यागन नहि वसी माट रह। ओक्कीस लमसम उमन। जवानी जाश मा। ओम ओ निक अंक सँ यास कलीह आउान ओमहिल लल जामिया म ओड्मंस यास कओलीह।

आबिद : कहाँ गयी थी कल ? मैंने घर पर तुम्हें देखा नहीं। 'कबीर' पर असाइनमेंट रहमान सर ने दिया है।

रुबीना : कहीं नहीं।

आबिद : अच्छा, छोड़ो। इसको सबमिट करना है।

हमने लाइब्रेरी से 'कबीर' पर बुक इश्यू करवा ली है। मैं असाइनमेंट बना रहा हूँ।

रुबीना : फिर मैं कब बनाऊँगी ?

आबिद : कल तक मेरा पूरा हो जायगा।

रुबीना : कल मुझे बुक दे देना।

आबिद : ठीक।

जामिया मे सेमेस्टर सिस्टम लागू भs गेल छै। असाइनमेंट बनौनाइ जरूरी कs देल छै। पंद्रह अंकक असाइनमेंट होइत छै।

हिंदी विभाग कँ हॉल मे रहमान सर हिंदी साहित्य पढ़ा रहल छथि। 'भक्तिकाल' मे निर्गुण काव्यधारा पर व्याख्यान भs रहल छै क्लास मे। 'कबीर आजुक प्रासंगिक छथि' विषयक ऊपर चर्चा भs रहल छै।

रुबीना : सर, कबीर ने मुसलमानों की आलोचना की है जो एक हद तक किसी को गवारा नहीं होगा।

रहमान सर : वह कैसे ?

रहनीन : इन पंक्तियां को देखिए -

" कांकर पाथर जोरि के मस्जिद लई बनाय।

ता चढि मुल्ला बांग दे का बहरा हुआ खुदाय।। "

रहमान सर : कबीर साहब प्रतीकात्मक चीजों के खिलाफ थे, न कि इस्लाम के खिलाफ। वे इबादत के विरोधी नहीं थे, बल्कि इबादत अदा करने के ढंग से खफा थे। इबादत बिना लाउडस्पीकर के भी किया जा सकता है। इससे दूसरे लोगों को काफी परेशानी नहीं होगी।

रहनीन : जी सर!

एमफिल मे हुनकर सलक्शन भs गेलै! हम वेटिंग लिस्ट केँ जाल मे फँस गेलहुँ। एमफिल करबाक सपना सच नहि भेल! मोन जामिया मे नहि गेल।

एक साल पहिने ' लाउडस्पीकर ' विवाद छिड़ल छल।

बिना मतलब के झंझट आउर खटपट! अखबार मे, चैनल पर आउर सोशल मीडिया मे अनघोल मचल छल जे मस्जिद सँ लाउडस्पीकर हटाओल जेबाक चाही, नहि तँ मंदिर सँ हमहूँ हनुमान चालीसाक पाठ करब। की भs रहल छै देश मे! बिना परक लाटा !!

"सर काज छोड़ि कs गप सप बांग देबाक विचार कियाक कs रहल छथि ? नागिनी सँ देश नहि चलतै। देश सबहक छियैय, ताहि द्वारे सहन

शील बनबाक चाही। मु०मु० कँ समाजक शान्ति मे आगि जुनि लगबियौ।
" दलान पर बैसल भूलन काका बड़बड़ा रहलाह।

भूलन काका पूबेन टोल सँ अबैत हुनकर विचार कँ समर्थन देलथिन्ह, -
"सुनियहुँ, देशक माहौल खराब नहि करक चाही। राहुल गांधी कँ 'भारत जोड़ो यात्रा' देश मे नफरत आओर डाहभाव कँ राजनीति कँ खत्म करता।"

(बाकी अंश अगिला खण्ड मे)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.६.जगदीश प्रसाद मण्डल- खिच्चड़ि



जगदीश प्रसाद मण्डल

खिब्रति

साठ्ठ0 वर्खसँ जहिना नामसनक माणीलालकँ जनेण-चिह्नेण गहिना माणीलाल सहा नामसनककँ जनेण-चिह्नेण। कहव ज दुनुक वर्च कि७ कलौं? नहियाँ कनव ठीक हा॰॰ग, कि७ गँ दुनुक वीच दाम्भी ना काना आन सम्बन्ध नहल हा॰॰न। ठीक। मुदा गँ७ ७हन सम्बन्ध नहि अछि ज ७क अयनन्न नुयँ दखेण हाथि आ दासन अ-अयनन्न नुयँ दखेण हा॰॰थ। खा७न ग॰॰सँ नामसनक आकि माणीलालकँ कान मणलव छैन, मणलव छैन अयन साठ्ठ0 वर्खसँ अवेण सम्बन्धक। स्नगंग्रासँ यहिनौं आ यछाणिया, समाजक जागनधक लल गाम-गामम सहा-सासायटी हा॰॰ छल, ज॰॰म हाग ललासँ सम्बन्धम वढाग्हनी दुनुक वीच सहा हा॰॰ग नहलैन।

डाना, दुनु (गानक मान नामसनकाक आ माणियालालाक घन न ७क गामम आ न अजास-यजासम छैन। अजास-यजासक मान हल गामक चौवगली अजास-यजासक गाम। ज॰॰ वीच दाकान-दौनी, हाट-वाजान, स्कूल-कौलज सम्बन्धक आधान हा॰॰७। दुनु (गानक घनक दुनी कनीव, डेमुका नायम यवास किलामीटन आ यहिलुका नायम दस कास अछि। दुनु समाजक डाहन जाणिक यनिनानम जन्म नन छैथ, ज॰॰ समाज (जाणि)म यढ-लिखेक चलैन कम नहन यढ-लिखेक संख्याम कमी सहा छलैहा। डाना, गनीवीक चलेण वच्चा सहसँ यढ-लिखेक अनस्थाम यनिनानक काज लल जा॰॰ग छल, अछिया। डाना, मुख्य नुयसँ यढ-लिखेक साधन कम नहन यढ-लिखेक समुचिण वनस्था नहि छल। डाना, वनस्था आ कुवनस्था दुनु अछि७।

यानिनानिक स्थिणि, आर्थिक दृष्टिय, दुनु यनिनान ७कनंगाह मुदा दु॰॰लाका नहन, ७क कासी-वलानक ॰॰लाका गँ दासन कमला वलानक,

दुनू समुदाय माने धानुक समुदाय, ताहिमे कमी-बेसी सेहो अछिए। जैठाम कमला बलानक असर अधिक ततेक अछि तैठाम कोसी-बलानक असर कमजोर अछि। रामसरनक घर कोसी-बलानक इलाकामे आ माणीलालक कमला-बलानक। तेँए खेती-पथारीक स्थिति माणीलालक बेसी नीक आ रामसरनक पछुआएल। एहूसँ जमीनक कीमत, माने खेतक मूल्य, सेहो कम रहैत गेल। शासन कालमे ओहिना रहल जे रामसरनक गामक किसान माने करकपूरावला किसान माणीलालक गामक किसानसँ माने चानपूरावला किसानसँ सरकारहुँ खेती करैमे कम लुतिगर। एहूसँ चानपूराक उपजा-बाड़ी नीक आ करकपूराक देब छलैहो आ अछियो। ओना, बाढ़िक प्रकोप सेहो दुनू गामक बीचमे कम-बेसी अछिए।

एक जातिक बीचक दुनू छैथ। जखन सन-सतानीक कमी छल तखन लोक पएर एक-गामसँ दोसर गामक आबा-जाही करै छला। तेँए दसकोसीएक बीच कथा-कुटुमैती करै छला जहूसँ आएब-जाएबक सम्बन्ध बनल छल आ बनिते अछिए। राम सरनक पारिवारिक सम्बन्ध, माने वैवाहिक सम्बन्ध माणीलालक गाम चानपूराम।

देश आजाद भेना थोड़ेब दिन भेल छल, जन-जागरणक वातावरणमे बनल रहैब करै। हाइस्कूलसँ रामसरनक राजनीतिक मंचसँ लऽ कऽ सामाजिक मंचपर जाए-आबए लगला, जहूसँ बढ़ैत कलामे दिनानुदिन सुधार सेहो भेलैन। स्कूल-कौलेजक पढ़ै-लिखैक क्रम सेहो जारीए रहलैन। जहूसँ एम.ए. तकक डिग्री रामसरनक प्राप्त केलैन। रामसरनकसँ भिन्न जीवन माणीलालक छलैन। स्कूल प्रवेशसँ पहिनहि माने विद्यालयमे नाओं लिखबैसँ पूर्व, माणीलालक पिताक मृत्यु भऽ गेल छलैन। मुदा पढ़ै-लिखैक प्रति आकर्षण पहिनहिसँ रहैन, तैसंग

गाममे स्कूल (लोअर प्राइमरी) सेहो छलैन। गामक स्कूलमे गामक बच्चा पढ़ैए, जइसँ आन गामक बच्चाक अपेक्षा सम्बन्ध स्थापित होइमे आसान होइत अछि। मणीलालसँ तीन बरख जेठ हीरालाल राय छलखिन। ओ स्कूलमे पढ़ै छला। एक तँ पितियानमे रहए सन संगी आ दोसर गामक स्कूल, तेँए स्कूल धएबामे मणीलालकेँ ओइ बच्चा जकाँ नइ भेलैन ओ स्कूल जाइ दुआरे कनी नीका नहैए।
होइ-स्कूल तक अबैत-अबैत मणीलालपर पितियानक रंग पड़ए लगलैन। स्वाभाविको अछि। मणीलालक माए, ओ वैधव्य जीवन जीबै छली, तैठाम मणीलाल किछु छला मुदा बाबू बर्खसँ उपरक छला। अपना ओठाम पुरुखक नाय तँ नहि अछि, मुदा स्त्रीगणक सियान भेबाक नाय तँ अछिए। अष्ट वर्ष च भवेत् गौरी..।
मणीलालक माए माने सूचिता, उत्तम पितियानक छली जिनका दसबज्ञायर अपन महरा आ चारि जाति बहिन आ सात गोट कनीनक जागरन छलैन। ओना, एकटा संयोग सूचिताकेँ आरो भेलैन। ओ भेलैन इहो जे सूचिताक छोट मौसी, माने माइक सातम बहिनमे सबसँ छोट बहिन,क सासुर सेहो चानपुर। चानपुराक उत्तम पितियानमे सूचिताक मौसी माने द्रौपदीक सासुर छलैन जे सामाजिक-आर्थिक रूपेँ प्रथम कोटिक छल। विवाहक पछाइत तँ नहि, तइ समयमे द्विरागमनक पछाइत आबा-जाही होइ छल, तकर किछुए दिनक पछाइत द्रौपदी विधवा भऽ गेली। नि:सन्तान, सम्पत्तिक कमी नहि, तँए देखा-देखी सूचिता सेहो दु बटाक आश्रयमे अपन जीवन हँसी-खुशीसँ बितबए लगली।
दुनूक बीच माने नामसनका आ मणियालालक बीच एकटा सुखद संयोग सेहो भेलैन। ओ भेलैन इहो जे जहिना साल-साल क्लास

ससनोग नामसनक वढला गहिना मागीलाल सहा वढला। सूखद संयाग दूनूकँ ओही रूलेन जे न कहिया घाठ जकाँ नष्टन टष्या (टाय) दS यहिल श्रेणीक विद्यार्थी वनला आ न कहिया काना क्लासम रूल कलेन, गौँउ शुनुसँ अन्द धनिक यढाइ-लिखाइम दूनू संगे नहला। ओना, एक-आध क्लासक दुनी दूनूम हाइ-स्कूलसँ नहलेन मुदा एम.ए.क यनीजा यष्ठएन सहा एकवष्ट रूS गेलेन।

ओना, विद्या-यनिचय आ जान-यहचान दूनूकँ शुनुहसँ नहलेन, मान हाइ-स्कूलसँ नहलेन, मुदा जीवन निर्माणम दूनूक दु दिशा नहलेन। नामसनक कौलज छाउन-छाउन अयन कद एगो ऊँच वना ललेन, जिनका लग एकाध घन्टा वैस कS गय-सय्य कनव, गो समय नहि वँचै छलेन। दासन दिस मागीलालक जीवन गाम-समाजक वीच नहलेन गौँउ जीवन-चानाक वास्तविक वाध रूल आत्मवलम सकानात्मकता आविय गेल छलेन।

साइO वर्खक जीवनक वीच, विह्न-यहविह्न नहला यछागिया, कहिया एहन अवसन दूनूकँ नहि रूटलेन जे घन्टा-दु-घन्टा एकOाम वैस विचान-विनिमय कनितथि।

दूनूक दृष्टिकाणम स्पष्ट अन्तन आविय गेल छैन जे जेOाम नामसनकक नजैन सत्तान्मूखी वनि गेल छैन गेOाम मागीलालक नजैन जनान्मूखी वनि गेल छैन।

आइ यचहत्तैन वर्खक अवस्थाम नामसनका आ मागियालाल यहुँच गेल छैथ।

समाजक वीच नाजनीतिक न्नुय सहा वदैलिय नहल अछि। दखगो छी जे जीविगक चर्च कम आ मृत्युक चर्च वसी रूइय नहल अछि। खाएन गइसँ मागीलालकँ कान मगलव। अयना जीवनकँ मागीलाल

अपना मुहीम चाहि नखन छैथ, जकरा सामाजिक जीवन कहि सकै छिऐ। जकर सिहन्ता अपना मनमे लागल अछि। सामाजिक परिवेशक विपरीत मनमे विचार उठल जे पनसु जे माणीलाल रायसँ गप-सप्प हएत, ओ कहलैन- 'बौआ, समय कहना दुनकाल, राानाा-पूनाधक धूप्पकारी जकाँ, हएत मुदा पचहत्तैन वनख पूर्व अपन देखल उ दिन, आइयो उहिना मन-मस्तिष्कमे बैसल अछि जहिया बौदह अगस्तकेँ अधरतियामे पटना नतिया स्टेशनसँ नाजिन हूसन शहनाइक टोहि आ लालकिलापर स्वतंत्रताक तिरंगा मग्धार्क हहनाउब, शुनु हएत।'

उना, उछाइनपर नहौ गखन मान पति गेल जे आइ माणीलाल राइक जन्म-दिन छिऐन, किए ने जन्म-पहुक मंगल गीत, 'आजुल शुभ कर लगनमा, शुभ हे शुभ', लगमे जा कऽ बधैया गीत जकाँ गाबि मूँहक मांग माँगि आबी।'

विछानपर, अपन दिन हनिक नुटिंग गैयान कनए लगलौं। गइम पहिल काज माणीलाल रायकेँ शुभ सङ्देश देव हएत। कागा धउहउलौं मुदा सुनिकऽ उठेक जे नअबजिया समय अपन अछि, स हइय गेल। उना, मनमे ख्याल उठि गेल छल जे शुभ सङ्देश शुभ दिनक शुभ वलामे देव वसी नीक हाइत अछि, मुदा गइम कनी पछुआ गेव कलौं। जइसँ प्रहार वलाक शुभ किनछ छुबैमे हनी हइय गेल, मुदा पहुँचलौं।

दनवज्ञापर बैसल माणीलाल राय जना किछु मन-मन साचिकऽ मुस्किया नहला छल, गहिना वूमि पउल। कनी हटलसँ वजलौं- "राय साहेब, नव वर्षक शुभकामनाक बधाइ अछि.!"

जना उघाउलकेँ टाकलापर हक्का खुजैए गहिना माणीलाल राय आँखि

खालि एतबा बजला-

"बौआ, तान शुरकामन हम थोड़ शुर-शुर जीव, जीव ताहन सुकर्मी। मुदा तोँहूँ ठीक कहलह, किए तँ समाजमे दुनू धारा उनटा प्रवाहित होइए जहिना बंगालक गंगाक धारमे होइए। सोलह घण्टा उत्तरसँ दक्षिण दिस, माने पहाड़सँ समुद्र दिस बहैए आ आठ घण्टा दक्षिणसँ उत्तर दिस, माने समुद्रसँ पहाड़ दिस बहैए। तहिना कर्म आ भावक बीच सेहो अछिए। कखनो कर्मक धार होइत भाव प्रवाहित होइए तँ कखनो भावधाराक संग कर्म सेहो प्रवाहित होइत अछि।"

मणिलाल भाइक विचार सुनि विचारए लगलौं कि विभ्रम मणिलाल भाय कहलैन-

"बौआ, चारिम दिन नामसनकक समाद भेल जे हेँट करए आबि रहल छैथ। से तहन की विचार?"

जहिना मणिलाल भाय अपन भाव दिअ चाहलैन तहिना अपना घुमौआ भाव, घुमौआ भाव भेल गाम-गामक भाव जे गाम-गाम तीन-गाम-चारि गाम घुमि बाइस-तबाइस होइत असल जगहपर पहुँचैत, तेँ बजलौं-

"भाय साहेब! अहाँ तँ अपन विचारवान छी, जे नीक होइ से कहि दिअ। अपनेक कि कोनो आदेश हम काटब।"

कनीकाल गुम्म भऽ मणिलाल भाय मन-मन विचारए लगला जे कते दुखद विषय अछि जे समाजक पढ़ल-लिखल लोक माने नामसनक जखन ओते पुरान, ओते वैवाहिक सम्बन्धकेँ जातिकऽ नहि रखि सकल तखन..? जेना मनक उद्वेग मणिलाल भाइक विचारमे ठोकर मारलकैन, तहिना बूझि पड़ल, बजला-

"बौआ! जिनगीक सम्बन्धक नस, दुनू गोटेक बीच सूखि गेल। आब

गाँछी करह त की नीक हएत?"

ओना, मणिलाल रायक हिनका की राग छलैन से तँ ओ अपन बूझैत रहथि मुदा अपना बूझि पड़ल त मन-मन मुस्काइत जनुन छथि। उधकी देत उधकबैत पुछलथिन- "से की राय साहेब?"

जहिना अपन उधकियौलिऔन तहिना उत्तेक कऽ मणिलाल राय बजला-

"बौआ, खिच्चड़ि आ खीर दुनू खाइए गेलगर। राग जकाँ टकुआ-तान नइ खाइए, मुदा दुनूकेँ एक कहबैक?"

बजलौं- "हमहीं कि आना किया न एहेन बात कहत।"

ओना, मणिलाल रायक निदानक सह-सह अपना ओझन मुस्काइत नहि मुदा तइ विभ्रम मणिएलाल राय बजला-

"खीर आ खिच्चड़िम की अन्तर अछि, बूझै छहक?"

अखन तक अपन यएह बूझै छलौं जे नून दए खिच्चड़ि होइ आ चिन्नी दए खीर। बजलौं-

"नून-चिन्नीक तँ खेल अछि, खिच्चड़ि बनावी कि खीर।"

हमर बात जना मणिलाल रायक हृदयकेँ छुबि देलकैन तहिना हृदयसँ मुस्कियाइत बजला-

"बौआ, खीर आ खिच्चड़िक अपन-अपन जीवन-चरित्र अछि।"

दुनूक अपन-अपन जीवन सुनि मन धकमकाएल। धकमकाइक कारण रहल, जेना अपन नून-चिन्नीक खेल बूझै छलौं तेना दुनूक जीवनक चर्च मणिलाल राय करैत अछि.। पुछलथिन-

"से केना राय साहेब?"

जहिना काना कथाकार ना कवि अपन एक शीर्षकक शब्दम कथा ना कविता सुना दइ छथि तहिना मणिलाल राय बजला-

"एहेन जीवन दृष्टि छी आ जीवन दर्शबैए।"

सभ पूछी तँ मणिलाल रायक विचार नीक जकाँ नहि बुझलौं, तँए कहब आ सुनबा नहि कलौं सहए मुँह नहि बाजब। मुदा मणिलाल रायक ध्यानमे किछु बाजब, कठिन अछिए। पूछलयेन-

"से केना राय साहेब?"

एतबे विचार जहिना मणिलाल रायक हृदयकेँ चुहुटिकऽ पकड़ि लेलकैन तहिना हीय खोलि बजला-

"बौआ, खिचड़ि आ रहल जइमे दालि-भातक सम्बन्धक जीवन छी।"

जहिना साँझुअना मणिलाल रायक विचार मनमे गति भेल तहिना बजलौं- "छीहे।"

मणिलाल राय बजला-

"मुदा, खिचड़िमे जहिना दालिक पकान नहि अछि, मात्र चाउरसँ खसाबी धनि, तहिना चाउरक पकान सहए नहि अछि। मारुका चाउरसँ मरिह्का धनि जहिना, तहिना अरबासँ उसना धनि।"

ओना, जेना जहीमे मणिलाल राय बजला ताहि जहीमे अपन मन नहि बुझि सकला। एकर मात्र इहो नहि आ किछु न बुझलौं। बजलौं-

"हँ, से तँ ठीक।"

एतेक 'ठीक' जहिना मणिलाल रायकेँ पीठ ठोकि देलकैन तहिना ठोकाएल मन बजला-

"बौआ, नामसबक आ अपन जीवनमे एहेन अन्तर अछि। जहिना खीर मात्र एकटा अन्न अपन संगीक संग मात्र दुध-चीनी इत्यादि मिश्रासक संग चलैए, एहेन चलब ओकर जीवन छी।"

मणिलाल राय जइ हिसाबसँ बजला तइ हिसाबसँ अपन नहि बुझि पेलौं। तँए बजैमे कनी धड़फड़ाएब रहब कएल आ एना बजा

गेल-

"लोक खीन-खिद्धति हँसैए, राय साहेब। तखन तँ उनका न खिद्धतिय हल त बिनु हानि-जीवक जिनगी जीबैए।"

मोतीलाल राय बजला किछु नै मुदा गम्भीर जरूर भेला।

-

-जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जन्म मधुबनी जिलाक बेरमा गाममे 5 जुलाई 1947 ईस्वीमे भेलैन। मण्डलजी हिन्दी एवं राजनीति शास्त्रमे एम.ए.क उपाधि पाबि जीविकोपार्जन हेतु कृषि कार्यमे संलग्न भऽ रुचि पूर्वक समाज सेवामे लागि गेला। समाजमे व्याप्त रूढ़िवादी एवं सामन्ती व्यवहार सामाजिक विकासमे हिनका बाधक बुझि पड़लैन। फलत: जमीन्दार, सामन्तक संग गाममे पुरजोर लड़ाइ ठाढ़ भऽ गेलैन। फलत: मण्डलजी अपन जीवनक अधिकांश समय केस-मोकदमा, जहल यात्रादिमे बीतए लगलाह। 2001 ईस्वीक पछाइत साहित्य लेखन-क्षेत्रमे एला। 2008 ईस्वीसँ विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे हिनक रचना प्रकाशित हुअए लगलैन। गीत, काव्य, नाटक, एकांकी, कथा, उपन्यास इत्यादि साहित्यक मौलिक विधामे हिनक अनवरत लेखन अद्वितीय सिद्ध भऽ रहलैन अछि। अखन धरि दर्जन भरि नाटक/एकांकी, पाँच साएसँ ऊपर गीत/काव्य, उन्नैस गोट उपन्यास आ साढ़े चारिसाए कथा-कहानीक संग किछु महत्वपूर्ण विषयक शोधालेख आदिक पुस्तकाकार, साएसँ ऊपर ग्रन्थमे प्रकाशित छैन। मिथिला-मैथिलीक विकासमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक योगदान अविस्मरणीय छैन। ई अपन सतत क्रियाशीलता ओ रचना धर्मिताक

लेल विभिन्न संस्था सभक द्वारा सम्मानित/पुरस्कृत होइत रहला अछि, यथा- विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'गामक जिनगी' लघु कथा संग्रह लेल 'विदेह सम्मान- 2011', 'गामक जिनगी' व समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादमी द्वारा- 'टैगोर लिटरेचर अवार्ड- 2011', मिथिला मैथिलीक उन्नयन लेल साऊन दरभंगा द्वारा- 'वैदेह सम्म्मान- 2012', विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'नै धारैए' उपन्यास लेल 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार- 2014', साहित्यमे समग्र योगदान लेल एस.एन.एस. ग्लोबल समिति द्वारा 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतत क्रियाशील रहबाक हेतु अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा- 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016', रचना धर्मिताक उत्तम अमूल्य योगदान हेतु ग्राम्या-मण्डल द्वारा- 'कौमुदी सम्मान- 2017', मिथिला-मैथिलीक संग अन्य उत्कृष्ट सेवा लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा 'स्व. बाबू साहेब चौधरी सम्मान- 2018', चेतना समिति, पटनाक प्रसिद्ध 'यात्री चेतना पुरस्कार- 2020', मैथिली साहित्यक अहर्निश सेवा आ सृजन हेतु मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वारा 'राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020', भारत सरकार द्वारा 'साहित्य अकादमी पुरस्कार- 2021' तथा साहित्य ओ संस्कृतिमे महत्वपूर्ण अवदान लेल अमर शहीद रामफल मंडल विचार मंच द्वारा 'अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार- 2022'

रचना संसार : 1. इन्द्रधनुषी अकास, 2. राति-दिन, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता, 5. गीतांजलि, 6. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 7. सतबेध, 8. चुनौती, 9. रहसा चौरी, 10. कामधेनु,

11. मन मथन, 12. अकास गंगा - कविता संग्रह। 13. पंचवटी- एकांकी संचयन। 14. मिथिलाक बेटी, 15. कम्प्रोमाइज, 16. झमेलिया बिआह, 17. रत्नाकर डकैत, 18. स्वयंवर- नाटक। 19. मौलाइल गाछक फूल, 20. उत्थान-पतन, 21. जिनगीक जीत, 22. जीवन-मरण, 23. जीवन संघर्ष, 24. नै धाड़ैए, 25. बड़की बहिन, 26. भादवक आठ अन्हार, 27. सधवा-विधवा, 28. ठूठ गाछ, 29. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 30. लहसन, 31. पंगु, 32. आमक गाछी, 33. सुचिता, 34. मोड़पर, 35. संकल्प, 36. अन्तिम क्षण, 37. कुण्ठा- उपन्यास। 38. पयस्विनी- प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना। 39. कल्याणी, 40. सतमाए, 41. समझौता, 42. तामक तमघैल, 43. बीरांगना- एकांकी। 44. तरेगन, 45. बजन्ता-बुझन्ता- बीहनि कथा संग्रह। 46. शंभुदास, 47. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 48. गामक जिनगी, 49. अर्द्धांगिनी, 50. सतभैंया पोखैर, 51. गामक शकल-सूरत, 52. अपन मन अपन धन, 53. समरथाइक भूत, 54. अप्पन-बीरान, 55. बाल गोपाल, 56. भकमोड़, 57. उलबा चाउर, 58. पतझाड़, 59. गढ़ैनगर हाथ, 60. लजबिज्जी, 61. उकड़ू समय, 62. मधुमाछी, 63. पसेनाक धरम, 64. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 65. फलहार, 66. खसैत गाछ, 67. एगच्छा आमक गाछ, 68. शुभचिन्तक, 69. गाछपर सँ खसला, 70. डभियाएल गाम, 71. गुलेती दास, 72. मुड़ियाएल घर, 73. बीरांगना, 74. स्मृति शेष, 75. बेटीक पैरुख, 76. क्रान्तियोग, 77. त्रिकालदर्शी, 78. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 79. दाहनी हाथ, 80. सुभिमानी जिनगी, 81. देखल दिन, 82. गपक पियाहुल लोक, 83. दिवालीक दीप, 84. अप्पन गाम, 85. खिलतोड़ भूमि, 86. चितवनक शिकार,

87. बौनस खगक बौनस उपज, 88. समयसँ पहिने चेत किसान, 89. लौक, 90. गामक आशा टूटि गेल, 91. पसेनाक मोल, 92. कृषियोग, 93. हारल चेहरा जीतल भूप, 94. नइ जाएब पहिलुका, 95. कर्मक रंग कर्मक संग, 96. गामक सूरत बदलि गेल, 97. अन्तिम परीक्षा, 98. धनक खर्च, 99. नीक करम नीक फल, 100. जीवनक कर्म जीवनक मर्म, 101. संचयन, 102. रचि मन काज, 103. आशल आशा चलि गेल, 104. जीवन दान पथा 105. अपन साथी- लघु कथा संग्रह।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१.जगदीश प्रसाद मण्डल- माटियर (सामाजिक उपन्यास सातम भाग)


जगदीश प्रसाद मण्डल

मा॰यन (धानानादिक उपन्यास)

साग़म यतन

गामक मान पलायनपूनक दुटा ज्ञानीजनकँ कामसन पकड़ लेलैन। अपन पिताक अमलदारी पकक ज धनाढ्य बीज-बीस छलैन सरकँ समटि आ ब्रह्मनक ताला आ ताला लऽ कामसन कलकत्ताकँ उड़िना बिदा भऽ कलैन जहिना यात्रीजी मिथिलाक कान छला। निमहनू नहि निमहनू भऽ दीगन एला।

दोसर दिन कामसन पलायन पहुँच गेला। अखन पक पलायनम गामक किया न ब्रह्मन कीनन छला आ न हुँजीनियनिंगक शिक्षा यौन छला। सरह पनहुँ कामसन अपनाकँ नव-नव वृत्ति नहल छला मुदा धन नँ मनम विसवास वनल छैन ज अही गामक धनीपन जन्मा एल अछि आ पाँच वर्ख धनिक जीवना नँ वीतव कठल अछि।

उना, गामक पनिवेशम मान मिथिलांचलक गामक पनिवेशम ब्रह्मनक उपयोग हुअ लगल छला खाना जाएब आ माटिया उघववला काज चलिप नहल अछि। उम्माहसँ एनल कामसन आन-आन ब्रह्मनवलासँ सहा एँट कनैक आ ज सरह ब्रह्मनसँ काज कनौन छला तिनका सरहसँ अनूरूप प्राप्त कनैक निवान कलैन। निवानक दौरम कामसन अन्तर्द्वन्द्वम फँसि गेला। फँसि भऽ गेला ज विना वजौन कणी जाएब उचित नहि। नँ किनका उठाम जाऽहसँ मन मनाही कनैन ज उपकैन कऽ किनका उठाम जाएब उचित नहि। कहला जाऽहन ज विनु वजौन कारूनन गेलौं आ कनियाँक माय पूछलैन काए भेलौं.? मुदा भऽ निवान कामसनक मनम उठिय न नहल

𑒕𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒥𑒱𑒢𑒳 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒾 𑒖𑒰𑒋𑒥 𑒖𑒢𑒳𑒢, 𑒅𑒣𑒏𑒻𑒢 𑒏𑓄 𑒖𑒰𑒋𑒥 𑒯𑒋𑒪,
𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒰𑒖𑒮𑒿 𑒖𑒹𑒿 𑒏𑒩𑒾 𑒖𑒰𑒃𑒕 𑒕𑒲 𑒞𑒿 𑒍 𑒏𑒰𑒖 𑒖𑒰𑒋𑒥 𑒯𑒋𑒪।
𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒢, 𑒏𑒰𑒧𑒮𑒢 𑒍𑒚𑒰𑒧 𑒑𑒰𑒛𑒲 𑒪𑒑𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒩 𑒁𑒣𑒢𑒰-𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒍𑒚𑒰𑒧 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒁𑒮𑒑𑒩 𑒠𑒢𑒫𑒖𑓂𑒘𑒰𑒨𑒢 𑒥𑒻𑒮𑒪-𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒏𑒰𑒧𑒮𑒢 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒞𑒰𑒯𑒢 𑒥𑒰𑒢𑒧 𑒯𑒿𑒮𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒥𑓀𑒑𑒏 𑒥𑒰𑒢𑒧 𑒪𑒼𑒏 𑒯𑒿𑒮𑒻𑒋। 𑒋𑒏 𑒞𑒿 𑒪𑒑𑒱𑒨𑒰𑒯 𑒑𑒰𑒕 𑒥𑓀𑒑𑒏, 𑒑𑒹𑒨𑒢 𑒏𑒿𑒙𑒰𑒯 𑒮𑒠𑒰 𑒯𑒰𑒃𑒕 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒿𑒋 𑒏𑒩𑒥 𑒖𑒹 𑒪𑒼𑒏 𑒥𑓀𑒑 𑒏𑒩𑒾 𑒂𑒢 𑒥𑒰𑒢𑒮𑒿 𑒂𑒢𑒻 𑒕𑒻𑒟, 𑒮𑒠𑒰 𑒥𑒰𑒑 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒰𑒯𑒲 𑒥𑒰𑒢𑒮𑒿 𑒧𑒰𑒢 𑒥𑓀𑒑𑒏 𑒥𑒰𑒢𑒮𑒿 𑒢 𑒥𑓀𑒑 𑒂𑒢𑒱 𑒨𑒟𑒱𑒨𑒰-𑒕𑒱𑒙𑓂𑒙𑒰 𑒥𑒢𑒥𑒻𑒋, 𑒏𑒳𑒩𑓂𑒮𑒱𑒨𑒰-𑒙𑒥𑒴𑒪 𑒮𑒠𑒰 𑒥𑒢𑒥𑒻𑒋 𑒂 𑒮𑒱𑒨𑒰𑒯𑒲 𑒯𑒰𑒟𑒏 𑒪𑒰𑒚𑒱𑒨𑒰 𑒞𑒿 𑒥𑒢𑒻𑒥𑒑 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒯𑒻𑒪 𑒞𑒿 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒱𑒨𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒟𑒰𑒢𑒰𑒧 𑒧𑒰𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒕𑒋 𑒧𑒰𑒢 𑒥𑓀𑒑𑒏, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲𑒏 𑒪𑒰𑒚𑒲 𑒏𑒩𑒳𑒢 𑒯𑒰𑒃𑒕 𑒕𑒻 𑒞𑒰 𑒞𑒿 𑒟𑒰𑒢𑒰𑒧 𑒯𑒋𑒙𑒻𑒋। 𑒞𑒿𑒋 𑒏𑒩𑒥 𑒖𑒹 𑒥𑓀𑒑𑒏 𑒥𑒰𑒢 𑒖𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒖𑒥 𑒢 𑒏𑒢𑒥 𑒑𑒐𑒢 𑒥𑓀𑒑𑒮𑒿 𑒯𑒿𑒙 𑒏𑒢𑒰 𑒯𑒋𑒑𑒰। 𑒥𑒮𑒲 𑒥𑒰𑒑 𑒏𑒟𑒲𑒪, 𑒁𑒐𑒢 𑒋𑒑𑒥 𑒥𑒳𑒮𑒳 𑒖𑒹 𑒥𑓀𑒑-𑒥𑒰𑒑𑒮𑒿 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒚𑒰𑒛𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒥𑓀𑒑-𑒥𑒰𑒑𑒨𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒔𑒪𑒱𑒑𑒰 𑒁𑒕𑒱।
𑒔𑒰𑒢𑒱 𑒒𑒢𑓂𑒨𑒰𑒏 𑒣𑒕𑒰𑒃𑒑 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒢 𑒢𑒒𑒳𑒢𑒲𑒢 𑒂 𑒧𑒴𑒢𑒮𑒢 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒏𑒰𑒧𑒮𑒢 𑒍𑒚𑒰𑒧 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪। 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒥 𑒅𑒔𑒱𑒑𑒰 𑒁𑒕𑒱𑒋, 𑒏𑒱𑒋 𑒞𑒿 𑒢𑒰𑒏𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒢𑒨𑒢 𑒢 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒩 𑒑𑒰𑒧 𑒂𑒋𑒪 𑒁𑒕𑒱।
𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒮𑒩𑒳 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒰𑒧𑒮𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒥-𑒢𑒥 𑒂 𑒣𑒯𑒱𑒪-𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒥𑒳𑒧𑒱 𑒣𑒚𑒱 𑒢𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒢। 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒹 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒰 𑒠𑒱𑒨𑒰𑒠𑒲 𑒣𑒢𑒱𑒫𑒰𑒢 𑒕𑒻𑒢 𑒞𑒰 𑒮𑒩𑒳 𑒒𑒢𑒰𑒚𑒲 𑒠𑒳𑒂𑒢 𑒥𑒰𑒡𑒧 𑒥𑒮𑒪 𑒕𑒻𑒟। 𑒪𑒑𑒪 𑒏𑒰𑒧𑒮𑒢𑒏 𑒧𑒢𑒧 𑒯𑒲𑒯𑒰 𑒅𑒚𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒕𑒢 𑒖𑒹 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒥𑒲𑒮 𑒥𑒩𑓂𑒐𑒏 𑒮𑒰𑒡𑒢𑒰𑒮𑒿 𑒃𑒖𑒲𑒢𑒱𑒨𑒢 𑒥𑒢𑒱 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧 (𑒑𑒰𑒧𑒧) 𑒋𑒪𑒾𑓀 𑒁𑒕𑒱 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒧 𑒏𑒑𑒰 𑒑𑒣𑒒𑒰𑒮𑒿 𑒑𑒖 𑒑𑒝𑒱𑒏 𑒃𑒖𑒲𑒢 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒠𑒾𑒛𑒑 𑒔𑒪𑒑 𑒮𑒠𑒰 𑒞𑒿 𑒠𑒐𑒥 𑒁𑒕𑒱।
𑒏𑒰𑒧𑒮𑒢𑒏 𑒑𑒰𑒛𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒥𑒰𑒢 𑒮𑒾𑓀𑒮 𑒑𑒰𑒧 𑒯𑒋𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒠𑒳𑒙𑒰 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒢 𑒑𑒰𑒧𑒧

आएल ओतसँ डाक्टर लोकक, जिनक काज छन्हिक अस्पतालमे रहि आएल रहैन, मनमे विसवासु आशा जगब कलैन जे समाज अखनो जीवित अछि किए ने एक-दोसरक बीच फेंच-फाँट चलि रहल अछि। काज होब करत।

कामेसरक मनमे न गामनी छैन जे बिनु बजौने किनको डॉक्टर कतौ जाएब। मुदा समाजमे से नहि अछि, सामाजिक नियम सभक दरबज्जाकेँ अपन दरबज्जा मानि अपन जीवनक क्रिया-कलापक निर्वाह-निर्माण करैत छथि। पाँच-सात आदमी कामेसर डॉक्टर पहुँच चुकल छला। ओना, बंगालीक समाजसँ कामेसर आएल छला तेँए अपन शिष्टाचार निमाहैक कोशिशमे छलाह मुदा अव्यवस्थित जीवन जहिना सुव्यवस्थित नहि बनि पबैए तहिना अव्यवस्थित विचार आ शिष्टाचार सुव्यवस्थित विचार आ शिष्टाचार कहाँ निमाहि सकैए। जहिना विचार व्यवस्थित नहि होइत तहिना शिष्टाचारक पालन करब तेँ दूर रहल, जे निरमाण नहि कऽ सकै छी।

रघुवीर बजला-

"कामेसर भाय, जहिना गाममे एक बनि पूर्वज संग नहि जीवन निमाहलैन, आ अपना सभ जेना कलकत्तामे बनौने रहलौं, से गाममे कहाँ बनि चलत, तेँए ने नीनू लोककेँ एक विचारमे आबि चलाबए पड़त किने। जहिना सबहक नीक होइत।"

रघुवीर ज्ञानीनकेँ अपन ज्ञानीक अनुरूप रहैन, मुदा कामेसरकेँ से नहि छैन, मुदा कामेसरक मनमे एते ने बनल छैन जे जहिना लोटामे गाछी निकालि रघुवीर गाम नक संग आएल अछि तहिना संग ने अपना चलब अछि। हाँसियान बनि कामेसर रघुवीरकेँ कहलैन-

"जहिना अपना सभ, गीनू गोप एक उमनिया छी आ गाममे एकटा नव ढंगक शुरुआत करए मार नव काज करए कलकत्तासँ एलौं अछि, तहिना गीनू गोपक जीवन संग-संग चलैत रहए, यएह न गीनू गोपकेँ निमाहबाक सहज अछि।"

राकर चालक आ मालिक चलवाह, तेँ बीच मेँ सम्बन्ध सूत्र बनबए पड़ल। तेँए फूलक माला जकाँ रघुवीर आ मुनेसर अपन-अपन जगह देखलौं, जहिना सम्बन्ध रघुवीरकेँ कलकत्तामे ब्राह्मनक कुपमे छल ठाढ़ी सूत्रकेँ लागू करैत, अपन विचार रखलक। एक मारि-पानियन रहनिहार गीनू गोप, विचार-विमर्श करैत एक सूत्र स्थापित कऽ लेलैन।

विचारकेँ विचारि कामसन बजला-

"कारोबार छी, भूल-चूक हएब करत मुदा हम सभ प्रमुख सूत्र एकरा मानि आगू बढ़ी जे कारोबारमे मूल-सूद नहि बाजी। सही बात आ सही लेन-देनक कोना-न-कोना रास्ता अपनामे विचार करि निमाहैत चलब।"

कामसनक विचार रघुवीरो आ मुनेसरोकेँ जँचल। जँचित सबहक मन मानि गेलैन जे जँ गीनू गोपक बीच सही काज आ सही विचार बनल रहत तँ जीवनमे कहियो विवादक जगह नहि रहत। मुस्की दैत रघुवीर बाजल-

"आइसँ हम सभ एकसूत्रमे बन्हि अपन जीवनक भविसक गेयानीमे लागि जाइ।"

-

-जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जन्म मधुबनी जिलाक बेरमा गाममे 5 जुलाई 1947 ईस्वीमे भेलनि। मण्डलजी हिन्दी एवं राजनीति शास्त्रमे एम.ए.क अहर्ता पाबि जीविकोपार्जन हेतु कृषि कार्यमे संलग्न भऽ रुचि पूर्वक समाज सेवामे लागि गेला। समाजमे व्याप्त रूढ़िवादी एवं सामन्ती व्यवहार सामाजिक विकासमे हिनका बाधक बुझि पड़लनि। फलत: जमीन्दार, सामन्तक संग गाममे पुरजोर लड़ाइ ठाढ़ भऽ गेलनि। फलत: मण्डलजी अपन जीवनक अधिकांश समय केस-मोकदमा, जहल यात्रादिमे व्यतीत केलाह। 2001 ईस्वीक पश्चात साहित्य लेखन-क्रममे एला। 2008 ईस्वीसँ विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे हिनक रचना प्रकाशित हुअए लगलनि। गीत, काव्य, नाटक, एकांकी, कथा, उपन्यास इत्यादि साहित्यक मौलिक विधामे हिनक अनवरत लेखन अद्वितीय सिद्ध भऽ रहलनि अछि। अखन धरि दर्जन भरि नाटक/एकांकी, पाँच साएसँ उपर गीत/काव्य, उन्नैस गोट उपन्यास आ साढ़े आठसाए कथा-कहानीक संग किछु महत्वपूर्ण विषयक शोधालेख आदिक पुस्तकाकार, साएसँ उपर ग्रन्थमे प्रकाशित छैन। मिथिला-मैथिलीक विकासमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक योगदान अविस्मरणीय छैन। ई अपन सतत क्रियाशीलता ओ रचना धर्मिताक लेल विभिन्न संस्थासभक द्वारा सम्मानित/पुरस्कृत होइत रहला अछि, यथा- विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा "गामक जिनगी" लघु कथा संग्रह लेल "विदेह सम्मान- 2011", "गामक जिनगी" व समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादमी द्वारा- "टैगोर लिटिरेचर एवार्ड- 2011", मिथिला मैथिलीक उन्नयन लेल साओन दनरंगा द्वारा- "वैदेह सम्मान- 2012", विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा "नै धारैए" उपन्यास लेल "विदेह बाल साहित्य पुरस्कार- 2014", साहित्यमे समग्र योदान

लेल एस.एन.एस. ग्लोबल सोसाइटी द्वारा "कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015", मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतत क्रियाशील रहबाक हेतु अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा- "वैद्यनाथ मिश्र "यात्री" सम्मान- 2016", रचना धर्मिताक उत्तम अमूल्य योगदान हेतु आत्मा-मण्डल द्वारा- "कौमुदी सम्मान- 2017", मिथिला-मैथिलीक संग अन्य उत्कृष्ट सेवा लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा "स्व. बाबू साहेब चौधरी सम्मान- 2018", चेतना समिति, पटनाक प्रसिद्ध "यात्री चेतना पुरस्कार- 2020", मैथिली साहित्यक अहर्निश सेवा आ सृजन हेतु मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वारा "राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020", भारत सरकार द्वारा "साहित्य अकादमी पुरस्कार- 2021" तथा साहित्य ओ संस्कृतिमे महत्वपूर्ण अवदान लेल अमर शहीद रामफल मंडल विचार मंच द्वारा "अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार- 2022"

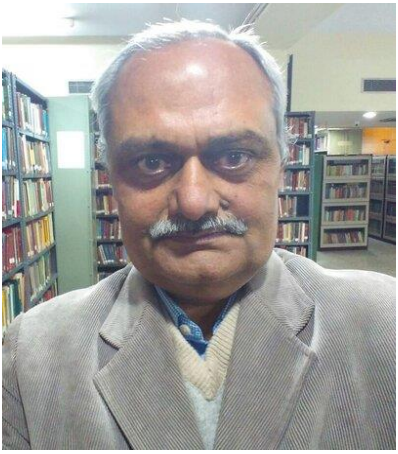
रचना संसार : 1. इन्द्रधनुषी अकास, 2. राति-दिन, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता, 5. गीतांजलि, 6. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 7. सतबेध, 8. चुनौती, 9. रहसा चौरी, 10. कामधेनु, 11. मन मथन, 12. अकास गंगा - कविता संग्रह। 13. पंचवटी- एकांकी संचयन। 14. मिथिलाक बेटी, 15. कम्प्रोमाइज, 16. झमेलिया बिआह, 17. रत्नाकर डकैत, 18. स्वयंवर- नाटक। 19. मौलाइल गाछक फूल, 20. उत्थान-पतन, 21. जिनगीक जीत, 22. जीवन-मरण, 23. जीवन संघर्ष, 24. नै धाड़ैए, 25. बड़की बहिन, 26. भादवक आठ अन्हार, 27. सधवा-विधवा, 28. ठूठ गाछ, 29. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 30. लहसन, 31. पंगु, 32.

आमक गाछी, 33. सुचिता, 34. मोड़पर, 35. संकल्प, 36. अन्तिम क्षण, 37. कुण्ठा- उपन्यास। 38. पयस्विनी- प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना। 39. कल्याणी, 40. सतमाए, 41. समझौता, 42. तामक तमघैल, 43. बीरांगना- एकांकी। 44. तरेगन, 45. बजन्ता-बुझन्ता- बीहनि कथा संग्रह। 46. शंभुदास, 47. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 48. गामक जिनगी, 49. अर्द्धांगिनी, 50. सतभैंया पोखैर, 51. गामक शकल-सूरत, 52. अपन मन अपन धन, 53. समरथाइक भूत, 54. अप्पन-बीरान, 55. बाल गोपाल, 56. रकमाए, 57. उलबा चाउर, 58. पतझाड़, 59. गढ़ैनगर हाथ, 60. लजबिज्जी, 61. उकड़ू समय, 62. मधुमाछी, 63. पसेनाक धरम, 64. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 65. फलहार, 66. खसैत गाछ, 67. एगच्छा आमक गाछ, 68. शुभचिन्तक, 69. गाछपर सँ खसला, 70. डभियाएल गाम, 71. गुलेती दास, 72. मुड़ियाएल घर, 73. बीरांगना, 74. स्मृति शेष, 75. बेटीक पैरुख, 76. क्रान्तियोग, 77. त्रिकालदर्शी, 78. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 79. दोहरी हाक, 80. सुभिमानी जिनगी, 81. देखल दिन, 82. गपक पियाहुल लोक, 83. दिवालीक दीप, 84. अप्पन गाम, 85. खिलतोड़ भूमि, 86. चितवनक शिकार, 87. चौरस खेतक चौरस उपज, 88. समयसँ पहिने चेत किसान, 89. रौक, 90. गामक आशा टूटि गेल, 91. पसेनाक मोल, 92. कृषियोग, 93. हारल बहना जीतल जुय, 94. नहि जाकर पनिवान, 95. कर्ताक रंग कर्मक संग, 96. गामक सूरत बदैल गेल, 97. अन्तिम परीक्षा, 98. धनक खर्च, 99. नीक ठकान ठकलौं, 100. जीवनक कर्म जीवनक मर्म, 101. संवरण, 102. रनि मन काज,

103. आउल आशा चलि गेल, 104. जीवन दान तथा 105. अयन सानी- लघु कथा संग्रह।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.८.नवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- १९ म खण्ड



नवीन्द्र नारायण मिश्र

मातृभूमि (उपन्यास)- १६ म खण्ड

१६

ओहीनाथिसँ ओनवानिटोलक युवकसभ पाठशालाक सूनगाम लागि गेलाह। मुदा ककरो हूँ साहस नहि भेलैक जे जयन्तकँ सामा-सामी कोना मदति करबाक गप्प करैत। भोजनक व्यवस्था हुनु वेसानम चर्च भेल नहैक। मुदा हूँ बात सभकेँ बूझल नहैक जे जयन्त स मानलाह नहि। सभकेँ हूँ आश्चर्य लगैक जे आखिर ओ एतेक दिनसँ गामम छथि,ककरोसँ किछु लए नहि रहल छथि तखन जीवि कोना रहल छथि? खाइतो छथि की नहि?

"एहन न होअए जे ओ अन्न विना प्राण त्यागि दथि। तखन गँ सभकिछु धएल नहि जाएत।"-गोविंद बजलाह।

"मुदा कएल की जाए? ओ ककरोसँ कोना व्यक्तिगत समस्याक बाबम चर्चा नहि करैत छथि। ककरो ओहिठाम जएबाक गँ प्रश्ने नहि उठैत अछि।"-माधव बजलाह।

"किछु न किछु गँ हमरासभक कर्त्तव्य अछि कि नहि?"

"से तँ अछिए। मुदा तकर निराकरण कोना होएत? यदि हुनका से स्वीकार नहितनि तँ कालीकान्तक आग्रह किएक नहि मानि लितथि जाहिसँ हुनका संपूर्ण सुख-सुविधाक होइतनि।"

"से बात सही ठीक। तथापि हमसभ काल्हि भोर जा कए हुनकासँ प्रत्यक्ष गप्प किएक नहि कए ली?"

"एकदम सही कहलहुँ। काल्हि भोर हमसभ पाठशाला चलब। अपना भरि प्रयास करब, आगू भगवानक इच्छा।"

एहि तरह गोविंद आ माधव आपसमे चर्चा करैत छलाह। उतरबारि टोलक लोकसभक सहानुभूति जयन्तक संग एहुबात लए कए रहैक जे ओ नागबाबाक बड्ड प्रियपात्र छलाह आ नागबाबा तँ उतरबारिए टोलक छलाह। ओहिटोलक लोक सदिखन जानकीधाम जा कए हुनकासँ मार्गदर्शन लैत रहैत अछि। ओ बड़-कुबड़ गरीब-गुरबासभकेँ मदतिओ करैत छथिन।

उतरबरिआ टोलक बैसार आ ओहिमे लेल गेल एकतरफा निर्णयसभक जयन्तकेँ कोनो जानकारी नहि रहनि। भए सकैत अछि जे प्रात भोर गोविंद आ माधव एहिसभक चर्चा हुनकासँ करितथि। मुदा सुनओक प्रश्नकेँ टारब उचित नहि बुझलनि तँ गोविंद चारि गोटेकेँ ओही रातिसँ पठौनाइ शुरू कए देने रहथि। सुधाकर आ हुनकर लठैतसभ नहि सोचने हेताह जे एतेक जल्दी ई सभ भए जैतैक। तँ रातिक अन्हरिआ आ खराब मौसमक

भएबा लेल ओही राति अपन कार्यक्रमकँ आगु बढ़एबाक विचार कलनि।

रातिम मौसम बहुत खराब छल। रहि-रहि कऽ बिजलौका चमकि उठए। लगैत छल जे कारी उग्र बरखा शुरू भऽ जाएत। घटाटोप मघ सौंस आसमानम भरि गेल छल। एहन स्थानम माहौलम जयन्त एसगर ओहि पाठशालाक ढहल-ढनमानइत चारक नीचाम कहुना कऽ जान बँचबैत छलाह। एहना स्थितिम हुनकर संपूर्ण ध्यान ओहि शोधग्रंथ पर लागल रहैत छलनि। ओकर उपसंहार लिखि काजक इतिश्री करबाक छल।

ओहि राति संयोग एहन भेल जे ओ लघुशंका हेतु कनीक हटकी गेल छलाह। शोधग्रंथकँ सिरमा तरम राखि देर रहथिन। लठैतसभ तँ धयाएल रहब करए। मौका देखाहि ओहि पाठशालाम प्रवेश कलक आ जान-बजान शोधग्रंथकँ ताकए लागल। अन्हारम किछु देखाइत नहि छल। चारूकात ओसर हसोथि रहल छल। तब बिजलौका चमकल। ओरबानिटोलक रखबारसभ पाठशालासँ सटल गाछीम नुकाएल छल। बिजलौकाक प्रकाशम ओ सभ लठैत सभकँ देखब नहि कलक, चिह्निओ गेल। ओ बाबू! आब तँ देखएबला दृश्य भऽ गेल। चारूकातसँ चारूगोट पाठशालाम पैसल। पाठशालाम एकटा लठैत एमहर-ओमहर शोधग्रंथ तकबाम व्यस्त छल। ओकर एकटा संगी बाहर रखबारी करैत रहैक। तावतम लाठी बजरल -धमाक! धमाक! ओहि लठैतक बामा पैरपर

लाठी लगलैक । ओ ठामहि खसल । गाम जयन्त सेहो आबि गेलथि। बाहर ठाढ़ सुधाकरक लठैत चिचिआ रहल छल-

"बाप! बाप! दौड़ु जाउ औ गौंवा-घरुआसभ ।

लठैतसभक चिकरब-भोकरब सुनि कऽ टोलक लोकसभ जमा भऽ गेल । दुपहर रातिक समय छल। अन्हार गुज्ज। आसमान मेघसँ आच्छादित छल । बरखा शुरू भऽ गेल छल । एहन स्थितिमे बाप पाठशालामे की चाहैत आएल? ओकर छल की? एहन सवाल सभक मनमे घुमि रहल छल । उत्तरबारिटोलवला सभ कहैत जे सुधाकरक लठैतसभ चोरी करए आएल छलाह आ ओ सभ से उत्तरबारिटोलक रखबारक नाम लगबैत छल । एकर पाठशालाक पछबरिया देबालक बिचला साहुल खसि पड़लैक । बाबूकातसँ लोकसभ दौगल । कहुना कऽ ओकरा ठाढ़ कएल गेल ।

"हमरा नहि लगैत अछि जे एहिठाम कओ चोरी करए आएल होएत । एतए किछु आओर बात अछि।"-सुधाकर बजलाह।

"अहाँसभ अपन एकर नाटक परसान रहलहुँ । चिंताक कोनो बात नहि अछि ।"-जयन्त बजलाह ।

"एहि बातक गहिंराइ होएब बहुत जरूरी अछि जे आखिर कोन सभ एहन खराब मौसममे एकर नाटक करत की

करए आएल रहथि? तँए नहि हमरासभपर उलटि दाब मारि रहल छथि।"-उतरवारिटोलक रखवारसभ बजलाह।

"आब एतेक रातिमे ओही सभ विषयपर चर्चा करब उचित नहि। सभगोटे अपन-अपन घर जा कए विश्राम करू। काल्हि सभबातपर विचार कएल जैक।"-जयन्त बजलाह।

जयन्तक बात मानि लोकसभ हटि गेल। मुदा उतरवारिटोलक रखवारसभ लग-पासमे नुकाएल नहि गेलाह कारण ओ सभ जयन्तक सुरक्षा हेतु बहुत चिंतित रहथि।

-रवीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, वयस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: अरेर डीह, मातृक: सिम्रिआ धाढ़ी, वृति: भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्ष२०११ १.भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा),२. प्रसंगवश (निबंध), ३.स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्ष२०१८ ४. हसाद (कथा संग्रह) ५. नमस्तस्यै (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष२०१९ ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष२०२० १३.शंखनाद(उपन्यास)

१४.ॐ्ठ्रऽ थिक जीनन(संम्मनध)१ग.ढऽेग ऽवाल(उयन्यास); प्रकाशन नर्ष१२०२१ १६.या(थय(संम्मनध) ११.ऽम आवि नऽल छी(उयन्यास) १८.प्रलयक यनाग(उयन्यास); प्रकाशन नर्ष१२०२२ १९.वीगि (गल समय(उयन्यास) २०.प्रगिविम्ब(उयन्यास) २१.वदलि नऽल अछि सरगकिछ्ठ(उयन्यास) २२.नाष्ट्र मंदिन(उयन्यास) २३.संयाग(कथा संग्रऽ) २४.नावि नऽल छलि नसूधा(उयन्यास)।

अयन मंगद्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.९.डॉ किशन कारीगर- अकादमी पुरस्कार बला नाटक (हास्य कटाक्ष)



डॉ. किशन कारीगर

अकादमी पुरस्कार बला नाटक (हास्य कटाक्ष)

बाबा बतबताह बजैत रहथि जे कहैत छी ग ओहना कहुँ नाटक लिखैये जे गुमान चूर भेल नवतुरिया सन नाटक तालवेत नहिएस्. कारन्हि बूझलक गमलक किछु नै आ फुरफुरा जे डाकना सन बूझनुक आन काना गसन नै? हम कि ओकना सबहक गप मानन्हि लियअ् जे

बजु जागता बल यूनुस्खान रहलैक? हुनी सब गाम कोन किताब लिखि नहाल कए देलकै? मैथिली किताबक कोन प्रकाश गाउ बिक्री होअ लगलै?

आ सबटा ढलमाना सब अपना गाम अगिया बेताल रहल हो हो क नहुल जे आब साहित्य अकादमी म नव त्रिमूर्ती संयोजक बनलै त आब मैथिली साहित्य बला सब क नाबल यूनुस्खान बला नांगेउ रहट जौ आ नंगउजालैन सब त की कहियअ.

हम बाबा स पूछली हो बाबा रिंसन रिंसन की होली कोसी संग मिला पनसादी चढाउ देलकौ जे उगना बउ बउ कन नहुलौ? होलौ की स बालहो न जे बजु कनी हमना अनु बूझबै ग. हमन बात सून बाबा गमसाउल बाललकौ हो कानीगन गाना हनदम लाहठेल गय होस्ली ठहु? गामस हमन दहु जउल जा नहुल आ गाना मजाक बूझा नहुल ठहु? हम्म बाललीयै नै हो बाबा हमना मजाक न सूझ नहुलौ अच्छा गाना दहु जउ नहुलौ त उक लाटा पानी हुल बलपग चढा दबै गब त सबुन होगै. उगना सून बाबा हां हां क बजलौ हो कानीगन गहुं यप्रकान रहs की अगिया छौंउा सन बिचानै ठहु. हम्म कहलियै हो बाबा होलौ की स बालहो न कैमना सामन लाका अनु कनी बूझगै. बाबा बाललकै अच्छा पहिन उक झम गमाकुल खआबहु हुन कहै छियअ सबटा खनहो. हुन हम बाबा क खैनी चूना देली.

गमाकुल खा बाबा बाल लगलै हो की कहियअ ओली रागेसन पंता हनदम नंगउजालैन जंका कन हिनाहु. हनदम दमसी मानाहु जे

हमना अकादमी पुनस्कान भेट चुकल अछि. हमना सन वनिष्ठ साहित्यकान आन गसन क? हम कहलियै जे भागेसन गाहन लिखल किताव कत गाट दखलकह पढलकह स कहअ् ग कनी. अच्छा कान किताव लै पुनुस्कान दल गेलह? भागेसन हमना कहलक ज पन तनाव्ह म ज्ञनी आ कमंतल म पुनुस्कान कृति लल हमना साहित्य अकादमी पुनस्कान दल गेल. हमना हँसी स नहल नै गेल. हम पूछलियै जे भागेसन ओही कहअ् ग गाहन लिखल किताव कत गाट दखलकह पढलकह? ग भागेसन पंता कहैओहीत ज गै स हमना कान काज? ज्ञनी दख ललकै पुनुस्कान भेटि गेल आन की? कहअ् ग जागात वल पुनुस्कान भेटलह आ नंगतालैन भेल अगिया वगाली कनै छह. भागेसन वाजल यौ वावा अहाँ क ग साहित्य क जक्का नरि गिआन नै अछि. हम वजलौं हं गाना ग गकन गिआन छह ज नावल पुनुस्कान वला लाज लजा गेल. कवि सम्मलन मं ग गाना नाम लाखक लाख टिकट कटाओही छै कहलकै ज.

हम्म वावा स पूछली हा वावा कुछौ मैथिली भाषा साहित्य पन वालहा न. जगना सुन वावा हां हां कनैत वाल लगलौह हौ कानीगन की कहियअ् पुनुस्कान दुआय मैथिली वला सव निर्लज्ज पैगा भेल जा नहलै. अओही हौ मैथिली किताव दर्शक पाठक दखव किनव नै कनै छै गव कथी मुठा गिगमहा ज मैथिली साहित्यकान? ऊना सव अपना गिनाह लल वनिष्ठ साहित्यकान कथाकान कवि आ जकना सव क गिनाहक लाक छाओत आम दर्शक पाठक विहृव जनव नै कनै जाओ छै. वंदा क आ मैथिली भाजपूनी अकादमी नुपैया पन भेल कवि सम्मलन म जा नहाल हाओग नहगह. गहू म दर्शका स

𑒥𑒛𑓃𑒲 𑒏𑒚𑒱𑒢 𑒂 𑒑𑒜𑓃𑒳𑒂 𑒢𑒱𑒩𑒪𑒖𑓂𑒖𑒰 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒥𑒪 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒧𑒲 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒪𑓄 𑒢𑓀𑒑𑒙𑒣𑒰𑒪𑒲𑒢 𑒥𑒩𑒪 𑒒𑒳𑒩𑒰𑒯 𑒖𑒹 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒦𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪. 𑒖𑒐𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒢𑒱𑒩𑒪𑒖𑓂𑒖𑒰 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒔𑒼𑒛𑓃𑒲 𑒚𑒹𑒏𑒰 𑒧 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒧𑒲 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒥𑒪𑒰 𑒢𑒰𑓀𑒑𑒹𑒙 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒯𑒰𑒅?

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

२.१०.जगदीश प्रसाद मण्डलक ७ टा कथा- कथा-१ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

विदेहक लेखकक आमन्त्रित रचना आ अध्ययन आमन्त्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीजमे एखन धरि एहेँ पढ़लौं-

१. कामिनीक पाँच टा कविता आ अध्ययन मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

२. जगदानन्द झा "मनु"क "मारिक वासन"पर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_353

३. मुन्नी कामतक एकांकी "जिन्दगीक मोल" आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_354

ऐ शृंखलामे आगाँ समानान्तर धाराक किछु गणमान्य कथाकारसँ हुनका नजरिमे हुनकर अपन सर्वश्रेष्ठ ७-७ टा कथा आमन्त्रित कएल गेल अछि। कथाकार लोकनि छथि:-

१.कपिलेश्वर राउत

२.उमेश मण्डल

३.राम विलास साहु

४.राजदेव मण्डल
५.आचार्य रामानन्द मण्डल

६.नन्द विलास राय
७.जगदीश प्रसाद मण्डल
८.दुर्गानन्द मण्डल

ऐ अंकमे प्रस्तुत अछि जगदीश प्रसाद मण्डलक ५ टा कथा अध्ययन हमर समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि।- सम्पादक



जगदीश प्रसाद मण्डलक ५ टा कथा

कथा १

संबन्ध

तीस वर्ख पहिलुका जीवन जीवछ कक्काक बदैल गेलैन। ऐ गामक

किया-किया दखिया नहुला अछि आ वसी लाक नहियँ दख यव नहुल छैन। ज किया नहि दख यव नहुल छैन डा साख्रअना आहृन छैथ सद्य वाग नहियँ अछि। आँखिया छैथ आ दखव कनिग छैथ। कहुव ज ॐी गँ गौआँक वाग रुल ज किया दख यव नहुल छैन आ किया नहि दख यव नहुल छैन, मूदा जीवछ काका सद्य गँ अयन डाही गामम नहै छैथ, डा अयन की दख यव नहुला अछि?

जीवछ काका अयन दुनू गनहुक निवान गँ दखिय नहुला अछि आ गॐसँ संवनिग हाॐग गसना निवान मान 'निननिवान'कँ सद्य दख नहुला अछि। मान ॐी ज जीवछ कक्काक अयन खगी-वाउी जीनिका छैन डा युर्वनग छैन, गँ७ डाहुन दखनिहाना आ अयना व७ह किसान नुयम डाहिना दख नहुला अछि। दासन गनहुक ज गौआँ आ अयना निवान छैन गहुम डा व७ह सामाजिक नुय दख नहुला अछि, गँ७ वदलल सन दखेम आवि नहुल छैन। डा स्यष्ट दख नहुला अछि ज सामाजिक जीवन जॐ ढाँचागग चलि नहुल अछि गॐम सरुकँ किछु-न-किछु नक्का-टाकी, मग७ा-मंमट, मानि-यीटि आ कस-स्रोदानी रुड नहुल छैन, गेOाम जीवछ काका कस-स्रोदानीक कान वाग ज मानिया-यीटि, मग७ा-मंमट आ नक्का-टाकी ककनासँ नहि हाॐग दख नहुल छैथ। चाहुक दाकानयन चाहुक उधानी ल, गहुम किया उधानीक मग७ा कनेग गँ किया चाहुक गिनगी७कँ कम-वसी कनेग। गहिना कयउा दाकान हुअ कि नुन-गलक, सरुOाम ७क्क गगि। कम-वसी ज हुअ७ मूदा हाॐ७ सरुOाम। स जीवछ काकाकँ नहि हाॐ छैन। ७हुन वनहानिक नुय दख समाज दासन नजैनसँ जीवछ काकाकँ दखै छैन।

आव चलू ञ जीवछ काका अयन अयनाकँ निननिवानी नूयम कना दख यव नहला अछि।

गीस साल यूर्व अयना उ0ामक किसानक मनम धानणा वनल छलैन ञ कासी नहन आ यनिविजलीक उत्पादन हएन सरकिया गनमी मासक नागिम खता-खनिहाँन आ वासा-वासम लक्ष्मीक संग नमकैत समय विताएव, मुदा आइ की दख नहला अछि? ..जीवनक एहन दव-उनान गामक आना-आन किसान दखलैन आ जीवछ काका सहो दखलैन।

जखन-सफा दृष्टि किसान-दृष्टिसँ मिलल गँ अनका संकटम यड़ल किसानयन दृष्टि दवाक यनियास हएल। वीसमी सदीक अस्सी-नब्बक दशकम धून-सात गँ नहियँ मुदा सीमिग नूयम गाम-गामम वानिंगक लल नब्ब प्रशिशग मूल्यक सनकानी सहायगासँ यानिक जागनण हएल। खगीक लल यानिक मूल्य उाहन अछि जहन जीननक लल अछि। उयजा वढ़वैल खादक सहायगा आ वीआक सहायगाक संग ट्रैक्टर-ट्रीन ड्रीजिनवालिग मशीनक संग हस्कवालिग मशीन सहो गाम-गाम आएल। यएह न हएल हाथक हथियानम संचनण। जना-जना संचनण वढ़ग, गना-गना जीनन सहो वढ़ग। गाव नहि, सए यंचायगम गँ नहियँ मुदा किछु यंचायगम वकास्लानाकियाक सहयागसँ स्टट वानिंग सहो हएल। ञ विजलीवालिग अछि, मुदा विजलीक अभावम वालिग गँ नहि हएल मुदा किसानक वीच आशक प्रज्ज्वलन आना वसी, किए गँ मिथिलक रीगन दूनूक सृजन नहना। जहिना कासी नहन गहिना वनाहउग्री नूनथन आ शीशायानी हएव

करैत। पहिने अपन मिथिलामे एहन लोक छलाह जे पचास-पचास बीघाक नीक-नीक आमक कलम-गाछी रहैत छल। भगवानक दया आम सब होइत, कोना कि नहिंयो उपाय छल, बीमार समयमे ओकरा खाएक छै, नहि त अपन सठिकऽ समाप्त भऽ जाएत। तँए बरी-सँ-बरी लोककेँ आम सब होइत रहैत छल। गाछी-कलमवला सँ बढ़ कतए त अम्मट बनैत, मुदा ओहो कतऽ बनैत? पहिने अम्मट कि अखनुका खस्सी, मुर्गीक मांस छी जे पाँच किलाक पचास एकटा साठामीनक (गोलीसँ) हमाल भऽ जाएत। आकि हजार-पचास साए रसगुल्ला-लालमोहन छी जे एकटा पथारमे पानि बनि जाएत। अम्मट त अम्मट छी, पहिने आमक। अढ़ाइ साए ग्रामसँ सँ पाव साए ग्राम चढ़बै त तीन दिन ओछाइन धरब करत। खाएत जे स..।

किसानक एहन समस्या आइये नहि, ओना आइ बदलल रहैत अछि, सब दिनसँ रहल अछि। जहिसँ साल-साल किसानक जिनगीमे उतार-चढ़ाव होइत आबि रहल छैन। कोनो साल अधिक बरखा भेल जहिसँ पानिक नोकसान त कोनो साल कम भेल आकि बरख नहि भेल रौदी भेल जहिसँ फसलक पैदावार नहि भेल। रौदियाक एहन-एहन रूप रहब कएल अछि जकरा बरहबर्खा कहै छथि। सबकेँ बूझल अछिए जे बारह बर्खक रौदीक पछाइत सीताक जन्म भेल रहैन। तँए कहब जे किसानक मनानुकूल साल कहियो नहि भेल रहत बात नहियेँ अछि। रहत कोनो-कोनो साल भव कएल अछि। ओना, किसानक संग अनेको समस्या छैन।

किसानी जीवनक मूल आधार भूमि आ पानि छी। गाम-गामक

वृनावट सहा भिन्न-भिन्न नुयक अछिअ, गहूम अयना सवहक मान मिथिलांचलक, ज धान-धून ऊलाका छीहा। मात्र मधुवनी जिलाम दु दर्जनसँ वसी नदी अछि ज गीनू नंगक अछि। काना-काना नदी साला हनि, मान वानहा मास चलाऊमानक अछि गँ काना-काना छअ् मास, आ काना-काना वालुक वूर्जा वनि सहा वमकैग नहैअ। खाअन नदी-धानक वर्च अखन नहि।

गामक वृनावटम ऊयन-निम्राँ मान नीच-ऊँच नुय अछिअ। जहिना घन वनवेल ऊँच हुमिक जनुनग हाऊअ गहिना याखेन-याँखेनक खगगा सहा अछिअ। मुदा स अखन नहि, अखन अगव ज गाम-गामक अक गिहाऊ-चौंथाऊ डाहन जमीन अछि जकना चौनी कहै छिउ, जकन उयजक काना हमास नऊ अछि। डाना, आइक यनिवशम अनका साधन वनियँ गेल अछि। मुदा स सैद्धान्तिक नुयम अछि वनहानिकम नहि अछि।

उन्नैस साअ साOिक दशकसँ कासी नहन आ यनिविजलीक लल ऊOामक किसान उO कS OIG हला। स्वगंत्रा आन्दालनसँ हुउल सम्पाधानी सह सहा छलाह। ऊमानदानीक जीवन वनन ऊमानदान छलाह। ऊमानदानीसँ मिथिलांचलकँ दुख कासी नदीसँ नहन लल आ धानक उयज्ञनकँ नाकेल सहा कासिया धानक वगलम आ कमला धानक वगलम वाह्र-छहन वनल। कमला छहनम गँ डाग जन सहयाग नहि मुदा कासी वाह्र वनवेम हनयुन जनसहयाग हटल। नाजेद्र वावू सन नाष्ट्रयगि आ कृष्णवावू सन मुख्यमंत्री अयना माथयन माटिक यथिया उOI वाह्र वनौलेन।

कोसी-कमलाक बान्ह-छहरक बनला पछातिएँ राजनीतिक खेल शुरू भेल। सालक-साल कोसिया बान्ह आ कमला छहरक टूटए लगल। बाढ़िक घनल यानि गामक-गामकेँ उजारए लगबए लगल। गाम-गामक पोखरि-इनार, गाछी-कलम, बान्ह-सड़क, घर-दुआरि नष्ट होअए लगल। गाम-गामक रोजगार मात्र गिनतीक रोजगार, कमी आएल। बेरोजगारी बढ़ल। मिथिलांचलक भूमि छोड़ि, जेठाम बारह मासक छओटा रितु आ तीनटा मौसम-जाड़, गर्मी, बरसात होइए अछि। जेँ जीव-जन्तुसँ लऽ कऽ गाछ-बिरीछ होइए मनुक्ख धरिक बाढ़ि एगए अछिए। आन देश जकाँ नै मिथिला नहि अछि, जेठाम एक दर्जन बच्चा पैदा करितहि राजमाता थिकीह। पुरस्कृत होइ छथि, जेठाम मिथिला नै मिथिला छी। जेठाम दर्जन भेने बच्चा नै लुल्हिया-लंगड़ीकेँ होइए ओकरा सुनवगन नै सहज सुनवगन छथि। जँ माए-बाप सुनवगन नरेत नै बाल-बच्चा लुल्ह-नाँगर किए हएत।

ओना, अपन जेठाम-टाक नहि, मात्र मिथिलांचलटाक नहि छयना-राजपूत एकक श्रमिक, खेतिहर श्रमिक, नेपालसँ लऽ कऽ आसाम, बंगाल, बंगला देश लगा, एक पटुआ काटए आ धान रोपैयाल आ काटैयाल जाइ छला, छओ मास बाहर खटि परिवारक गुजर चलबै छला। देशोक स्थिति अन्नक मामलामे बड़ड छल जे आन-आन देशसँ अन्न कर्ज लऽ लोकक पेट भरैल जाइ छला। पेटक समस्या भयंकर नहि मदा भयंकर छला। ओना, आजुक नर्जीनियम जँ देखब नै देशक खाससँ तीन अनब टन अन्न उपजौल जा सकैए। जेठाम पचीस करोड़ टन उपजयन अँटकल अछि। ओना, एगयन अँटकन मात्र पचीस करोड़ टनयन अँटकन प्रति-वर्षी देस किलो

अन्न महीनाम उपलब्ध रहैत गेल अछि। मुदा ई स्पष्ट अछि जे ई प्रयास करैत रहल उपज हेतु ई बीस किलो प्रति-व्यक्ति महीनाक हिसाबे अन्न उपलब्ध रहि सकैत।

सबसँ दुखद अछि जे गामक जीवनसँ लऽ कऽ शहरक जीवन धरि अछि जे गरीब लोक बेसी अन्न खाइत छथि आ अमीर लोक कम। तखन ई मिथिलांचलक लोक बहुत रास मुदा पाँच सेर ई खाइत छथि ई बेसी करा सकैत? सेहो पहिने कि कोनो नाय अछि, कौन-कौन पहिने छव-छव खाक बढ़ाबनी सेहो रहैत अछि।

खाससँ खाली राजन-टाक पैदावार नहि रहैत। आइसँ बीस साल पूर्व, जखन अपना देशक पहुआउल अर्थव्यवस्था छल, तखन खाक उपजक रोगीदारी पैंतालीस प्रतिशत (45%) कल-कारखानाक छल आ आन-आन उद्यक मुदा खान-खनीजक पचपन प्रतिशत छल। मुदा आजुक ई उलट स्थिति बनियँ गेल अछि जे जकरा गोबनछया करै छथि, जइम धिया-पूताकँ हिनै तकसँ पनरहज करबे छलौं से अखन राजन नहि महाराजनक विश्वासक शृंखीम अछि। खाउन जे अछि जाउ अछि तइसँ जीवछ काकाकँ कान सालव छैन, सालव उगव छैन जे जहिना साठि वर्ख जीवनक समय हुनक बनद जकाँ कहुआ 01८ कन बीतलैन तहिना शेष जीवन करा बीतौन, वस तावा।

दुसल बात ई अछि जे सिकहुन जखन मृत्युसजियायन जाइक अवस्थाम पहुँचला, मुदा हुनका जखन बुझि पड़लैन जे आब दुनियाँ नहि धाउत तखन सहयोगी सबकेँ कहलखिन- 'जखन असमसान

जाइत चचरीपर चढब तँ हमर दुनू हाथ खालि चचरीसँ निच्चाँमे लटका दिहऽ, जइसँ देखनिहार बुझता जे दुनियाँपर शासन करैवलाक सपना कतए गेल। ने किया दुनियाँमे किछु लऽ कऽ आएल अछि आ ने लऽ कऽ जाएत..।'

पश्चिमी देशक सिकन्दर छला तँए मरैत म मोन अन्तिम समयमे एली बात बुझलनि, मुदा अपना सभ तँ मिथिलांचलक ने रहलिऐ, पैछला पुरुखा कहाइय गेल छथि ने जे भाय भूत-भविस दुनू भूसि छी, वर्तमान सत्य छी। तँए वर्तमानक क्षण-क्षण पल-पलकेँ उपभोग-उपभोग पलेक-पलेक आनन्दित भऽ आनन्दक जीवन जीबैत चलिहऽ। यएह दुनियाँक रहस्य छी आ जिनगीक धर्म। जखन कर्ममय जीवन धर्ममय धऽ चलत तखन ने त्यागमय यज्ञमय बनि चलत। आ तखन ने मर्तभूमिक असफल उड़ान रहल।

जीवछ कक्काक बात नीक छैन्हि जे जहिना जीवनमे कहियो ककरोसँ एक पाइ मदैतिक सूदपर नहि लेलनि तहिना बेटी नहि रहल दाना-देहना देबए नहि पड़लनि। शब्दक तँ खेल छी, 'दान-दहेज'केँ 'दान-देहना' बना दियौ, कानून की करत।

एक तँ आहुना जीवछ कक्काक संस्कारमे समाजक प्रति विरोध छैन्हि जे कते निर्लज्ज समाज बनि गेल अछि जे माता-पिता अपन पेट आ जीवन काटि कँ बेटीकेँ सम्मानपूर्ण सन्तान बुझि, बीस-पचीस लाख रुपैआ खर्च कनि टाँकनी शिक्षा दिअबै छथि, तैपर विआहमे पचास लाख दहेजमे खर्च हुअए, एतेह तँ निर्लज्ज समाज छी। जिनका एतबा बुझैक होश नहि छैन जे पुत्रक कमाइ अपना घर औत नहि कि

जन्मदायक..!

मंचपर प्रवचन दिन-राति होइत जे 'दहेज पाप छी', 'दहेज अपराध छी' मुदा एहेन ने कानून अछि आ ने सामाजिक बन्धन। किछु दिन पूर्व धरि, समाजमे बेटाक प्रति जे दहेज लैत छला ओ समाजक बीच मूँह खसा कऽ चलै छला मुदा आइ ओ ओहिना मूँह उठा कऽ चलि रहला अछि जेना पैघ-सँ-पैघ पुण्य कएला-पछाति पुण्यकर्मी चलै छैथ। देखए छी जे साफा-साफी करा पाप धर्म बनैत आ धर्म करा पाप बनैत। विचारैक प्रश्न अछि जे दहेजसँ समाजमे कोन-कोन एहेन बाधा जीवनमे उपस्थित भऽ रहल अछि। जीवन अधिक-सँ-अधिक सुगम ढंगसँ चलए, एतबे ने सबहक कामना अछि।

जीवछ काकाकेँ दुटा बेटा छैन। अपन पितृ दायित्व बूझि दुनू बेटाकेँ अपना शक्तिक अनुकूल पालन केलैन। मान छी जे आन माए-बाप जकाँ जीवछ काका सेहो दुनू बेटाकेँ पाललैन, जइसँ पाँच-पाँच बर्खक समय दुनू देख ललकैन। मान जन्मसँ पाँच बर्खक अवस्था धरि। ओना, दुनू सन्तानक बीच जन्मक दूरी पाँच बर्ख छैन, मुदा सेहो एकरंगाह केलैन। आन माए-बाप जकाँ पहिल बेटा- सुरेन्द्रकेँ गामक स्कूलमे नाओं लिखौलैन।

बैसानीमे असगर सुरेन्द्र रहैत माए-बापक पूर्ण सिनेहसँ सिनेहिल हृदय सुरेन्द्रपर रहलैन। सुरेन्द्र पाँच बर्खक भेल तखन सुशीलक जन्म भेल। ओना, बैसानीमे सुरेन्द्र लगा सुशीलकेँ माता-पिताक संग जतए होइक सिनेह सेहो भेटए लगलैन। माता-पिता हाथि ना

यनिनानक किया आन आकि वच्चा-वच्चाक वीच सहा अयन प्रेम-वन्धन अछिए।

जन्मकालसँ मान माऊँयक गर्भसँ सन्तान जन्मक समय धरि जहिना माए गहिना वच्चा असीम गतुम नहिं छैथ। दुखक उाहन नुय दुनुयन नहव कनैए जकना असीम यीडा सहा कहिंग छैडा। जऊँ दशक वा यनिनानक एहन रयंकन स्थिति नहैए, मान अन्न वान माऊँक शनीन गहस-नहस रल नहि छैन, गेOाम गँ वच्चाक जन्मक यीडाक संग घनम अन्नक अरानक दुखसँ दुखि मन आना यीडि नहिं छैन। गेOाम ऊँ जच्चा-वच्चाक मृत्युदन दशक मृत्युदनसँ ऊयन नहा गँ ऊम आश्चर्य की रल। स नहव कऊल अछि। उाना, आइक यनिनशम संवनध हाऊँग किछु सुधान रव कऊल अछि। मुदा गहुम गँ खाडीनुमा अछिए। ज कहन यनिनानक मृत्यु-दनक सीमा कहन अछि।

संयाग कहियौ आकि जीवछ कक्काक यनिनानक स्थितिक संग दुनु यनानीक धर्म-कर्म, जहिना जO सन्तान- सुरेन्द्रकँ यालैग-यासैग दस वर्खक वनौलैन गहिना छाट सन्तान- सुशीलक सना सहा शुनु कलैन। उाना, ऊँहा कहिय सकै छी ज आन जकाँ गिधकिन्नैन सन्तान सहा नहियँ रलैन। गिधकिन्नैन रल, साल-साल सहा आ एकसंग एकसँ अधिक वच्चाक जन्म सहा।

जहिना जीवछ काका वच्चाक प्रति अयन कर्मक धानकँ सन्तानान्मुखी वना यनिनानम OाC छला गहिना श्यामा सहा OाC नहली। उाना, दुनु वकनीक वीच, मान जीवछ काका आ श्यामा काकीक वीच

वैवाहिक सम्बन्ध जहिया भेलैन तहिया दुनू परानी विचारि कऽ सहमत भऽ गेलैथ जे मनुक्ख मात्र अन्न-पानि, माल-जाल आकि गाछ-विरीछ-टाक सृजनकर्त्ता नहि, मनुक्खक सृजनकर्त्ता सेहो छथिए, तँए अपना दुनू परानीक जीवनक पहिल संकल्प इहए भेल जे बच्चाकेँ जन्म-सँ-ज्ञान अवस्थामे पहुँचा स्वतंत्र रूपमे छोड़ि दियौ..। ओना, जहिना जीवन जाल छी तहिना महाजाल सेहो छीहे, तँए जंजाल महाजाल रूपमे अछिए।

कृष्ण युधिष्ठिर आ दुर्योधनकेँ कहलखिन जे द्वारकामे नीक आदमी कते अछि आ अधला आदमी कते अछि, एकर सूची बना कऽ दुनू गोरे दिअ।

अपन-अपन नजरिये दुनू गोरे नीक-अधलाक सूची बनबए द्वारका नगरमे प्रवेश केलाह। एक दिससँ पहियबे दुनू गोरे अलग भऽ सूची तैयार करए लगला।

सूची तैयार केला-पछाऽऽत युधिष्ठिर आ दुर्योधन, दुनू गोरे कृष्ण लग पहुँचला। दुनू अपन-अपन सूची प्रस्तुत केलैन। दुनू सूचीमे किछु नहि लिखल देख कृष्ण दुर्योधनकेँ पुछलैन। दुर्योधन जवाब देलकैन-

"महाराज..! एक्कोबेर नहि, सात बेर सौंसे नगर घूमि कऽ मुआऽऽना केलौं मुदा एकोटा नीक लोक नहि भेटल, सूची ककर बनेबौं, तँए सूचीपत्र खाली अछि।"

दुर्योधनक तर्क सूनी गजनी जकाँ कहियौ आकि पनबा-पौनकी जकाँ

कृष्ण अपन पेटक साँस पेटमे घोंटलैन। बजला किछु नहि। मनमे हुरलैन लगले हुर युधिष्ठिरकेँ पुछलखिन। युधिष्ठिर जवाब दैत कहलकैन-

"महाराज, हमरा रएह समस्या छल। सात वनकेँ कहए जे सौंस द्वारका नगर हम रओ बन घूमि-घूमि कऽ एक-एक बस्ती आ एक-एक परिवारक जाँच-पड़ताल केलौं मुदा एकोटा अधला आदमी नहि भेटल। तँए की लिखितौं, सूची पत्र खाली अछि।"

आब कहब जे दुनूमे किनकर नियारि सही छलैन आ किनकर गलत छलैन? ने किनको सही छलैन आ ने किनको गलत छलैन। अपन-अपन नजरियें दुनूक सहियो आ गलतियो तँ छलैहे। यएह छी दृष्टि। कहैकाल तँ सभ कहै छिऐ दृष्टिहीन। मुदा हीन आ श्रेष्ठ दृष्टि की छल से राँजपन चढ़ब ने करैए।

बीस बर्ख पूर्वे-पूर्वे सुरेन्द्र अपन जीवनक एक सीढ़ी पार कऽ गेला। मात्र [illegible] जे मैट्रिक पासक शिक्षा ग्रहण केने पारिवारिक रूपमे शादी-सुदा सेहो भऽ गेला। जीवनो तँ जीवन छी, जहिना पहाड़, समुद्रसँ धार फूटि निकलैए तहिना मनुक्खोमे होइत अछि। धार रूपमे संचारित होइत जीवन सेहो आगू मुहेँ प्रवाहित होइत अछि।

सुरेन्द्रकेँ पारिवारिक क्रिया देख जहिना एक दिस जीवछ काका आर्थिक बास कमेने देखलैन तहिना अपन जीवनक राजग्राहीक रूप सेहो देखलैन जइसँ मनमे तृष्णा जगलैन। मुदा पारिवारिक गतिक

ओ मोन अछि तइमे कमी नहि भेलैन। नइ होइक कारण भेलैन ओ एक दिस सुशीलक जीवन निर्माण पछुआएल छलैन आ दोसर अपना जीवन तँ एक खाधि टपिय रहल छलैन जइसँ दोसर जीवनक निर्माण सेहो करब छलैन।

ओना, एखन तकक जीवनानुभवमे जीवछ काका अपन तंत्र-मंत्रकेँ मजगूत करैत एत मानियेँ कऽ बुझि गेल छला जे मनुक्खक जीवन अमूल्य सम्पदा छी, एकर कोनो मूल्य नहि छै। तेँ मूल्यहीन जीवन बना जीब लेब सहसँ पैघ भेल। जीवछ काका नीक जकाँ बुझि रहला अछि, जे जहिना जीवन अकाशोन्मुख सात सीढ़ी अछि तहिना पातालोन्मुख सेहो अछिए। अहीक बीच, मानि चौदहो भुवनक बीच जीवनक संचरण होइत चलैए।

मनुष्यक जीवनक पाप रूप कहियौ आकि पापी रूप, ओ शरीरधारी मनुक्खराकेँ भेट सकैए। सत-चित-आनन्द जहिना कहै छथि, तइमे भगवानो छँटि जाइ छथि। तेँ एहना सन मनुक्ख बनेल ललाइ छथि।

एखन जीवछ कक्काक उम्र साठि वर्खक छैन। मुदा जखन ओ पचास वर्खक भेला तखन परिवारक जिम्मेदारीसँ अपनाकेँ मुक्त कऽ लेलैन। मुदा ई जे दुनू बेटाक अपन दायित्व बनै छैन जे अपन-अपन सखा-सन्तानकेँ अपना रूपमे धियान करैथ। तेँ जीवछ काका आश्वस्त भऽ गेला जे अगिला पीढ़ीक भारसँ मुक्त भेलौं, मुदा विचार-विनिमय करबाक दायित्व तँ अछिए। कियो अपन करए वा नहि करए ई जिम्मा नइ रहल, मुदा जखन पारिवारिक जीवन अछि तखन जस-

अजसक गँ रागी वनव कनव।

उना, आइक ज यनिवश वनि नरुल अछि उऽऽम अगीनक प्रति दृष्टिहीनता आ रनिश्वक प्रति दृष्टिपूर्णता आविय नरुल अछि। मान ऽऽी ज पैछला पीढी माता-पिता, दादा-दादीक प्रति जहिना नव पीढीक दृष्टिम दायहीनता जलैन अछि तहिना अपन वाल-वच्चाक प्रति पूर्णता सहा जव कलैन अछि। ऽऽी दीगन रल ज श्रमशीलता श्रमहीनता दिस वढि (गन सुविधारागी जीननक विकास गजीसँ रऽ नरुल अछि, मूदा जकना शुरु कना करुवै?

प्रज्ञावलित हाऽऽग शक्ति उँ आगुक दिसक हाऽऽग गखन न, स गँ उारुन प्रज्ञावलन गैयान रऽ नरुल अछि ज ऽऽीधनक स्नमुय वनि नरुल अछि.।

साO वर्ख टयला यछाऽऽग जीवछ काका अपन जीननक निनाट नुय दखवैग सूरज्ञकँ कहलैन-

"वौआ, यजरु अपन जीनन छी।"

उ नवनायन अपन मंगव editorial.staff.videha@gmail.comयन यOाउ।

२.११.जगदीश प्रसाद मण्डलक ७ टा कथा- कथा-२ जऽऽयन सम्पादकीय समीजा अंग्रजीम सम्पादकीय पृष्ठ यन

विदेहक लेखकक आमंत्रित रचना आ अध्ययन आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीज म अखन धरि अहाँ पढ़लौं-

१. कामिनीक पांच टा कविता आ अध्ययन मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

२. जगदानन्द झा "मनु"क "माटिक वासन"पर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_353

३. मुन्नी कामतक एकांकी "जिन्दगीक मोल" आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_354

ऐ शृंखलाम आगाँ समानान्तर धाराक किछु गण्यमान्य कथाकारसँ हुनका नजरिम हुनकर अपन सर्वश्रेष्ठ ५-५ टा कथा आमंत्रित कएल गेल अछि। कथाकार लोकनि छथि:-

१.कपिलेश्वर राउत

२.उमेश मण्डल

३.राम विलास साहु

४.राजदेव मण्डल

५.आचार्य रामानन्द मण्डल

६.नन्द विलास राय

७.जगदीश प्रसाद मण्डल

८.दुर्गानन्द मण्डल

ऐ अंकमे प्रस्तुत अछि जगदीश प्रसाद मण्डलक ३ टा कथा अध्ययन हेतु समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि। - सम्पादक



जगदीश प्रसाद मण्डलक ३ टा कथा

कथा २

रनि मन काज

शासनतंत्रक सूत्र-नीतिसँ जुड़िला जीवन उठि-खसैत ठीक नहिना गियानचनकेँ अपन जिनगी देख मन खसए-उठए लगलैन।! मन

कहलकैन दुनियाँकेँ तखन ने जानि पाएब जखन अकास-सँ-पताल आ पताल-सँ-अकास देखैक अपन आँखिमे औत। मुदा से काज पैघक आइयी ब्रॉयसँ होइत औत। ओ औत जखन जिनगीकेँ खन्तीसँ, ओहिठाम कवीन बाबाक खन्ती नहि बुझब जे जगन्नाथमे समुद्रक सीमापर जा कऽ खँतियौलैन, खुनि कऽ खन्ती बना खतियाएब, तखन ने खत-पथानक खतियौन जकाँ जीवनाक खतिआन बनत। ओना, सरकेँ बुझल अछिए जे चौबीस घन्टाक बीतने दिन-राति होइए, मुदा दिनमे दिन कहने हएत आ रातिमे राति कहने हएत, पएह देख पएब ने हएत दुनियाँमे अपनाकेँ देख पएब.!

दिनमे दिन आ रातिमे राति की हएत? रातिक बीच एकटा राति ओहन अछि जे पूर्णिमाक चानसँ जगमगाइए आ दोसर राति की एहन नहि अछि जइमे इजोरिया-इजोतक दरसो ने रहैए आ अमावस्याक अन्हारक अन्हार छाउन रहैए? सेहो गोँ अछिए.! मुदा दुनूमे जहिना अन्हार अछि तहिना इजोत नहि अछि, से कहना नहि कहल जाएत। हँ, एते देखमे जरूर अबैए जे पूर्णिमाक एकटा चान अन्हारकेँ तँसने रहैए आ दोसर अमावस्याक अन्हारकेँ लाखो-करोड़ तरेगन तँसैल पनियासने रहैए। खाएन जे रहैए ओ प्रकृतिक खेल छी, मुदा जीवनक बीजक गोँ से नहि छी, ओकरो गोँ अपन प्रकृति होइए जे अपन प्रकृतितत नूपमे चलैत आबि रहल अछि।

एकाएक गियानचनक मन ओइ सीमापर पहुँच गेलैन जेठाम वनमानुख अपन दिन-रातिकेँ जाखे-तौलैए। एक सीमा पनक दृश्य

देखल स्नानबला पुल-पुलिसकेँ पराइक दुनू पलायन राखि वर्तमानक तृष्णा पकड़ि राखए लगला कि एक-दू एकटा बिसरल बात मोन पड़लैन। मोन पड़लैन, जहिना रामायण-महाभारत वा कवीरक बीजकक एक-एक पाँति एक-एक शब्दकेँ भिन्न-भिन्न रूपमे विराजित करैत किया अपन जीवनक पाँतीकेँ पाँतियबैत, तहिना अपना किछु न पाँतियाबी।

ओना, गियानबनक अखनुक जीवन चारादिक रूपमे भ गेलैन अछि, जहिसँ मनमे खिन्नता सदा अपन जगह बना रहल छैन, मुदा उपाइये की? उपाय तँ ओतेटा अछि जेतेटा जीवन अछि। जेतेटा जीवन नहि रहत तेतेटा तँ करता अट्टालिका किछु न बनैत रहै, मुदा ओ सुनादि रूपमे जाइत।

मानि लिअ, अहाँ दिल्लीमे वा मुम्बइमे चाकरी वा व्यापार करै छी जइसँ नीक कमान कमाइ छी, मुदा अखन धनिक जे अपना सभक ग्रामीण परिवारक इतिहास रहल, मान आइसँ बीस-तीस बरख पूर्वक, ओना तइसँ पहिनौंसँ गामक लोक सभ दिल्ली-मुम्बइक अट्टालिका देख नन छला आ पाइ कमला पछाइत ओहा ओही अट्टालिकाक प्रभावमे अपना नइँक घर शहरमे बनौलैन आ गामक जे अपन पूर्व-जीवन छलैन, मान शहर अबैसँ पूर्वक, ओ तँ पछुड़ि न रहलकैन जे गाममे पाँचो प्रतिशत परिवारसँ कम परिवारक घराड़ीपर पजेबाक चाइँ लल गेल अछि। गामक अतीतक दृश्य पछुड़ि न छल जे आइक परिवारसँ बड़का दुर छला। गामक जे पूर्व सिनेह छलैन तइ अनुकूल परदेशी भाय गाममे नइँक घर बना

लऽलेन। देखिय रहल छी जे एक दिस मन्ना इनक जनुना अछि गँ दोसर दिस ठनक-ठन लाक बैसल-बैसल समय काटि रहल अछि। एक दिस स्कूल-कौलजमे शिक्षक नहि अछि मुदा शिक्षा दोसर दिस यतीआक निजत्व नीक रूऽ रहल अछि।

अपन बहेग मनकेँ गियानचन छोड़ि कहि वाड़्स कऽ चाकलेन जे कवीन बाबा बिनु ठन्डी-यलआक गमाज्ञयन दुनियाँकेँ जाखि लऽलेन आ अपना बुग अपना जीवनकेँ गौलल नहि रहाग..! ..यहाउ मठनाक यानि जकाँ गियानचनक मन यहाउयन सँ उगलेन। उगैना जहिना मठनाक महनवकेँ याथनक काना टूकअ यहाउयन सँ खसि चाकिकऽ मूँह घूमा दछ्छ गहिना गियानचनक मूँह घूमि गेलेन। मुदा जीवन गँ जीवन छी..! थर्मामीटनक याना जकाँ जीवनकेँ हाथसँ यकअव कठिन अछिए। लीलाक संग जहिना नासलीला अछि गहिना न कदमलीला सहो अछिए..!

विचित्र स्थितिक बीच गियानचन अपना मनकेँ थीन कनेक काशिश कनए लगला मुदा..। मुदा छोड़ि जे अखन गक गियानचन एगव बूझै छला जे समाजमे बटा ना यगिक मृत्युक यछाड़ग जहिना माए ना घननीकेँ, समाजक दाछ-माछ यएह न अमीनवाद देग कहै छैथ जे नाजा-दैव अहिना हाछ्ए, गँए मनकेँ थीन कनू। एलँ अमीनवादक मान अर्थ अपन बूझैथ ना नहि। मनकेँ थीन कनव वाल-बाधक खल नछ न छी, उगैम महानाजनक प्रह्लादक बाग नहि बूझव जे बालयनमे मनकेँ थीन कऽ लऽलेन। उगैम गियानचनक बाग चलि रहल अछि।

जहिना जीवनक खेल असान अछि तहिना कठिन सेहो अछिए। तहुमे मनक खेलकेँ एकतरे तँ आरो कठिन अछि। सभ जनैत छी जे ई संसारमे दुखसँ जीवन शुरू होइए आ अन्तो साँझ जकाँ मनक धीरता होइत जाइए। दुनियाँ तँ दू भागमे बँटाएल अछिए। एक भाग भेल दुखक दुनियाँ आ दोसर भाग भेल सुखक दुनियाँ। कबीर बाबा सेहो ने कहने छथि जे दू पाटन के बीच मे, बाँकी बचे न कोइ। खाएर कबीर बाबाक अपन दिन छेलैन आ अपन दुनियाँ छेलैन मुदा गियानचनक तँ से नहि छैन। जे छैन सेहो ने देखैत। एहेन ने देखैत जे जहिना दुखक ठाम मन थरथरा अधीर भेल जाइए, तहिना सुखक जे मन होइए डाहुमे घब-घबी लेब लगैए। डाल आकि अकिंचन जकाँ पाबि आ हुलासमे कब-कबी आबिए जाइए जइसँ मन थिर होइत-होइत असथिर भेल जाइए। एहेन तँ छी मन, जे अपन तीन तरहक खाना बनौने अछि, सुखक मन, दुखक मन आ दुनूक बीचक सु-दुखक मन।

एकाएक गियानचनक मनक किछु कुहेस छँटलैन। छँटिते दुनियेँ जकाँ अपन जीवनकेँ ध्रुवीकरण केलैन। जहिना भूगोलक भागमे उत्तरी ध्रुव आ दक्षिणी ध्रुव अछि, जेठाम छअ मासक दिन आ छअ मासक राति होइए, तहिना ने जीवनमे अज्ञान-ज्ञान दुनू अछि। जेठाम छअ मासक राति रहैत तेठाम कि अखुनका जकाँ लोक बिजलीक इजोतमे रातिकेँ दिन बना जीवन लीला करैत आकि कुम्भकरन्न जकाँ सुतल करैत।

दुनियाँक ध्रुवीकरण नहि, अपन जीवनक ध्रुवीकरण करैत नै निश्चयाति

कलेय-कलेय कहलैन, 'आध जनम हम नीन गमाओल.!' ..एक तँ आधा जीवन ओहिना चलि जाइए। बाँकी जे बँचल आधा अछि तइमे अपन शरीर क्रियाक संग जीवन-धर्मक क्रिया तँ करब अछि, तइल समाइय कत बँचैए.!

जिनगीक खलसँ, मान परशानीसँ गियानचनक मन भीतर-भीतर अकछए लगलैन। ओना ई नहि बूझब जे, जे दुनियाँ प्रिय धान बहबैक शक्ति अपना परम रखन अछि, तइ दुनियाँसँ लोक थोड़ दिनक हूअ चाहैए। ओ तँ महाजन जखन सूदक-सूद आ मूर-मूरक हिसाबक बनहान जीवनमे आबि ब्यक्त करैए तखन ने ए दुनियाँसँ लोककेँ अकच्छ लगैए। जइसँ मूसक दवाइ खा वा गरदैनमे फँसरी लगा। दुनियाँसँ अपनाकेँ मेटबैत अछि। कहब जे मूसक दवाइ तँ पुरान भऽ गेल, तहिना फँसरी लगाएब सेहो पुरान भऽ गेल, आब तँ एहन बिजली आबि गेल अछि जे तुलसी बाबाक रामायणिक पाँती, मरैकाल बहुत भारी दूख होइए, मान प्राणान्त होइकालक दूख, सेहो बदलैल कहब करै छैन। भाय! जीवन छी ना। बनमे जखन सीताक हरण भऽ गेलैन तखन राम जहिना गाछ-बिरीछकेँ पूछि-पूछि सीताक भाँज लगबए चाहलैन तहिना ने जीवनो छी। मृत्यु अमृतकेँ पूछि-पूछि पूछियाबए पड़ैए। सघन जीवनक बनमे जहिना जीवनकेँ तकैत निश्वाँस ओगरए पड़ैए, मान मूल लग जाए पड़ैए, नइ तँ पतालक पानि जकाँ ओपनका-नीचला लेयरक पानिक गुण बूझब ने करब, तहिना ने जीवनोक ताक ताकए पड़ैए। अयोध्यासँ निकलला पछाति, मान जखन राम पँचवटी पहुँचला तखन, रामकेँ ढेना लोकसँ भेँट भेलैन, मुदा ओइ

ढंगसँ किछु गलल-गुथल न मित्र बनलैन, बाँकी तँ ओहिना न बनस घुमैत नहि गेला। तहिना न जीवना अछि।

हाट-बाजार वा मेला-ठेलास लाखो लाखक भीड़ भइत मुदा तइसँ सन-सम्बन्धी वा हित-मीतक संख्या कम नहित अछि, ओही कमक सम्बन्ध न जीवनक धार टपबैत। ठीकस हम ई नहि कहै छी जे आइक ओहन परिवेश बनि गेल अछि जइसँ न उपार्जनक ठेकान अछि आ न उपयोगक। हुनु बठेकान जकाँ भऽ गेल अछि। जीवनक जे आधार अछि ओकरा जाब नहि ठेकाएब ताब जीवनकेँ ठाढ़ करा करब। जखन मनुष्यक नूतन दुनियाँस छी तखन जँ दुनियाँ आ अपना ठेकान पब लब तखन न दुनियाँक संग पइन-स-पइन, मान गति-स-गति मिला दुनियाँक धारक धारास प्रवाहित हइत समुद्र पहुँचब। खाइत जे अछि, तइ सभसँ गियानवनकेँ कान मतलब छैन। मतलब एतब छैन जे समग्र नूपक जिनगी करा बनाकऽ सामाजिक नूतन जीवन धारक कत नहला।

बड़ैक क्रमस सभ बजैत छी जे हल्लाँसँ उपकार हएत आ हल्लाँकेँ उपकार करितौं, ओहन विचार एकांकी जीवनक छी, मुदा जखन समग्र नूतन अपनाकेँ ढालि चलब तखन पइह विचार उपकारक जगह अपन दायित्व भऽ जाइत। अपना समाजस सभ बूझिय नहला अछि जे काइ कत आय ल माइ ल न बाप ला। ..तखन जँ ई बूझबै जे हम माता-पिताक सेवा करौं, तँ अपन दायित्व की हएल?

उहिना पाखैन वा तालावस दखल कारा माछकेँ पकड़ैल बन-बन

मछबाह जाल सकैत तहिना त जीवनक मूल तत्त्व पकड़ल कर्मक जालकेँ बुन-बुन सकत पड़ैए। तखन जहिठाम ओठाम मटियार माटिक रस्ता अछि, जकर दूनू पीठ पीठनार होइत अछि। पीठनारक की एक रंग होइए। पानिम भीजल माटिक पीच्छर सेहो होइए आ बिनु पानिक मारि रौदम सूखल पीठनार सेहो होइत अछि। एठाम तँ जीवन जीनाइर रुप करत किन। अज्ञान-ज्ञानक बीच खलनिहार मनुक्ख तँ छथिए। मानि लिअ ज हम कारा काज निर्धारित कलौं, समय, परिवेश इत्यादि अनका सामाम अछिए, तहिसँ जँ कम कलौं, तहिया गलत छल आ जँ बेसिया कलौं तँ ओ की छल, ओहो त गलत छल। एक-एक ऊष्म विष अमृतक संग चलैत रहैए। तहिल अपन विष-अमृतकेँ चिह्न चलब त जीवन पएब छल।

बहुत क्रमम सर बजित छी ज मनुक्खकेँ जीवनक स्वतंत्रता हवा चाही, मुदा अधिकार आ कर्तव्यक कारण राखि कऽ रहि त हएत? जहिना स्वतंत्र जीवन निर्गुण अछि तहिना त ओकर अपन सीमा सेहो अधिकार-कर्तव्यक बीच अछि। एठाम सेहो निचार बीचम अछिए ज एक उपकार छल अगुनवार, मारि जिनकर कारा उपकार ऊपरम नहि अछि, तिनकर उपकार, शासन अछि जीवनम उधार उपकारक कर्ज। मारि छल ज जहिना जीवनक एक पलट छल जन्म आ शासन छल मृत्यु, तहि दूनूक बीच त सर छी, ज माए-बाप जन्मक पछाति बच्चाकेँ धनीयर ठाढ़ करै छैथ, ओत कएल काजक, एठाम सना नहि, दायित्वक दायित्व बटा-बटीक कयानयन चढ़िय जाइ छैन, जकरा दायित्वपूर्ण उधार उपकार कहि-बुझि सकै छी। तखन एकर

दायित्व ई ने बिसरल जा सकैए आ ने छोड़ल जा सकैए। तेँ हम ईँ बेटा-बेटी माए-बापकेँ कहैत ई अहाँ की केलौं, दुखद रब कएल। हम एकटा बात आरो अछि। ओ अछि ई दुखक सेहो सीमा नहियेँ अछि। तन-मन-धन-जन, कते कहब, असीम दुखक सीमान अछि। तेँ हम दासन बात सेहो अछिए। एलेँ ओ नियतीत किए ने हूअए मुदा अछि तँ जनुना। की ओहन माए-बापकेँ ओऽऽी नहि पूछल जानि ई जखन बेटाकेँ बचि नन छी, तखन अहाँकेँ ओऽऽ बेटा-पुताहुपर कोन अधिकार बँचल अछि? ई मूँह ओठ। बेटा-पुताहु दिस देखब। खाएर ई अछि, बूझल बात अछि ई जहिना समुद्र अछि तहिना समाजो अछिए। नीक-बेजा होइते रहैए। नीक-बेजाऽऽक मान एल, एकटा नीक एकटा बेजाए, मुदा एहनो नीक अछिए ई जगह आ समय पब अधला बनि जाइए आ एहनो बेजा अछिए ई समय पब नीक बनि जाइए। हम तेँ नारदक मंत्र देखए पड़त किए, 'गुणरहितं कामनारहितं प्रतिक्षण वर्धमानमविच्छिन्नं सूक्ष्मतरमनुभवरूपम्।'

हृदयशीतल पारिवारिक पारम्परिक पानि जकाँ जीवन थकाएल आ बहुआएल तँ अछिए। जहिना एकटा धुनियाएल अछि तहिना दासन सुढ़ियाएल सेहो अछिए। एहन रूपम पति न गियानचन ओसना गेल छैथ। बरश-बकाबु एल मन ई0क नौदियाएल हाथी जकाँ चिक्कार मनम मारिय रहल छलैन। एकाएक दरबज्जापर सँ डॉ0 गियानचन अपन बाल मित्र- सुमितलाल हमरा निदा एला। मन भरि बिसैर गेल छलैन ई रस्ता, मारि अपना हमसँ सुमितलालक घरक बीचक बाट, कना कटलैन से अपन बूझब न

कहलाह। मन असथिर रहितैन तखन ने बुझितैथ जे नक्सा अपना काटैत आकि अपन नक्साकेँ काटै छी। एम्हर देख सुमितलाल हुनकासँ बुझि गेला जे गियानचन समयक कोना हड़म पड़ल अछि।

अखनुक दरबज्जाक चर्च नहि करै छी, पूर्वक मिथिलाक चर्च करै छी, समाजमे किछुए परिवार एहन छला जिनका अपन परिवारसँ बेसी सुतै-बैसैक जगह दरबज्जाक रूपमे छलैन। जेना-जेना पाछू उनैट देखब तेना-तेना पछुआएल स्थिति राजनैतिक सामने औत। आइयो नहि सए दिनसँ अपना ठाम दरबज्जाक महत्व रहल अछि। परिचित-अ-परिचित सबहक लेल सार्वजनिक स्थल बना पूर्वज अपन मर्यादा बनौने छलाह। मुँह देख मुँगबा बँटैक कला छलैन्ह। भुखल-दुखल वा रुखल-सुखल सबकेँ मुँगबा खुआ मुँह मिठ। दरबज्जापर समय बितबै छला। अखुनका चर्च नहि करै छी, जे तेज-तीतासँ धनाढ्या मारल जाइए आ धनी-सँ-अकास धनिक बिकनी सहज होअ लगल अछि। मुदा तहू बीच की आइयो लोक नहि छथि जिनका अपन धनाढी नञि रहने ओहिना आवास नहि रहै छैन? गरीबक सेना गाँ रखैय रहल अछि, मुदा भीखमंगाक संख्या सेहो बढ़ि रहल अछि, ओहिना न देखब। ठाम भीखमंगाक पर नहि रहल अछि तेठाम सम्पन्नता की रहल।

सुमितलालमे एते ज्ञान छलैन्ह जे जहिना बहुना देख ककरो जीवन आँकि लइ छथि तहिना मुँह देख जीवन-चरित्रक बाध सेहो रखैय जाइ छैन। उद्विग्न बहुना देख सुमितलाल गियानचनकेँ कहलैन-

"आबह-आबह गियान। काज हेराएल नहि छह।"

सुमितलालक विचार सुनि गियानचनक मनमे उठलैन जे जँ यदि अपन मनोदशा कहबैन तँ ओ धरोहर कऽ बाजब हएत। तँए यदि किए ने अपन मनक विचार नहि कहि विचारक चौहद्दीए बान्हि ली। गियानचन बजला-

"राय साहेब, लोक तँ उगैए हबाइए जगैए अगम-अथाह समुद्र जकाँ जीवन देखैए मुदा ओहिना दुनियाँ हबा गेल अछि तहिना लोकक हबाएब करा रहल।"

गियानचनक विचार सुनि सुमितलाल बुझि गेला जे, जे गियानचन दुनियाँक हबाएबक चर्च कऽ रहल अछि ओ अपन नहि हबाएल अछि, मन कतौ लसकामे लसैक गेल छैन्हि। अपन विचार उठबैत सुमितलाल बजला-

"गियानचन, तहिना समय आबि गेल अछि जे मन सदिकाल नजानिस-नजानिस रहैए। कखनो एक घन्टा बैस दाना-पानक जीवन-यापनक विचार करब से पलखतियो ने होइए।"

अपना जनैत सुमितलाल सभ बात बाजि गेला मुदा गियानचनक उद्विग्न मन रहैन ठीक जकाँ बुझब ने करलकैन। गियानचन बजला-

"सुमित राय, राति दिन औनैनी-बिलौनी लगल रहैए। कतबो मनकँ जाँति कऽ राखए चाहै छी, से रहब ने करैए।"

गियानचनक बात सुनि सुमितलाल आँकि लेलैन, मुदा छोह रोकि कहैसँ पहरुज करैत बजला-

"गियानचन, मन कि जाँतिकऽ रहैबला छी, ई तँ एहेन भूत छी जकरा काजमे जखन बान्हिकऽ राखल जाइत तखन जाँतिकऽ रहि सकैए, नहि तँ उड़ैबा-बौएबा करत।"

सुमितलालक विचारक शब्द सुनि गियानचन भावुक भऽ गेला मुदा शब्दक भीतर जे मर्म अछि से बूझब नै कलैन। विह्वल भावेँ पूछलखिन-

"से केना भाय साहेब?"

गियानचनक विह्वलता देख सुमितलालक मन विचार देलकैन मारि सुमितलालकेँ कहलकैन, खिस्सा-पिहानीसँ लोक बेसी बूझैए आ साधु शब्दनाथसँ कम बूझैए। कथा-पिहानीमे केहेनी शक्ति केना अबैए, से अखन नहि, अखन एतबे जे शब्द-शक्ति जते मृत्युवान अछि तहूसँ कम कथाशक्ति अछि। सुमितलाल बजला- "एकटा खिस्सा सुनबै छिअ, गियानचन। एकटा ऋषि रहैथ, अपन सम्बन्ध दुनियासँ हटा अपनाकेँ अपनेमे समेट नेने छला तँए असगर रहैथ।"

विभ्रमे गियानचन बजला-

"ऋषियोँ न रहैन?"

सुमितलाल बजला-

"किया न रहैन। संयोगसँ एकटा भूत आबि उपद्रव करए लगलैन। कहिया काँयीक यन्त्रा उलटा कऽ राखि दैन तँ कहिया किताबक उनटे बदलि कऽ राखि दैन। तंग भऽ ओ ऋषि भूतकेँ कहलखिन, तूँ

ओना किए करै छह? गोपन ड़ा दुग कहलकैन, हमना संग-संग बैसल नीक नइँ लगैए। गोँए उपद्रव करै छी। मुखि कहलखिन, बस गहील। हाथक इशारासँ आगुम ०।८ हल आमक गाछकँ देखबैत मुखि कहलखिन, ओ गाछपर सदिकाल बहैत-डगैत रहह। दुग सउह करए लगल। तइसँ मुखि बैन रऽ गेला।"

सुमितलालक सह बात गियानचन नहि बुझि सकला मुदा एते गँ बुझब कलाह ज हनि मन काज जखन ककरो हट जाइए तखन अनायास न जीवन यावि जाइए।

गियानचन बजला-

"हाय साहेब, अखन जाइ छी। हन करिया..।"

-

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१२.जगदीश प्रसाद मण्डलक ७ टा कथा- कथा-३ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

विदेहक लेखकक आमंत्रित रचना आ अध्ययन आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीजमे अखन धरि अहाँ पढ़लौं-

१. कामिनीक पांच टा कविता आ अध्ययन मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

२. जगदानन्द झा "मनु"क "माटिक बासन"पर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_353

३. मुन्नी कामतक एकांकी "जिन्दगीक मोल" आ उपन्यास गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_354

ई शृंखलामे आगाँ समानान्तर धाराक किछु गद्यमाख्य कथाकारसँ हुनका नजरिमे हुनकर अपन सर्वश्रेष्ठ ५-५ टा कथा आमंत्रित कएल गेल अछि। कथाकार लोकनि छथि:-

१.कपिलेश्वर राउत
२.उमेश मण्डल
३.राम विलास साहु
४.राजदेव मण्डल
५.आचार्य रामानन्द मण्डल

६.नन्द विलास राय
७.जगदीश प्रसाद मण्डल
८.दुर्गानन्द मण्डल

ई अंकमे प्रस्तुत अछि जगदीश प्रसाद मण्डलक ५ टा कथा जकर हमर समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि।- सम्पादक



जगदीश प्रसाद मण्डलक ७ टा कथा

कथा ३

आएल आशा चलि गेल

सूर्जग्रहण वा चन्द्रग्रहण छुटला पछाइत जहिना लोक नदी, सरोवर वा पोखरिमे नहेबाक धर्मादि लागि जाइत छथि तहिना तुलसीपुर गाममे नामधुनमक दर्शन करैक विचार समाजक लोकमे जगलैन। जिनका अपना हाथमे बटखर्चा रहैन से तँ निकलल रहला मुदा जिनका अपना हाथ-मुट्ठीमे पाइ नहि रहैन ओ मुँह-पेंच ताकए दासना-गसनाक घरपर जाए-आबए लगला, जेहेन नामधुनमे जेबाक जिज्ञासा अधिकांश लोकक मनमे जगलैन। मणिलाल सेहो मने-मन विचार कऽ लेला जे जखन समाजक अधिकांश लोक एकमुहरी भऽ नामधुनमे जाइले तैयार भेला अछि तखन अपना किए ने जाएब।

असकर-दुसकरमे ने कोनो नव प्रश्न उठैन मनमे अधिक विचार जगैत मुदा समूहमे तँ से नहि होइत। हटिया-बजार लोक होइते जाइत छथि। जहिना अपन-अपन विचारक कार्यानुकूल लोक कोनो बाहर जेबाकाल संगी ताकए लगै छथि तहिना मणिलाल अपन विचारी संगी तकैत हीरालाल एठाम विदा भेला। ओना, हीरालाल

आ मणीलालक उमनम दस सालक ानयट छैन, मुदा ेकनिवानी नरून ेकउमनिया राे-रैयानी जकाँ दुनूक वीच सम्बन्ध वनियँ (ेगल छैन। हीनालालक उमन सा्ॅ0 वनख टयि ेकस0मम चलि नरूल छैन आ मणीलालक ेकाननमक अन्तिमम जा नरूल छैन।

दनवज्ञायन वैसल हीनालाल सद्दा गाम-समाजकँ दख मन-मन निवानि नरूल छला जे आेल आशा चलि (ेगल.। चालीस वनख पूर्व मनम नायाेल छल जे यनिवानसँ निवन हा्ॅग, मान यनिवानक जवावदहीक काजसँ निवन रला यछा्ॅग चानु धामक दर्शन कनि कs शनीन गियाग कनव, मुदा स मनम नहि (ेगल। मन-मन हीनालाल साचिय नरूल छला कि ग्ॅ विच्चम मणीलाल लगम आवि टाकलकैन-

"राय, अहींकँ कहैल ेलौं हन जे गामक लाक उनैट कs नामधुनम जा नरूल अछि, अयना दुनू राँ्ॅ चलू। "

मणीलालक निचान सुनि हीनालाल मन-मन निचान कनेे लगला जे जखन मणीलाल दनवज्ञायन आवि कहि नरूल अछि गखन की कहिेे? जँ 'न्ॅ जाेव' कहवै गँ यूछव कना जे 'किे न जाेव?' आ जँ 'हँ' कहवै गँ अनन यैंच-उधानक यंचम यिे जाेव.। हीनालालकँ चुय दख मणीलाल दाहना कs यूछलकैन-

"राय, किछु वजलौं नहि?"

हीनालाल वजला-

"मणीलाल, मनमे अपना विचार छल जे जखन परिवारसँ निवृत होएब तँ चारूधामक तीर्थ जरूर करब, मुदा..।"

मणीलाल बजला-

"की मुदा, भाय?"

अपन मनक दाबल विचारकेँ खोलैत हीरालाल बजला-

"मणी, एक तँ आइधरि ककरो लग मुँह नहि बजै छी, तूँ तँ सहजे छोट भाए सदृश छह, तेँ तोरा मुँह कहलह।"

मणीलाल पुछलकैन- "से की भाय?"

हीरालाल बजला- "आइ ने देखै छहक जे समाजक अधिकांश लोक एकमुहरी भऽ रामेश्वरमक दर्शन करैक विचार करैत अछि मुदा अपना मनमे आइसँ चालीस बरख पूर्व ठानि नेने रही जे अखन परिवारकेँ सम्हारि अस्थिर करब जीवनक सभसँ महत्वपूर्ण काज अछि। जखन परिवार अस्थिर भऽ ठीकसँ चलए लागत तखन तीर्थ-बर्त करब।"

ओना, हीरालाल अपन पेटक सभ विचार बाजि गेला मुदा मणीलाल से बुझब ने करैत। बजला-

"भाय, नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं?"

हीरालाल बजला-

"मती, आइसँ चालीस बरख पूर्व, जहिया अपन दुरागमन भेल आ पत्नी घर एली, तही दिनक विचार छी। जाबत तक दुरागमन नहि भेल छल आ माए-बाबू सङ्ग जीबै छला ताबत तक हुनक परिवार बूझै छलिऐन। मुदा जखन दुरागमन भेल आ पत्नी घर एली तखन परिवारक बीच नव परिवारक उदय ओहिना भेल जहिना बाँस, खरही वा कराक बीटमे नव गाछक जन्म भेल होइत।"

अपना जनैत हीरालाल अपन जीवनक सम्पूर्णिकेँ मतीलालक सामने रखलैन, मुदा समाजक बीच जे अखन तकक वैवाहिक परिवेश बनल अछि ओ तँ पछुआ ने रहल अछि जे जाबत तक परिवारमे माता-पिता जीवैत रहै छैथ ताबत तक पत्नीक कोन बात जे धिया-पुता भेला पछातियो लोक अपन परिवार नहि बूझि माता-पिताक परिवार बूझै छैथ, तहिना मतीलाल सङ्ग बूझलैन। तँए परिवारक बीच नव परिवारक सृजन करा होइत तइ दिस मतीलालक नजैर गेबे ने केलैन। बजला-

"भाय, एहन कि अहींटाकेँ भेल अछि आकि सभकेँ होइत।"

मतीलालकेँ अपन विचारानुकूल बनबैक खियालसँ हीरालाल बजला। जहिना कोनो रचनाकार वा संगीतकार अपन पछिला विचार वा धुन (लय) केँ उगला विचार वा लयकेँ जोड़ैकाल विचारबद्ध वा लयबद्ध होइ छैथ तहिना हीरालाल मतीलालक विचारकेँ विचारबद्ध करैत बजला-

"मणि! गाछीटा नहि, अपना देखबा करै छी आ बूझि तँ छीहे जे माता-पिताक अमलदारीमे परिवारक जनावरसँ बेटा नहि माय-बाप होइ छथि, मुदा जखन परिवारक सृजन होइ छै, माने पति-पत्नीक गठन होइ छै, तखन तँ बेटा जनावरसँ बनियेँ जाइ छै किने।"

अपना जनैत हीरालाल परिवार-सृजनक पहिल सूत्र बाजल छला, मुदा से सूत्र मणिलालक मनमे घर करब ने केलकैन। सनयट बालक दोस्त दोस्तेँ मणिलाल पुनः अपनहि धुनिमे बजला-

"बाप, तेहन कि अहींटाकेँ भेल अछि आकि सभकेँ होइ छै।"

मणिलालक विचारकेँ अधतनपन सँ काटैत नहि बल्कि समान करैत, माने मानैत, हीरालाल बजला-

"हँ, से तँ सभकेँ होइ छै! मुदा बकरी-बकरीक विचारमे सेहो अन्तर होइत अछि। जकर जेहन विचार रहल से तेहन बूझबा करैत आ ओहन जीवन बनबैत अछि।"

ओना, मणिलालक मनमे नामधुनमे जबाक विचार नाचिये रहल छलैन कि बिच्चेमे हीरालाल अपन जीवनक विचारक चर्च शुरू कऽ देलैन। मुदा से मणिलालक मनकेँ नीक जकाँ छुबिये ने रहल छलैन, जइसँ उखड़ल-उखड़ल सन मन मणिलालक छलैन्हि। अपन विचारकेँ पुनः आगुअबैत मणिलाल बजला-

"बाप! परिवार छी ने, ने दुटा परिवार एकसंग होइ छै आ ने बिना दू-परिवारकेँ एकसंग चलब कल्याणे होइ छै।"

हीरालाल बजला-

"हँ से तँ नहियेँ होएत।"

हीरालालक विचारक सह पबित मोतीलाल बजला- "अहीं दुआरे ने एलौं हन। जखन आगा-आगा परिवारक संग तीर्थ-वर्त करैत चलब तखन ने एक-दोसरमे जीवनक संकल्प-सूत्र सदा मजगूत होइत जाएत आ एक-दोसरपर विसवास सदा बढ़ैत चलत।"

हीरालाल बजला-

"हँ, से होइत अछि।"

हीरालालक विचारक सह देख मोतीलाल बजला-

"हाय, लग-पासक स्थान (धर्मस्थान) मे लोक असगरा-दुसगर जाइ-अबैत, मुदा रामेश्वरम तँ से नहि छी। देशक दक्षिनवरिया स्थानपर स्थापित अछि, जेठाम पहुँचैले हजारा किलोमीटरक यात्रा तय करए पड़त।"

हीरालाल बजला-

"हँ, से तँ तय करए पड़त।"

'करए पड़त' सुनिते जहिना साधारणो हवाक सिहकी पर गाछसँ पाकल आम धब-धब खसैत तहिना मोतीलालक पेटक विचार धब-द खसलैन-

"भाय, लग-पासक धर्मस्थानो ओहन होइए जहन नीक-सँ-नीक विचार व्यक्तिगत होइए, मुदा दुनूक स्थानो तँ ओहन होइत अछि जहन समूहक बीच सामूहिक काज होइए।"

हीरालाल बजला-

"हूँ, से तँ होइत अछि।"

हीरालालक सटीक विचार सुनि मोतीलाल बजला-

"भाय, जतए जे होइए से ततए होउ। जानए जग आ जानए जगत। मुदा अपना दुनू गोटामे से नहि अछि, जहिना एक-दोसरक सुख-दुखकेँ दुनू गोटे एक बुझै छी तहिना ने जीवन-यात्रामे सेहो एकसंग रहब करब। एकरंग परिवार रहल जहिना अहाँक परिवार अछि तहिना ने अपनो अछि। तेँ जँ कोनो नीक-बेजाए काजक यात्रा रहत तँ दुनू गोटे विचारियो कऽ ने करब।"

हीरालाल बजला-

"एकरा के काटत।"

अपन अकाट्य विचार सुनि मोतीलालक मन दहैल गेलैन। बजला-

"भाय, जखन समाजक अधिकांश लोक एकमुहेँ भऽ तीर्थ करए जा रहला अछि तखन अपना दुनू गोटे किए ने चली।"

मोतीलालक विचार सुनि हीरालाल बजला-

"समाजक लोक तँ लोक छथि, सदिकाल हतिया-धसानक बात पकैत चलैत छथि। मुदा अपना सभ तँ उहिना चलब तखन हतिया-धसान लोकसँ अन्तर की हएत। अपन बीतल दिनक विचार यदि सुनि लेब, पछाड़ि विचारकेँ सुहकारि आगूक विचार करब।"

मोतीलाल बजला-

"हाय, काज छोड़ि मारि परिवारक काज, मात्र देवस्थानक विचार करए आएल छलौं तँए समय कम अछि, अगुताएल छी।"

हीरालाल बजला-

"बसी नहि मात्र एकटा विचार अछि, लगल कहि दइ छिअ।"

हीरालालक विचार सुनि मोतीलाल चुप रहला, मुदा नजरि उठा। हीरालालक नजरिपर जरुर देलनि।

हीरालाल बजला- "रामेश्वरमटा नहि, देशक चारू धाम रामेश्वरम, जगन्नाथ, द्वारिका आ अमरनाथ क दर्शन करबाक विचार अपना मनमे रखने छलौं, मुदा धीरे-धीरे बाल-बच्चा हेन सभ आ माता-पिताक आयु बढ़ने सभ, परिवारक भारक बोझ बढ़ैत गेल, जइसँ चारूधामक दर्शनक विचार तर पड़ैत गेल। अखन तक देखैत छलहुँ, माता-पिताक पार लगबैत दुटा बेटाकेँ पढ़लौं-लिखलौं, विआह-दान केलौं आ चारिटा बेटीक विआह-दान सभ करब केलौं।"

'चारिटा बेटीक विआह-दान' सुनि मोतीलालक नजरि अपन दुनू बेटीपर पड़लैन। बजला-

"भाय, तहन दुन्नूक यान्त्रिक समाज बना लेलक अछि जे गंगा-असनानसँ भानी बटीक विआह-दान भऽ गेल अछि।"

भानी-सँ-भानी काज किए न हुअए, जकरा कतेकाल कठिन-सँ-कठिन यान्त्रिकिक सामना किए न करए पड़ए, मुदा काज भेला पछाति मन जहिना समगम भऽ जाइए तहिना हीरालालकेँ भऽ गेल छलैन, मुदा मातीलालकेँ तँ से नहि भेल छलैन तँए नजैर निच्चाँ खसि रहल छलैन, जकरा देख-सुनि बाल-भआस देत हीरालाल बजला-

"मातीलाल, यान्त्रिक जीवन जँ शान्ति-चिन्तसँ निमाहि ली, तँ जे गंगा-असनानसँ बेसी काज भव कएल किना।"

हीरालालक विचारक बाद जना मातीलालक हृदयकेँ छुद दलकैन तहिना गिलमिलाइत बजला-

"भाय, यान्त्रिक विचार छागू। जहि काज आएल छी तैयन विचार करू।"

हीरालाल बजला-

"माती, अखन अपन साठि बरख टपि एकसठिम प्रवेश कलौं अछि। तैबीच माता-पिताक यान-ध्यान लगेलौं आ बटा-बटीक सेहो यान-धार लगब कलौं। जहिसँ यान्त्रिक भानसँ मुक्त भऽ गेल छी, तँए आब अपना मनमे अछि जे शेष जिनगी किए न धर्म-कर्ममे बिताबी, मुदा..?"

'मुद्रा' सुनिकऽ ई नहि मुद्रा हीरालालक जीवन देख मणिलाल बजला- "हाय, अहाँक जीवनक हिसाब अपन बीच समाधानमे पड़ल छीह, तेँ एकर आयोजनमे दर्शन करब जरूरी आकि बढ़ीक विआह-दान पार लगाएब?"

मणिलालक विचार सुनि हीरालाल बूझि गेला जे जहिना मन मणिलाल आएल छल से आब आगू-पाछू हुअ लगलै। हीरालाल बजला-

"मणि, सभ दिन मनमे छल जे चारूधामक यात्रा करी। मुद्रा दुनूक यात्रा नहि बनी ओनियाला-बाजक खगता छऽल। एक तँ द्रनक सबहन हुअए जखन सभैयक संग खर्चा-बर्च हुव करैत। मुद्रा जखन साठि वर्खक उमेरसँ बसीवलाकँ गाड़ीक राजमे सुविधा देल तखन मन आरो हलैस गेल जे पनिवारक निमन्त्रणा देला पछातिए चारू धामक दर्शन सहजे हुव करत। मुद्रा गाड़ीक राजमे जाहिक छूट देल तहिसँ वसी बढ़िय गेल, मान सुविधा समाप्त भऽ गेल, आब नहि जा सकब। ओना तीर्थ-बर्तक नामपर पेंच-पालट सहजे समाजमे देखैत अछि, मुद्रा जखन कर्ज लऽ कर्ज चुकाएब तखन कर्जासँ छुटकारा करा देत।"

मणिलाल बजला- "हँ, से तँ नहियेँ देत।"

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१३.जगदीश प्रसाद मण्डलक ७ टा कथा- कथा-४ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

विदेहक लेखकक आमंत्रित रचना आ अध्ययन आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीजमे अखन धरि अहाँ पढ़लौं-

१. कामिनीक पाँच टा कविता आ अध्ययन मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

२. जगदानन्द झा "मनु"क "मारिक वासन"पर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_353

३. मुन्नी कामतक एकांकी "जिनगीक मोल" आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_354

ऐ शृंखलामे आगाँ समानान्तर धाराक किछु गद्यमाद्य कथाकारसँ हुनका नजरिमे हुनकर अपन सर्वश्रेष्ठ ७-७ टा कथा आमंत्रित कएल गेल अछि। कथाकार लोकनि छथि:-

१.कपिलेश्वर राउत

२.उमेश मण्डल

३.राम विलास साहु

४.राजदेव मण्डल

५.आचार्य रामानन्द मण्डल

६.नन्द विलास राय

७.जगदीश प्रसाद मण्डल

८.दुर्गानन्द मण्डल

ऐ अंकमे प्रस्तुत अछि जगदीश प्रसाद मण्डलक ५ टा कथा अध्ययन हमर समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि। - सम्पादक



जगदीश प्रसाद मण्डलक ५ टा कथा

कथा ४

जीवन दान

दरबज्जाक आगूक रातरानी फूलक गाछक निच्चाँमे बैसल सुमन्त राय, अपन जीवन दुख भरल छथि। सात दिनसँ सताओल सुमन्त रायकेँ कोनो बात नहि सूझि रहल छैन। सात दिन पूर्व एहेन भुमकम भेल छल जइमे सुमन्त रायक तीनू घर खसि पड़लैन, पएह सातक कारण छियैन। दरबज्जाक आगूक चापाकलक पाइप बालुसँ भरा भरि गेलैन जे पानि देब बन्न भऽ गेल छलैन। घर खसल बरद-महींस मरि गेलैन। एक दिस सुमन्त राय जीवनक अन्त दुख भरल छथि तँ दोसर-दिस धरतीपर बैसल एकटा प्राणप्रिय मनुक्ख सेहो सामनेमे रहैन। नहि-नहि कऽ सात दिनक बीच सतरहटा सँ बेसी छोट-छोट भुमकम भेल, ओना तइसँ जान-मालक कोनो क्षति गाममे नहि भेल मुदा धरती तँ तबाह कएल। सताओल मन भरल सुमन्त रायक आँखिक आगू शोकसँ भरल दुनियाँ पसरल छलैन कि तइ बिच्चेमे टूटल मन पत्नी आबि पुछलकैन-

"आब की करब?"

पत्नीक प्रश्न सुनि सुमन्त राय धड़फड़ीमे किछु उत्तर देइसँ अपनाकेँ परहेज कलैन। परहेज करैक कारण भेलैन जे दुखो छी जे एहेन बेलैन गाम-समाजमे बचल अछि जे किया पुछत, राय की हाल-चाल? तँ मुहँ लागल दोसरक उत्तर भेटै छैन जे 'सब ठीक-ठाक अछि।' की जीवन खेल छी जे एना आसानीसँ ठीक-ठाक भऽ जाएत? ठीक हेबामे की सब करए पड़ए से तँ ठीक भेलहा जनै छथि, जे कोना कते जीवन कोना ठीक भेल...।

मन-मन सुमन्त राय मन-मथना करै छला आ पत्नीकेँ उपर-सँ-निच्चाँ,

मान माथसँ पएर लग धरि आ निच्चाँसँ ऊपर, नख-सिख कहियौ आकि सिख-नख धरि, नवीन स्नेहा खिना रहल छला। मनेँ मन सुमन्त रायकँ अपन पत्नी-द उपेक्ष करलकैन- 'आब ओ नहि जीती। एक दिस तँ बनल-बनाएल जीवन संसार नष्ट भऽ गेलैन आ दोसर-दिस शरीरमे आब ओ शक्ति नहि रहलैन जे पुन: पहिलुके जकाँ बना पौती।'

एक दिस सुमन्त रायक मनमे विचारक पहाड़ ठाढ़ भेल जे सासु आसिरबाद दैत कहने छलैन, 'बाउ, दुनूक जीवन शुरू भेल अछि। अहिना, जाधरि आँखि गड़ौने रहब ताधरि शुरूए रहत।' ओहो, तँ दोसर-दिस ओहो ओहिना कहलैन जे ओखन जइ स्थितिमे पहुँचि गेल छी, पुन: ओइ दुनियाँक आशा छोड़ि नव रूपमे अपन जीवनक नव दुनियाँ बनबए पड़त। पत्नी तँ पत्नी छेली, जीवनक संगसँ लगक संगी, गाममे जँ प्रिय आ जनप्रिय विचारसँ संचालित नहि हएब, तखन तँ ओहन हएत जहन किया साधक सिद्धासन अपन साधनाक स्थान साधि रहला अछि आ बगलक लाहान घरसँ बहाउनियन नमहर बाट कऽ रहला अछि।

मुस्कुराइत सुमन्त राय बजला-

"कतेक तँ नीक दुनियाँ पड़ल अछि, तखन तँ?"

'तखन तँ' कहि सुमन्त राय ओ दुआर चुप भऽ गेला जे कम-सँ-कम पत्नियोँ तँ किछु अपन विचार रखैत करती। हुनका लेल तँ नमहर संसार छैन्हे। अपन आँखियो ओहना तँ देखब करै छथि जे

ककरा कमाइवला जवान बेटा मानि जाइए, सेहो छौड़ी सभकेँ करब करैए तँ ककरा बाल-बाधक माए-बाप मानि जाइए तँ एहन ओ कहाँ जीबैए..! मुदा से विचार सविता देवीक मनमे जगबे ने केलैन। एक तँ उमेरो कम पढ़ल-लिखल लोक बेसी बिसरै छैथ, माने बिसराह होइ छैथ आ अधिक पढ़ल-लिखल लोक कम बिसरबो करै छैथ आ बिसराहो तँ होइते छैथ। सविता देवी तँ सहज विद्यालय-महाविद्यालय जेबासँ साक्षरता बमाक रहली। मुदा सेहो सविता देवीक मनमे जीवनक प्रति एते तँ सिनेह छलैन्हि जे कहुना-न-कहुना, किछु दिन आरो देख ली।

पचपन-साठि वर्खक अवस्था दुनू संगीक भऽ गेल अछि। जँ अपना जनतबसँ मानब तँ पाँच-दस बरख आरो सेहो ने जीब। सपन धुनि लगल जकाँ सविता देवीक मनमे ककरा एहन विचार उठिए ने रहल छलैन जे जहिना धुनिमे अन्हार नहि तहिना किछु पृथ्वीपुत्र तँ एहन छथिए जे ओकरा अन्हरियाक अन्हार नहि बुझि, दिन जकाँ कर्मभूमिमे मगन भेल कर्मयोग मिलेबए छैथ। भलेँ हुनका मनमे एहन आएल होइ वा नहि आएल होइ जे हजार बरख पाछू मानव अगीन कहियो आबि हुए, आ हजार बरख आगू मानव भविस कहियो कि सपना, दुनूक बीच तँ आइक जाठ अछिए। मुदा आइक जाठ तँ आइक कर्मसँ मानव काजसँ जाठा आइक अन्तिम सीमापर पहुँचबा, कालिक कर्म कालिल सहा छाठा अछि। अही क्रममे ने मानव समयक संग प्रकृतिस्थ भऽ जीवन धारण करै छैथ।

एक दिस सविता देवीक मन शोकसँ व्याकुल छैन तँ दोसर-दिस

सुमन्त रा॰॰क मन कबीरबाबाक संग-संग मिथिलाक गाम-गाम घूमि-घूमि गाबि रहल छलैन जे 'दा यारन क बीचम बाँकी बँचल न का॰॰।' राय, नागि अछि तँ दिना रुब करत, दुख अछि तँ सुखा रुब करत। तहिना नीकी अछि तँ दाढ़िया रुब करत। बूमिग छी जे धनीक ग्राहीसँ कग गुहा बसी यानि दुनियाँम यसनल अछि, तखन यानिक अराव किछ अछि? कहुब जे उा नानगन अछि। किछ नानयन अछि, सहा तँ अयन सरकँ न बूमछ यछग। कबीर बाबा कहुनहि छैथ जे 'यानी मं मीन यियासी, दख-दख लागे हांसी।'

मगन रुल सुमन्त रायकँ अयन विआह-दिनक सविताक नुय आगुम आवि ०।८ रुs गेलैन। सविताक नुय दख सुमन्त रा॰॰क मन-मन्हन निहुसँग कहुलकैन- 'अनन जे नाग कम आ दनदक यीछ बसी बना आहि-आलम करब तखन ॰॰ी दुनियाँ छका दिन जीबछ दग।'

जहिना छक दिस ग्राकृतिक ग्रकाय अछि तँ दासन-दिस साढ़ गीन हाथक लाकक ग्रकाय सहा अछिछ। तहिना छक दिस जहिना दब ०।८ अछि तँ दासन-दिस दानबा न॰॰ ०।८ अछि, सहा करना न॰॰ कहुल जाछग। तखन तँ रुल जे दुनूक बीचक जे यागक्रिया अछि उाकरा जखन ॰॰मानदारीसँ '॰॰-मान' मानि आगू चलब तखन न नसयूर्ण जीननक नसाछल रुल रुटग। खाछन, जे रुटग बा रुट नहुल अछि, सबहुक सामाम अछिछ। मन-मन साचेँग सुमन्त रा॰॰क नर्जेन सविताक विजलीकाक ॰॰जाग जकाँ छिटकलैन।

चगन अनस्थाम यतिकँ दख सविता रोजी अयनाकँ चावेँग बजली-

"जखन दुनू परानीकेँ जीबै-मरैत माता-पिता आ सभा-समाज बान्हि दैत छैथ तखन तँ पएह ने नीक हएत जे एक्के सिरहान मरी वा जीबी।"

पतीक विचार सुनि, अपन दुनू परानीक जीवन देख सुमन्त राय बजला-

"उचित किने?"

ओना, बजैक क्रमम सुमन्त राय बाजि गेला, मुदा बजला पछाइत अपन मन मारि जगबैत कहलकैन, 'एहना तँ सम्भव अछिए जे अपना मनम जे कर्मशील विचार अछि ओ हुनकाम नइ होइन। मुदा से बुझब कना?'

तैयो सविता भौजी बजली- "हमरा माता-पिता आ समाजो अहाँक हाथ पकड़ा ने हमरा छोड़लैन। तैठाम आब अहाँ ने साधना करबै आ जीबैत किछु करबा करबै।"

पतीक विचार सुनि सुमन्त राइक मनम जेना प्रशान्त महासागर उमैड़ गेल होनि तहिना उमैड़ गेलैन। प्रशान्तचित्त होइत सुमन्त राय बजला-

"कोनो चिन्ता-फिकिर करैक जरूरत नइ अछि। जीवन पड़ब कठिन अछि आ उकठुआ अछि, मुदा दव तँ असाध्य नहि अछि। तँए एहेन कुशल विचार मनम उपजबै पड़त ने जे संग मिलि जीब ने सार्थक जीवन छी।"

पत्नीक मुँहलगुआ पुरुख जकाँ तँ सुमन्त राय छथिए, तेहन कऽ पत्नीकेँ पुछलैन-

"आब की करब। जीवन तँ घेघ बनियेँ गेल अछि।"

अपन मुहसँ निकलल 'घेघ' शब्द जेना सुमन्त रायक अपन मनकेँ घँघिया देलकैन। मुदा स्वाभिमानक जीवन तँ जीवनक उत्कर्षिक सीमा छीहे। जहिना स्वाभिमानसँ लोक अपन स्वमानदानिताक उच्च सीमाकेँ छुबिय लइए, तहिना मनसँ मन-मस्तिष्कक मधि मधिमय होइ चारुदिस छिड़कैए।

पतिक निचानकेँ गृहीत होइत देख सविता टोकी बजली-

"अपना तँ कोना बाटक स्वभाव नहियेँ देख पब नहल छी, अहाँ न पति छिऐ?"

पत्नीक निचान सुनि सुमन्त राय पघिल गेला। राय, पघिलब हल, कोना बच्चाक उ नुय आ अवस्था, तहिना उ सनेनिक सीमाम प्रवेश करैए। दुनियाँ तँ दुनियाँ छी ज साध्य-असाध्य दुनू छी। जहिना दुनियाँक ज बनावट अछि उ एकरंग नहि अछि, तहिना जन्मभूमिक बनाटब सेहो एकरंग नहियेँ अछि। कोना उत्र एहन अछि, जेना साइबेरिया, जकरा भूगोलक राखाम उत्तरी-ध्रुवक सहसँ लगक भूमि बुझै छी। तहिना उपजाऊ भूमिक दशा उहन अछि ज नअ-नअ मास धनि बरफक ढाकसँ ढकल रहैए। तहिना उँ भूमध्य सागर उत्तरीय भूमिक कल्पना मनम आयि किसान जीवन चलवैक निचान करता, तखन तँ उहिना न होएत जेना ध्रुवक कात

दाख रहल छलैन ज सत्ययुगसँ बचानकँ ओकरंग। ओ।८ कत छैन। गेOाम ञ्ञीन्हा न अपन साव-निचान कनवे ज अभिमन्यु किए वाल्य वयम हनुमान जकाँ सीता नामकँ हृदयम नायि नवरूमिक संकल्प ललक? वएह संकल्प न बचानकँ आऽऽया कृष्ण जकाँ वज्रक नुय लाक-समाजम यसनला अछि आ यसानला गँ जाऽऽय सकैए। खाएन ज अछि, सबहक अपन दुनियाँ अछि। अपन दुनियाँक अपन चाही गँ दुनियाँक खलौना बना खली ना दुनियँ खलौना बना खलए, स गँ रहल रनिस आ रनिसक कल्पना..!

निश्मित हाऽऽन, निश्मित रहल, जीवनसँ हानि मानि उऽऽ नानकीय जीवनम यहुँच जाएव जकना मृत्युक अवस्था कहै छिउ, सहा गँ जीवन नहियँ रहल। ओहि-यओहि सुमन्द राय सविता रौजीकँ कहलैन-

"जखन दुनु बकरी चानि आँखिसँ गकेँ छी, गखन उँ जीवन मूस जकाँ माटिक गनम नुकाए चाहगा स (थाउ हुअ् दवऽऽ।"

मूसहनक वड़ा जहिना माटिक गनक विलम मूसक संग मूसक वड़ाकँ यकैउ खलौना बना, मूसनीकँ (गावन सुँघा-सुँघा जीवन दऽऽग अछि, रहलँ उा यून: मूसनीसँ टूसनीए किए न बनि जाए, गहिना सुमन्द राऽऽक मनम रहलैन।

यत्नीक निचानकँ दख-सुनि सुमन्द राय उऽऽ सीमा-नखायन यहुँच (गला, जेOाम यहुँचला यछाऽऽग मनुष्क अपन जीवनचक्राम अपनाकँ समाहित कनेग दिशा-निर्धारित कनैए। अपन हानिकँ हनध नहि

कहि हननाहकँ हनध नहि जीयन सहा दण्ण अछि। हनाजल-हाथियाजल कहियकऽ न दुनियाँसँ जवा कनव कना ज उचिा हजा। सुमन्द हाय उाण्ण सीमायन यहुँचला, मान वौदिक सीमायन, जाज जीवन यद्वगिक दिशा-निर्दश हटेज। वौदिक सीमायन यहुँचा सुमन्द हाण्णक मनम संकल्पक उदय हलैन। गेवीच सविा होजी सहा अयनाकँ संकल्पिा कनो गावज लगली-

"साथी हाथ मिलाना, जक अकला थक जाय..।"

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.१४.जगदीश प्रसाद मण्डलक ७ टा कथा- कथा ७ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

निबन्धक लेखकक आलोचना रचना आ अध्ययन आलोचना समीक्षाक समीक्षा सीरीजमे अखन धरि आएल पोथी-

१. कामिनीक पांच टा कविता आ अध्ययन मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

२. जगदानन्द झा "मनु"क "मातिक वासन"पर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_353

३. मुन्नी कामतक एकांकी "जिनगीक मोल" आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_354

ई शृंखलामे आगाँ समानान्तर धाराक किछु गद्यमाला कथाकारसँ हुनका नजरिमे हुनकर अपन सर्वश्रेष्ठ ५-५ टा कथा आमंत्रित कएल गेल अछि। कथाकार लोकनि छथि:-

१.कपिलेश्वर राउत
२.उमेश मण्डल
३.राम विलास साहु
४.राजदेव मण्डल
५.आचार्य रामानन्द मण्डल

६.नन्द विलास राय
७.जगदीश प्रसाद मण्डल
८.दुर्गानन्द मण्डल

ई अंकमे प्रस्तुत अछि जगदीश प्रसाद मण्डलक ५ टा कथा अध्ययन हमर समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि।- सम्पादक



जगदीश प्रसाद मण्डलक १ टा कथा

कथा १

अप्पन साखी

नमवणिया गामक चौक। दिनसुनुका आठ बजि गेल छल। नीलकण्ठ काका अपन समयानुसार चौकपर पहुँच गेल छला। ओना, चौकक चारुक दोकान तीन बजे रातिसँ शुरू भऽ जाइ छै मुदा सोना-चानी, कपड़ा-लत्ताक दोकान आठ बजे खुजैत। स्कूल सेहो दस बजे किए ने खुजैत मुदा सड़क सहयोगे रातिसँ चौक गँ चलिये रहल अछि।

आब कहब जे जखन चौकक चारुक दोकान तीन बजे रातिमे खुजि जाइत तखन नीलकण्ठ काका आठ बजेमे किए जाइ छथि?

नीलकण्ठ कक्काक अपन साख छैन तँए अप्पन साखानुसार चालि छैन, जहिना पहिने नीलकण्ठ काका चलि रहल छथि। साखानुसार चालि

ओी छैन ज सौंभुका गाउी यीवनिहानकँ गीन वज रानम चाहक तृष्णा जगे छै, गँउ यहिन उा यहुँचेउ। साम चाहटा यीवेल लाक (थाउ चोकयन अवेउ। चाहक दाकानयन विनू वजील याँव(गानसँ गया-सय गँ कनिग अछि। गहुल न लाक चोकयन अवेउ। अधनगिया समय नहिग छै गँउ दिनुका काज अखन हव न कनग, गखन गँ रल ज निसचिन्तीक समय छीह। तृष्णा तृष्णिक लल चाह यीविग अछि। मन शान्त रला यछाउ्ग उँ लाक निसचिन्तसँ अयना जीवन गाथा नउ् गाउाग गखन गाउाग कखन। गामक चोक छी, जहिना-जहिना दाकानक कउी वढैउ, गहिना-गहिना गहिंकीक आवा-जाही सहा वढैग अछि। जउ्सँ निवाहाक कउी चलिग अछि। सौंस गामक समाचान, उँOाम समाचानक मान घटना विशेषसँ अछि, सामान्य जीवनसँ नहि अछि, उकOाम वेस लाककँ रुचिय जाउ्उ। आO वज हाउ्ग-हाउ्ग गामक चित्र-विचित्र सह समाचान चोकयन यहुँचिय जाउ्उ। गँउ नीलकण्ठ काका अयन चाह यीवेक समय, आO वज वनोन छैथ। उाना, चोकयन वेउ्सेक अउा चाह टाकानटा कँ मानल जा सकैउ। वाँकी दाकान उकरसन्नू अछि गँउ उाउ्Oाम उकरसन्नूक जमाव नहैउ। उकटा वाग आना यूछि सकै छी, उा ओी ज चाहक चलैन उहन रS (गेल अछि ज काढिया-काहिला जखन उाछाउ्नयन माननिंग-टीक सनन कनैउ आ नीलकण्ठ काका सन यूनान उमनक लाक आO वजम चाह यीवउ चोकयन किउ जाउ् छैथ? नहि, वाग दासन अछि। उा अछि गामक समाचानक समीकनध सूनउ जाउ् छैथ, चाह गँ उकटा वहाना छिउैन। उा नीक जकाँ जानि नहला अछि ज नुयैआ-दु-नुयैआक गिलास ना कयक नस्तू छी चाह, गहुम उकनूयना नउ् अछि। अनका सीढीम

चाह बनिता अछि आ बिकनिया भऽ रहल अछि। जखन चाहक दोकानपर जाएब कि दोकानदार पूछि देता, 'कोन चाह पीब?'

खएर ई जानए अछि से तातए अछि तइसँ नीलकण्ठ काकाकेँ कोन मतलब छैन, मतलब एतब रहन छैथ ई चाह रुपैआ घटिया भेल हुअए आकि बीज-बीस घटिया भऽ जाए, मुदा अपन ई बहीआ जीवन अछि, बस तहीमे न चलैक अछि। बुझित छी ई परिवेश एहन बनि गेल अछि ई गुणगर बस्तु किए न हुअए मुदा जँ ओकर दाम कम छै तँ ओकर पूछ बाजारमे कमि जाइ छै आ अगुणशीला आकि अगुणकारिया बस्तु जँ महग छै तँ ओकर पूछ बढ़ि जाइ छै। यएह तँ प्रधान माध्यम छी, ई तीतकेँ मीठ बनबैए आ मीठकेँ तीत। मीठिया युगक ई लक्षण अछि, सत्य तँ देखब करत किन।

गामक चौकपर नीलकण्ठ काका चाह पीबिते रहैथ कि दू गोरक बीच चाह दोकानपर घोंघाउज शुरू भेल। एकगोरे अपन विचार दैत ई चाह दोकान न गामक चौक बनौलक, तँ दोसर गोरे विचार दैत ई चाहे दोकानकेँ चौकपर कोना मारने अछि...। तेकर घोंघाउज हुअ लगल।

लगिआह जकाँ विचारो आ गप्पा-सप्प अछिए। मानि लिअ ई जहिना लक्ष्मी अपन पैरपर तँ नहि मुदा धनीए धेन आकि कोना आलम, आलम भेल सहयोगी, रटैन दिन-राति तँ बढ़ब करैए, तहिना दूनू गोरक बीच मानि मखानलाल आ सिंगहानलालक बीच गप-सप्प बढ़ि गेल। मखानलाल बाजल-

"कोना गाम-घरमे जाएत चाहैत दोकान नहि खुजत ताबे चौक-चौराहा नइ बनत। तँए चौक-चौराहाक निर्माणकर्ता चाहैत दोकान भेल।"

सिंहेश्वरलालकेँ तामस उठि गेलइ। ओना, तामस उठिते उठलै जे जाबे धरि गाम-गाममे बजारीक लेन-देन नइ शुरू हएत ताबे चौक-चौराहाक माने की। ओठाम एहो नइ बुझब जे गाम-गामक लोकसँ लऽ कऽ गहना-जेवर धनिक लूट बाहरी लोक कऽ रहल अछि। ..सिंहेश्वरलाल बाजल-

"पानिमे की मखानटा हएत जे सभ तन-उपर हएत।"

ओना, राय-सलाह ओहिना लोकक बीच भऽ रहल छल जे पानियेँमे सँ पाइकेँ छानि अनैत आ पानियेँक रसमे माछ ताती-दानुम, नीतेन-हीजेन गमबैत। अपना विचार मखानालाल बाजल आ सिंहेश्वरलाल बाजल।

कातमे बैसल नीलकण्ठ काका दुनू गोटेक विचार सुनि मने-मन मगन भऽ रहल छला। मगन हएबाक कारण अपना मनमे विचार उठि गेलनि जे मिथिलांचलक ताल-तालनसँ लऽ कऽ चौर-चाँचर, पोखरि-माँखरि, मनल-धार, मनल धार ओ भेल जे जेकर धारा बन्न भऽ गेल आ पोखरि जकाँ बीच-बीचमे बनि गेल अछि। तैसंग गाम-गाममे सड़क बनने सेहो पानिक जमाव बढ़ि गेल अछि। प्रश्न मखानक अछि। मखानक खेतीक योग कोन जलकर अछि। एखन तक जे मखान उपजबैक तकनीक रहल अछि ओ कहैत रहल अछि, आ नव तकनीकक अनुकूल जे खेतीकेँ सीमित जाइतिक बीच,

यहिलुका ढंगसँ, कएल जाएग गखन लाएक अंग काग नहग.? अखन वसी नहि। मान अखन आनन्न प्रदशक मिंग। आ ञ्ज़लिस माछ नीक कि अपना ऊOामक नाह-राकुन नीक, स वादम। अखन अनन किए समय दुनि कनव ज सयगा (मालदह) जकाँ नाह माछा हजान वनख यहिन जहन हा॰॰ छल गहन अखना हा॰॰ए। सर वीजम नव गकनीक आएल, मान सर वीजक निकसिग नुय सामम आएल आ अपना सर गाव स्नन मिलानी कनैग गवैग नही ज 'सर सखी सासुन (गल हमना लल वैग यठि (गल।'

चाहक दाकानयन गँ दर्जना नंगक समावान दर्जना लाकक नहिग अछि। मखानालाल आ सिंगहानालालकँ गुलटन ललकानिकs कहलक-

"चाहक दाकानकँ Oहा वृषे छहक। अयन-अयन मुँह वन्न नाखह। दासना-गसना गय-सय्य हएग कि गान दुनु (गानक घांघाउज लाक सुनैग नहग। "

गुलटनक निचान सुनि दुनु(गान चुय रs (गल। चुय्या कना न हा॰॰ग। समाज गँ समाज छी। अयना निचान लाक वँटैए आ लाकाक निचान समटैए। वकीलसँ लs कs यनिनान, समाज धनि अछिए। आइक ज स्थिगि अछि, ग॰॰ अनुकुल सयर्कँ यकैठ जखन ठग। उOग गखन उा सही धनीयन यठग।

मखानलाल आ सिंगहानलालक वीचक गलगुल नीक जकाँ शान्धा न रल छल कि चाहक दाकानक आगुएम मनसुखलाल जान-जानसँ

बेटाकेँ कहलनि- "स्कूल गेलह कि नहि?"

बेटा, दुलारचन बजला- "स्कूल नहि गेलहुँ, मोबाइल कीनि दाउ, गामपर असगर पढ़ब।"

नीलकण्ठ काका गुलटनकेँ कहलखिन- "गुलटन, कनी बहुनाकऽ नीक जकाँ बूझक गँ, कथीक गलगुल होइ छै।"

गुलटनक मनमे उठल, अपन अनकर कहा-कहीक मारनी अपना सिनेमा किए लेब। नीक यएह होएत जे मनसुखलाल दुनू-बापूकेँ नीलकण्ठ कक्काक सामने पहुँचा दैब। गुलटन सएह केलक। मनसुखलाल दुनू-बापूकेँ नीलकण्ठ कक्काक आगूमे पहुँचा, अपन कामपर चलि गेल।

नीलकण्ठ काका मने-मन विचारिये रहल छला जे पहिने मनसुखलालकेँ पुछियनि आकि दुलारचनकेँ, तइ बिच्चेमे मनसुखलाल अपने बजला-

"काका! की कहब, बेटा दिनके छौड़ा सभ-सभ उड़ि लेलक।"

मनसुखलालक विचार सुनि नीलकण्ठ काका मने-मन विचारिये रहल छला जे मनसुखलालकेँ पुछियनि जे की उड़ि लेलकै? मुदा बिच्चेमे मनसुखलाल दोहराकऽ बजला-

"काका, चारि-बित्ताक खूटा, छौड़ाकेँ जखन स्कूल जाइले कहलिऐ तखन कहलक- 'कौपी नहि अछि।' संगे आनि चौकपर कौपी जखन कीनि देलिऐ, आब कहैए जे मोबाइल कीनि दाउ घरपर पढ़ब।"

विषयक गम्भीरता देखि नीलकण्ठ कक्काक मनमे उठलैन जे ने बूझ नहुँ नीक हएत आ ने बाजब। बाप-बेटाक बीचक प्रश्न अछि। पहिने एक अबोध, दोसर सबोध। सबोधकेँ उचित बनैत अछि जे अबोधकेँ सबोधि नाम्हा धएत। विचारमे मात्र देर नीलकण्ठ काका बजला-

"मनसुख, बालबोध बेटा छह, कहुना बीस-बासिकऽ स्कूल धरौनहि।"

नीलकण्ठ कक्काक विचार सुनि मनसुखलाल अपन बेटाकेँ अगुआन घर दिस विदा भेला। गुलटन बाजल- "काका, की कहब! जहिना स्कूल-कऽ अछि सहि सर स्कूलोक।"

हुँ-हूँ बिना बजनहि नीलकण्ठ काका मने-मन विचारए लगला। विद्यालय बन्ना जाए वा नहि जाए? एकाएक नीलकण्ठ कक्काक मन उनैटकऽ उल्टा धनरीयन पहुँच गेलैन, जहिया सरकारी विद्यालयकेँ पंगु बना, शिक्षाकेँ बजारीकरणधक दिशा दिस मोड़ल गेल। जहिसँ समाज-तंत्र कमजोर पड़ल। महाविद्यालयसँ विश्वविद्यालय धरि अराजक स्थिति बनि गेल। तीन-तीन-चारि-चारि सालक परीक्षा लुटि गेल। सर्टिफिकेटक बिक्री-बट्टा शुरू भेल।

मनक विचार नीलकण्ठ काकाकेँ तेना धकेल गेलैन जे जान-जानसँ बाजए लगला- "किया अपन सारी समाजमे बाजए ना मुँहे बूझ नाखाह, मुदा हमरा तँ एत सामाजिक सरोकार अछिए जे अपन विचार समाजक बीच राखी।"

नीलकण्ठ कक्काक गर्जन सुनि मनम रुल ज उाॐOIम मान नीलकण्ठ काका लग, यहुँचव जनुनी अछि। अयन घनयन नही। चौकक वगलम अयन घन अछि। मुदा अयन मन याछूउा नक ग ँ हुअ ज यनसु साॐनिक विआरुम जाव जनुनी अछि। नहुम ववानी विआरुक यनाग अमनिका चलि जाग। नीलकण्ठ काका छिआरु, उँ कहीं गय-सयम मानि रुँसा ललैन नखन काट-कवरुनी रुखव आकि साॐनिक विआरु रुखव जावव.? मन आगु-याछू कनिग नरु कि नीलकण्ठ काका अयन चुय रुऽ गेला। जॐसँ गनजैग मघक गर्जन जकाँ, ज वायुमण्डलम अनना ढनढनाॐग नरु ना शान्त नरु, नहिना सरु शान्त रुला।

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

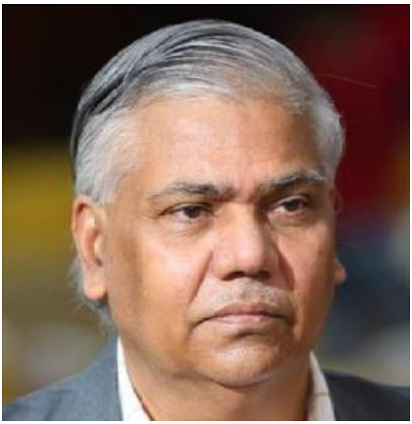
३.यद्य खण्ड

३.१.नाज किशोन मिश्र- कानाना: काल!

३.२.आशीष अनचिन्हार- २ टा गजल

३.३.श्याम विहारी मिश्र- दृष्टी जाल

३.१.राज किशोर मिश्र- कामना: काल!



राज किशोर मिश्र, रिटायर्ड चीफ जनरल मैनेजर (टेली), बी.एस.एन.एल.(मुख्यालय), दिल्ली,ग्राम- अन्धरा ठाढ़ी, पो. अन्धरा ठाढ़, मधुबनी

कामना: काल!

हे मृत्युक कारण महा दूत ,
आबि क प्रलयंकारी यूत।

हे ग्रसकी सम्पूर्ण वसुधा पर,
वि ख -ना श, जी वन -सुधा पर।

धारलक वि षा क्त वि ख ना यु म,
सहि लगलक ,आयु म।

रऽ (गेल मा नन असह्य य,
नक' आगि सन, यसनल जा ॐ।

सवरूक य्रा ध यठल यनलय म,
वि गे ना ि -दि न कनल रय म।

नना -गुटका , वृद्ध, ज्ञआन,
घन म दूवकि , वचा वे जा न।

थ्रि (गेल जनू जि नगी क चक्का ,
मा ननअक्षि व्र यन अछि ॐ। धक्का ।

जूकि (गेल दूनि आ क का नवा न,
ला (गे, नसूधा गऽ, जमक द्रा आन।

वा ट -घा ट ,सर सूनसा न,
चमकै आगि , दमकै मसा न।

वह्रक जि नगी का ना ना क द्रा थ,
मि कैक य्रा ध ,लगा का ना ला थ।

का ना ना क' का ना न ठलैक दवा ॐ ,
ला कक अनूदा , ठि नि -ठि नि खा ॐ।

मा स्क सँ जवलक मूरु ,ला क,
ञ्सा नधा न, (गलथि यनला का।

जगरु , रुटव मा सकि ल ञ्यणा ल म,
कि ष्ठ वाँ चल ,ञा कि ष्ठ का ल-गा ल मा।

प्रलय मवञ्डालक का ना ना वसी ,
यदि ला सँ ,दा सन खय म,
घनरुॐ यनि ना न -यनि ना न रुल,
ञाढन -घन तूवल नय मा।म

खखठी रुs (गल गह्नना ७ल धा न,
का ॣख म ष्ठूटल ,शि शुक य्रा ध।

ञ्यणा ल म (गँटल मूर्दा
सवरुक ,ला गि (गलै री ७,
ञंगि म 0ँ ' यञ्डालक कणका

मृणक, वा ल् म, नदी -गी ना।

जि नगी रुल ञह्वा न -ञह्वा न,
ला क, ला क सँ ञनवि ह्वा ना।

अनगनि ग यनि ना न र्ल अना थ,
आ७ल नि यफि ,नना सर मा था

अदृश्य अछि ॐ मरा दृष्ट,
खुन यि वि -यि वि ,र्ल यृष्ट।

यनञ, थम्हल (गल, प्रलय,
रून, जि नगी क' र्ल जय।

कि छ समय वा द ,का ना ना क,
वा ह्न सँ छटलै ला कक जा न,
वैस्ा नि क, ञा कदन सर मि लि कs,
जल्दी सँ लअउालथि , समा धा ना

मरा कनव ,का ना ना क नि नृद्ध,
आ७ल वैकी न ,ल७य यूद्ध।

सरूल, सुरूल र्ल समा धा न,
वा◌ं◌ं वल ,मरा मा नी सँ ग्रा द्य।

मृदा , छा ७लक नहि ७खना जा न,
कनी , सुनआ -ग्रा टा कॅलक' सम्मा ना

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.२.आशीष अनचिन्हार- २ टा गजल



आशीष अनचिन्हार

दू टा गजल

1

हमहीं खाली सुंदर सुंदर
बाँकी दुनियाँ बानर बानर

हुनकर ठिकाना नाट कतु
सदा उनी जिम्हर जिम्हर

नक्शा रटल विज्ञान चूनमून

𑒣𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒪𑒹𑒏𑒱𑒢 𑒣𑓀𑒔𑒩 𑒣𑓀𑒔𑒩

𑒮𑒦 𑒙𑒰 𑒮𑒣𑒢𑒰 𑒣𑒴𑒩𑒥 𑒏𑒪𑒻
𑒥𑒰𑒿𑒏𑒲 𑒮𑒣𑒢𑒰 𑒂𑒿𑒔𑒩 𑒏𑒰𑒖𑒩

𑒁𑒧𑒲𑒩 𑒪𑒑 𑒕𑒟𑒱 𑒑𑓀𑒑𑒰 𑒖𑒧𑒴𑒢𑒰
𑒕𑒟𑒱 𑒑𑒩𑒲𑒥 𑒪𑒑 𑒄𑒿𑒙𑒰 𑒣𑒰𑒟𑒩

𑒮𑒦 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒱𑒧 22-22-22-2 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒳 𑒙𑒰 𑒁𑒪𑒑-𑒁𑒪𑒑 𑒪𑒒𑒳𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒 𑒧𑒰𑒢𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒄 𑒥𑒯𑒩 𑒧𑒲𑒩 𑒁𑒕𑒱।

2

𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒯𑒪𑒏 𑒂𑒯
𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒴𑒗𑒪𑒏 𑒢𑒰𑒯

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒰𑒢 𑒑𑓂𑒩𑒲𑒢
𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒰𑒢 𑒞𑒰𑒯

𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒢𑒪𑒻 𑒡𑒰𑒢
𑒁𑒣𑒢 𑒪𑒹𑒪𑒏 𑒟𑒰𑒯

𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒂𑒑𑒳 𑒪𑒰𑒯

अपन गाछ लाद

अपन मनरुम रुल
अपन वनलै घाद

सर पाँतिम 22-2221 मात्राक्रम अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.३.श्याम विहारी मिश्र- रुबी झा३



श्याम विहारी मिश्र

रुबी झा३

झा न रुबी जनलरुवा झा३

क नरुल अछि सवक वीमान

नञ्ञी छौ दनग धीया - यूगा यन

वृ८- यूनान क कन लाबान

सौंस व८ल जा नहल अछि

गाहन अथावान

जा न रही जनलहवा जाउ

क नहल अछि सबक बीमान।।

छार हल दिन आ नमहन हल नायग

वृञ्ञीस न यउ कि जाउ आव जायग

डा८न चादन आ (धन निस्फन

जननका सव हल सहा ँ लाबान

आवा हारर समर गु

उही माद कनै निवान

जा न रही जनलहवा जाउ

क नहल अछि सबक बीमान।।

गाम आव शहन वेन नहलै

जाॅन काठी क यनल अकाल

सहहक घन आव गैस सिलिंडन

घूनक नै छै काना जागान

आव कह हम काना मलव

यूस मास क नञा प्रहान

जा न हठी जनलहवा जाउ

क नहल अछि सवक वीमान।।

स्कूल काॅलेज सव वंद यनलै

काम - काज सव हलै ठय

श्याम विहानी मिश्र कहैन अछि

ध्यान सां सूनू हमन गय

नाखु वादन वाह्नू गाँसी

नै नाखव कष्मा उघान

वाँचव क अछि यह उयवान

कितक ग जाड़ आव

झाँझन नहल गहमन सन हहकान

जा न रह्ठी जनलहवा जाड़

क नहल अछि सवक वीमान।।

यहिलका वाग किछु ठौन नहैग छल

घन पिछु एकटा दलान नहैग छल

दलान यन घुनक ठानियान नहैग छल

गीला संक्रांति सन यावैन यन

चूनलाह्ठी-मूनही क जलयान नहैग छल

आव नै ठा दलान नै नहल ठा घुन

आव अयना स लाक नहै छथि दुन

लौकिकता क हल ठजान

मावाह्ठल आ ह्ठनूननट गक

समटल नहि गेल अछि यनिवान

जा न रह्ठी जनलहवा जाड़

क नहल अछि सबक वीमान।।

-श्याम विहारी मिश्र, वनिष्ठ लेखाकार, ग्रामकाष्टन (नाथिया), नाथायून, दनरंगा, विहान - 847239

मो. 8743953128

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

४. निदह सूचना संपर्क अन्वेषण

सूचना

१

"विदेहक जीवित साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मी- रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखला"

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.

- Robert Louis Stevenson

....

Videha: Maithili Literature Movement

विदेह अपन ३६९ म (०१ मई २०२३) अंकमे मैथिली लेखक अशोक पर आ ३७० म (१५ मई २०२३) अंकमे मैथिली लेखक राम स्वास ठाकुर 'अमन' पर विशेषांक निकालत। विशेषांक लेल रचनाकार/ कलाकर्मीक काज, रचना-संपादन, संस्मरण आ अन्य रचनात्मक कार्यपर सेहो प्रकाशक रचना (संस्मरण, आलोचना, समालोचना, समीक्षा आदि) आमंत्रित अछि। अहाँ अपन रचना ३६९म अंकक विशेषांक लेल २४ अप्रैल २०२३ धरि आ ३७०म अंकक विशेषांक लेल ८ मई २०२३ धरि नीचाँ देल गेल ई-पत्र सङ्केत [illegible] पर पठा सकै छी।

विदेह अननिद्ध ठाकुर विशेषांक

विदेह जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

विदेह रामलोचन ठाकुर विशेषांक

विदेह राजनन्दन लाल दास विशेषांक

विदेह रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

विदेह केदार नाथ चौधरी विशेषांक

विदेह प्रेमलता मिश्र प्रेम विशेषांक

विदेह शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

२

"विदेह द्वारा एक वनम कोना एकटा संस्थाक समग्र मूल्यांकन शृंखला"

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.

- Robert Louis Stevenson

....

Videha: Maithili Literature Movement

विदेह अपन ३११ म (०१ जून २०२३) अंकमे "मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम.एस.यू.)" पर विशेषांक निकालत। मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम.एस.यू.) पर निम्न लीखल बिंदुपर मैथिलीमे आलेख आमंत्रित अछि।

१) एम.एस.यू. केर गठनक प्रमाणिक इतिहास,

२) एम.एस.यू. आ मिथिला केर नव चेतना,

३) एम.एस.यू. आ विभिन्न जाति केर समन्वय,

४) एम.एस.यू. द्वारा कएल विभिन्न आंदोलन आ ओकर लेखा-जोखा एवम् ओकर प्रभाव वा

५) एम.एस.यू. संदर्भित आन कोनो लेख।

३११म अंकक विशेषांक लेल अहाँ अपन रचना २५ मई २०२३ धरि वर्ड फाइलमे ई-पत्र सङ्गे editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकै छी।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

३

"विदेह मोनोग्राफ" शृंखला

विदेह अपन जीवित रचनाकार/ कलाकर्मी पर विशेषांक शृंखलाक अन्तर्गत (१)अरविन्द ठाकुर, (२)जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, (३)रामलोचन ठाकुर, (४) राजनन्दन लाल दास, (५)रवीन्द्र नाथ

ठाकुर, (६) केदार नाथ चौधरी, (७) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' आ (८) शरदिन्दु चौधरी विशेषांक निकालने अछि।

अही सन्दर्भमे आइ साहित्यकार पर "विदेह साक्षात्कार" शृंखला अन्तर्गत "साक्षात्कार" आमंत्रित कयल जा रहल अछि।

"विदेह साक्षात्कार" शृंखलाक नियम निम्न प्रकार अछि:

(१) इच्छुक लेखक उपरस कोनो एक रचनाकार पर अपन साक्षात्कार लिखबाक इच्छा editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकै छथि। साक्षात्कार लिखबाक अवधि सामान्यतः एक मास रहत।

(२) विदेह आइ रचनाकारपर आइ लेखकक नाम साक्षात्कार लिखबाक लेल चयनित कऽ ओकर सार्वजनिक घोषणा करत।

"विदेह साक्षात्कार" लिखबाक नियम:

(१) साक्षात्कार पूर्व सँ रचनाकारपर कहियो होअय। साहित्य अकादमी, एन.बी.टी. आ किछु व्यक्तिगत सँ लिखल साक्षात्कार/ बायोग्राफीमे लेखक संस्मरण आ व्यक्तिगत प्रसंग जोड़ि कए रचनाकारक बदला अपन-आत्म-प्रशंसा लिखैत छथि। "विदेह साक्षात्कार" हीरो वर्ल्ड कप फुटबाल सन रहत। हीरो वर्ल्ड कप फुटबाल एहन एकमात्र टूर्नामेंट अछि जाहि कोनो "ओपनिंग" वा "क्लोजिंग" सेरीमनी नै होइत छै आ एकर कारण छै जे "ओपनिंग" वा "क्लोजिंग" मे टूर्नामेंटमे नै खेला रहल लोक मुख्य अतिथि/ अतिथि होइत छथि आ फोकस खिलाडी सँ दूर चलि जाइत अछि। हीरो मात्र आ मात्र फुटबाल खिलाडीपर केन्द्रित रहैत अछि से ओकर टूर्नामेंट "ओपनिंग सेरीमनी" नै करत सीधे "ओपनिंग मैच" सँ आरम्भ होइत अछि आ ओकर समापन "क्लोजिंग

"सरीमरी"सँ नै वरन् "स्टाण्डर्ड मैथ आ द्राही"सँ लगाव छन्हि अछि आ छोटका मात्र आ मात्र खिलाड़ी नहि छथि। तहिना "विदेह मोनोग्राफ" मात्र आ मात्र ओ "साफ रचनाकार"पर केन्द्रित रहत आ कोनो संस्थान आदि ज्ञाति कऽ छोटका रचनाकारसँ अपनायल केन्द्रित करबाक अनुमति नै रहत।

(२) मोनोग्राफ लेल "विदेह पटल"मे उपलब्ध सामग्रीक सन्दर्भ सहित उपयोग कएल जा सकैत।

(३) विदेहमे ई-प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादक 'विदेह' ई-पत्रिकामे प्रकाशित रचनाक प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनूदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ए ई-पत्रिकामे कोनो रोयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै।

(४) "विदेह मोनोग्राफ"क फॉर्मेट: रचनाकारक परिचय (रचनाकारक जन्म, निवास-स्थान आ कार्यस्थलक भौगोलिक-सांस्कृतिक विवरण सहित) आ रचनावली (समीक्षा सहित)।

घोषणा: "विदेह मोनोग्राफ" शृंखला अन्तर्गत (१) राजनन्दन लाल दास जी पर मोनोग्राफ निर्मला कर्ण, (२) रवीन्द्र नाथ ठाकुर पर मुन्नी कामत आ (३) केदार नाथ चौधरी पर प्रेम शंकर मिश्र द्वारा लिखल जायत। मैथिली पुत्र प्रदीप पर "विदेह मोनोग्राफ" लिखताह प्रेमशंकर झा "पवन"।

शेष ओ शोधपर निर्णय शीघ्र कएल जायत।

घोषणा २: ओना ई मैथिली पुत्र प्रदीप पर विदेह विशेषांक नै निकालल अछि, मुदा हुनकर अवदान कें देखैत प्रेमशंकर सा "पत्र"क हुनका ऊपर "विदेह मानपत्र" लिखबाक निर्णय आयल ई ओकरा स्वीकार कयल गेल।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४

विदेह द्वारा जे विशेषांक प्रकाशित भेल छै ताहि संग विदेह ओहन लेखक-साहित्यकार पर ध्यान सेहो केन्द्रित करत जिनकापर विदेहक विशेषांक कोनो कारणवश नै प्रकाशित भऽ सकल। ई नव निर्णयक मुख्य बिंदु एना अछि-

१) हम एकटा कोनो लेखक वा कलाकारपर एकाग्र आलोचना करब जकर भाषा मैथिली अथवा अंग्रेजी रहत। ई पोथीक पहिल रूप ई-बुक कर रूपमे हेत आ प्रयास रहत जे एकर प्रिंट सेहो आबए जे कि सुनिश्चित निर्देश करत।

२) ई शृंखलामे सुभाष चंद्र यादवपर केन्द्रित "नित नवल सुभाष चंद्र यादव" एवं राजदेव मंडलपर केन्द्रित "□□□□□□ □□□□□□-□□□□□□□□ □□□□□□" प्रकाशित भेल अछि। दुनू पोथीक लोकार्पण ३१ दिसम्बर २०२२ कें १११म सगर राति दीप जनकपुर मे कएल गेल।

३)आगाँक घोषणा

लेल http://videha.co.in/investigation.htm देखी नहि।

Rajdeo Mandal- Maithili Writer(Now with Supplement I & II)

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

१

विदेह ब्रॉडकास्ट लिस्ट

विदेह WWW.VIDEHA.CO.IN सम्बन्धी सूचना लेल अपन □□□□□□□□ नम्बर हमर □□□□□□□□ □□ +919560960721 पर पठाउ, ओकर प्रयोग मात्र विदेह सम्बन्धी समाचार देबाक लेल कएल जाएत।

२

विदेहक "साहित्यिक ग्रन्थागार विशेषांक"

विदेह "साहित्यिक ग्रन्थागार विशेषांक" लेल निम्नलिखित विषयपर आलेख ई-मेल □□□□□□□□□.□□□□□.□□□□□□@□□□□□.□□□ पर

आमंत्रित अछि।

१. साहित्य, कला आ संस्कृति अकादमी:-

(क) पुरस्कारक राजनीति

(ख) सरकारी अकादमीमे पैसबाक गैर-लोकतांत्रिक विधान

(ग) सभागृह आ अकादमी केँ राज करबाक तरीका

(घ) सरकारी सभाक छद्म विरोधमे उपजल तात्कालिक समानांतर सभाक कार्यपद्धति

(ङ) अकादमी पुरस्कारमे पाइ सेटर: मिथक वा यथार्थ

२. व्यक्तिगत साहित्य संस्थान आ पुरस्कारक राजनीति

३. प्रकाशन जगतमे पसरल भ्रष्टाचार आ लेखक

४. मैथिलीक छद्म लेखक संगठन आ ओकर पदाधिकारी सबहक आचरण

५. स्कूल-कॉलेजक मैथिली विभागमे पसरल साहित्यिक भ्रष्टाचारक विविध रूप-

(क) पाठ्यक्रम

(ख) अध्ययन-अध्यापन

(ग) नियुक्ति

६. साहित्यिक पत्रकारिता, वेब, मंच-माला-माइक आ लोकार्पणक खेल-तमाशा।

७. लेखक सबहक जन्म-मरण शताब्दी केर चुनाव , कीर्तनकार आ तकरा पाछूक राजनीति

८. दलित एवं लेखिका सबहक संग भेद-भाव आ ओकर शोषणक विविध तरीका

९. कोनो आन विषय।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA





सूचना

१

"विदेहक जीवित साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मी- रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखला"





Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.

- Robert Louis Stevenson

....

Videha: Maithili Literature Movement

विदेह अपन ३६९ म (०१ मई २०२३) अंकमे मैथिली लेखक अशोक पर आ ३७० म (१५ मई २०२३) अंकमे मैथिली लेखक राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' पर विशेषांक निकालत। विशेषांक लेल रचनाकार/ कलाकर्मीक काज, रचना-संपादन, संस्मरण आ अन्य रचनात्मक कार्यपर सभ प्रकारक रचना (संस्मरण, आलोचना, समालोचना, समीक्षा आदि) आमंत्रित अछि। अहाँ अपन रचना ३६९म अंकक विशेषांक लेल २४ अप्रैल २०२३ धरि आ ३७०म अंकक विशेषांक लेल ८ मई २०२३ धरि वर्ड फाइलमे ई-पत्र सङ्केत editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकै छी।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

२

"विदेह द्वारा एक बेरमे कोनो एकटा संस्थाक समग्र मूल्यांकन शृंखला"

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.

- Robert Louis Stevenson

....

Videha: Maithili Literature Movement

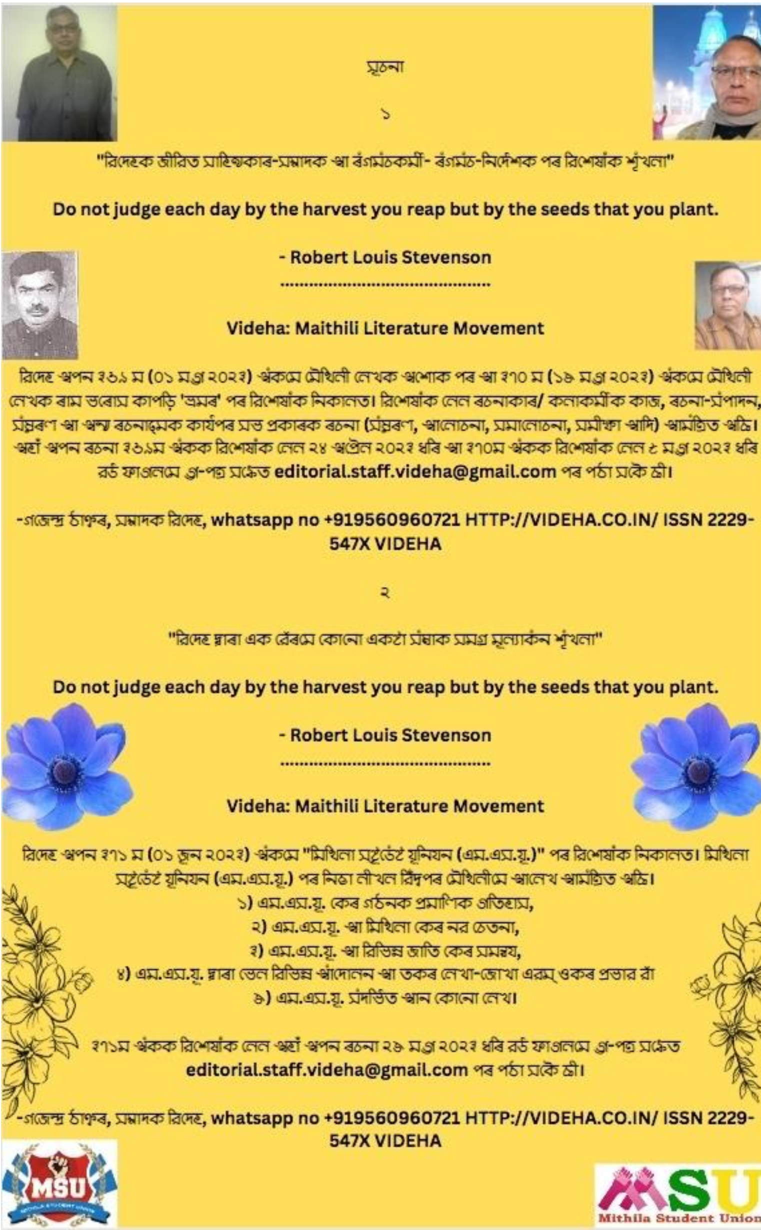
विदेह अपन ३७१ म (०१ जून २०२३) अंकमे "मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम.एस.यू.)" पर विशेषांक निकालत। मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम.एस.यू.) पर निच्चा लीखल बिंदुपर मैथिलीमे आलेख आमंत्रित अछि।
१) एम.एस.यू. केर गठनक प्रमाणिक इतिहास,
२) एम.एस.यू. आ मिथिला केर नव चेतना,
३) एम.एस.यू. आ विभिन्न जाति केर समन्वय,
४) एम.एस.यू. द्वारा भेल विभिन्न आंदोलन आ तकर लेखा-जोखा एवम् ओकर प्रभाव बा
५) एम.एस.यू. संदर्भित आन कोनो लेख।

३७१म अंकक विशेषांक लेल अहाँ अपन रचना २५ मई २०२३ धरि वर्ड फाइलमे ई-पत्र सङ्केत editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकै छी।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

MSU

MSU Mithila Student Union


সূচনা
১
"বিদেহক জীবিত সাহিত্যকাৰ-সম্পাদক আ ৰংগমংচকৰ্মী- ৰংগমংচ-নির্দেশক পৰ বিশেষাংক শৃংখলা"
Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.
- Robert Louis Stevenson
....
Videha: Maithili Literature Movement
বিদেহ অপন ৩৬৯ ম (০১ মই ২০২৩) অংকমে মৈথিলী লেখক অশোক পৰ আ ৩৭০ ম (১৬ মই ২০২৩) অংকমে মৈথিলী লেখক ৰাম ভৰোস কাপড়ি 'ভ্রমৰ' পৰ বিশেষাংক নিকালত। বিশেষাংক লেল ৰচনাকাৰ/ কলাকৰ্মীক কাজ, ৰচনা-সংপাদন, সংস্মৰণ আ অন্য ৰচনাত্মক কার্যপৰ সভ প্রকাৰক ৰচনা (সংস্মৰণ, আলোচনা, সমালোচনা, সমীক্ষা আদি) আমংত্রিত অছি। অহাঁ অপন ৰচনা ৩৬৯ম অংকক বিশেষাংক লেল ২৪ অপ্রৈল ২০২৩ ধৰি আ ৩৭০ম অংকক বিশেষাংক লেল ৮ মই ২০২৩ ধৰি ৱর্ড ফাইলমে ঈ-পত্র সংকেত editorial.staff.videha@gmail.com পৰ পঠা সকৈ ছী।
-গজেন্দ্র ঠাকুৰ, সম্পাদক বিদেহ, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA
২
"বিদেহ দ্বাৰা এক বেৰমে কোনো একটা সংস্থাক সমগ্র মূল্যাংকন শৃংখলা"
Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.
- Robert Louis Stevenson
....
Videha: Maithili Literature Movement
বিদেহ অপন ৩৭১ ম (০১ জুন ২০২৩) অংকমে "মিথিলা স্টুডেংট য়ুনিয়ন (এম.এস.য়ূ.)" পৰ বিশেষাংক নিকালত। মিথিলা স্টুডেংট য়ুনিয়ন (এম.এস.য়ূ.) পৰ নিচা লীখল বিংদুপৰ মৈথিলীমে আলেখ আমংত্রিত অছি।
১) এম.এস.য়ূ. কেৰ গঠনক প্রমাণিক ইতিহাস,
২) এম.এস.য়ূ. আ মিথিলা কেৰ নৱ চেতনা,
৩) এম.এস.য়ূ. আ বিভিন্ন জাতি কেৰ সমন্বয়,
৪) এম.এস.য়ূ. দ্বাৰা ভেল বিভিন্ন আংদোলন আ তকৰ লেখা-জোখা এৱম্ ওকৰ প্রভাৱ বা
৫) এম.এস.য়ূ. সংদর্ভিত আন কোনো লেখ।
৩৭১ম অংকক বিশেষাংক লেল অহাঁ অপন ৰচনা ২৬ মই ২০২৩ ধৰি ৱর্ড ফাইলমে ঈ-পত্র সংকেত editorial.staff.videha@gmail.com পৰ পঠা সকৈ ছী।
-গজেন্দ্র ঠাকুৰ, সম্পাদক বিদেহ, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA
MSU
MSU
Mithila Student Union

